

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

प्रधान संपादक

डा० विदवनाथ प्रसाद



संग्राहक

श्रीराम शर्मा

मुखारिजुहीन 'रक्त'

ब० मु० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ

आगरा विश्वविद्यालय

आगरा

प्रकाशक—

प्रकाशक,

क० ए० हिस्सी तथा भापाविज्ञान विभापीठ
आगरा विश्वविद्यालय आगरा ।

प्रथम संस्करण १९५५ ई०
मूल्य ४।७५

मुद्रक
एच० के० कपूर
आगरा यूवीएचटी प्रेस
आगरा

अली आदिल शाह का काव्य-संग्रह

अनुक्रमणिका

१ प्रस्तावना	१-४
२ भूमिका*	१-२१
३ काव्य-संग्रह	२२-१०२
४ धम्मपदी	१०३-११२
५ भरबी घोर कारखी (तत्सम-सङ्ग्रह)	११३-१२१

*भूमिका—भूमिका में मुद्रित छीरक "दीवान" के स्थान पर "काव्य-संग्रह" होना चाहिए । इतना बहू गुणार कर ले ।

प्रस्तावना

“सन्धिनी” को ये हिन्दी का प्रसिद्ध रंग मानता हूँ। उसके बिना न तो हिन्दी के घोर न उठूँ के उद्भव, विकास घोर प्रसार का विवरण पूरा हो सकता है। वस्तुतः हिन्दी ही उच्च से सन्धिनी जाकर घोर कुछ नये मात्र-विचार से सँवर कर “सन्धिनी” बन गई। मूल हिन्दी या “हिन्दी” को ही कालान्तर में एक दूसरा नाम “सन्धिनी” दे दिया गया था। सोलहवीं-सत्रहवीं सदी तक मुस्लिम संसक घोर कवि इसके लिए “हिन्दी जवान” हिन्दी बोला या “हिन्दी” नाम का ही प्रयोग करते रहे। पर जब १५वीं शताब्दी में दिल्ली के अधिकार से मुक्त होकर सन्धिनी स्वतंत्र हो गया, तब वहाँ बहमनी राज्य बिजयनगर साम्राज्य घोर तदुपराष्ट्र १५वीं सदी में बीजापुर में आदिलशाही मोघलशाही में कुतुबशाही, बीदर में बरकतशाही बरार में इमादशाही तथा अहमदनगर में निजामशाही सत्तारों कायम हुई। बहमनी राज्य का सम्पादक हुसैन मंगो (१५४७-७५ ई.) मूल शासक का चेला था। इसलिए उसके राज्य में शासकों का बहुत घोर घोर प्रभाव था। यहाँ तक कि बहमनी मुस्लिम इस्लामी आदिलशाह ने हुसैन के लिए सन्धिनी के शासकों का मुकदमा करना मुकदमा घोर जा हिमाक-रिमाक पहुँच करनी में मिले जाते थे वे सब उसके हुसैन से “हिन्दी” में मिले जाने सप। इसके प्रतिरिक्त १५वीं से १७वीं सदी तक के उपर्युक्त इन सभी केन्द्रों में हिन्दी के कवियों को सर्व घाय्य घोर प्रामाण्य मिलता रहा। हिन्दी को ही वहाँ की सत्तारों में राज भाषा का पद मिला क्योंकि उच्च-भारत में पये हुए मुस्लिम घोर सन्धिनी मिपाही पदाधिकारी तथा बिद्वान् पुरों पंजाब सिन्धी घोर भरठ की भाषा से ही परिचित थे मछली-तेलुगु आदि सन्धिनी भाषाओं से नहीं। मुस्लिम मुस्लिमों में अपने दस-बस के साथ १५वीं सदी में बिजता के रूप में जब दक्षिण में प्रवेश किया था तो वे अपनी इसी पूर्वाधिक तथा अत्यन्त भाषा की अपने भाष से गए थे। मुस्लिम मुस्लिमों के साथ उनके मुसाहिब परिजन घोर लहवर रूप में हिन्दी कर्मकारी व्यापारी योडा घोर हिमाक बिठाव रखने वाले मुसही आदि भी वहाँ गए। सन्धिनी काफूर के समय से ही गूजरों की काफी बड़ी संख्या उपर पहुँचे ही जा चुकी थी बिगुके कारण सन्धिनी को उसके कवि गूजरों की कहल थे। इनके प्रतिरिक्त उनके लिए कभी-कभी “भाषा” या “भाषा” नाम का भी प्रयोग हुआ करता था। उपर सन्धिनी के लोग मुस्लिम नामों की आरणी भाषा से बिस्तुत घनधिज थे। इसलिए संस्कृत प्राकृत तथा आर्यज की परम्परा में बिबिध हिन्दी ही उन्हें अपनी भाषाओं के समीप घोर परिचित हो गया। अपनी पराष्ट्रमुपक दाम-मन्त्रि की उन्होंने हिन्दी में समाजता पाई। इनके प्रतिरिक्त पुरातन साहित्यिक मान्यताओं तीर्थ-स्थानों साधु-मन्त्रों बाधिम्य-प्रबलान् आदि के रूपों के कारण हिन्दी में उनका पहुँच है परिचय था। इसलिए इन भाषा का वहाँ अपने देर न गया। करत वहाँ के दरबारों के आधय घोर संरक्षण में सन्धिनी हिन्दी में एर समुद्र

साहित्य का विकास हुआ । मुस्ता बबही ने अपनी मसनवी 'कुतुब मुसवरी' में लिखा है—

“दखिन में जो दक्षिनी मिठी बात का
मदा ने किया कोई इस बात का ।”

घोर सब पुछिए तो दक्खिन में ही क्यों मुस्लिम धमीर या फकीर घोर सूफी सन्त जहाँ-जहाँ गए अपने साथ पूर्वी पंजाबी घोर हिस्सी मेरठ की इसी पड़ी हिन्दी को लिए गए घोर पुरब में धबधब या बिहार तक अपने नये निवास-स्थानों की बोस-बास की मापामों के साथ इसका मिश्रण करते हुए मई-मई प्रभितियाँ (बोहे घोर गीत) बन सामारण की मंडली में सुनते-सुनाते गए । उन रचनाओं घोर प्रभितियों की मापामों के लिए उन्होंने बराबर हिन्दी ही नाम का व्यवहार किया परन्तु दक्खिन में जब मुस्लिम दरबारों के संरक्षण में इस मापा को सर्वाधिक प्राथम्य घोर 'सरकारी खजान' का पद मिला तब इसका एक स्वतन्त्र नाम भी पड़ गया । 'दक्खिनी' विशेषण से विद्यम्य बन गया ।

सगमय तीन बार छताश्रियों तक स्वतन्त्र रूप से दक्खिन में विकास प्राप्त करती हुई इस मापा में बही के जन-साधारण में प्रचलित मराठी तथा तेलुगु, कन्नड आदि ब्रह्मि मापामों के प्रभाव भी स्वाभाविक रूप में पड़ते गए । यह धारण्य की बात नहीं है । इसका अध्ययन होता चाहिए कि हिन्दी पर ये प्रभाव किन-किन रूपों में पड़े हैं । साथ ही इसका भी ध्यान रहे कि इन कई छताश्रियों में उत्तर भारत में जो प्रभुतियाँ हिन्दी, उर्दू के निर्माण में काम करती रहीं उनसे यह दक्खिनी हिन्दी रूप निश्चिन्त सा रहा । परिणाम स्वरूप उसमें कई ऐसी विशेषताओं का विकास हुआ, जो उत्तर की हिन्दी या उर्दू में नहीं मिलती है । अपने उपमूलक संघर्षों के प्रभाव से दक्खिनी का धम्-मण्डार उर्दू की तरह धरनी फरसी के बजाय में नहीं पड़ने पाया । उसमें परम्परा सिद्ध संस्कृत तथा प्रचलित मापा के ठेठ देखी छव्यों का ही व्यवहार होता रहा । स्वतन्त्र दक्षिण ज्योत्स्ना बिकार, तन मन बैष्टा तथा पिड इत्यादि जैसे संस्कृत छव्यों का प्रयोग उसमें बहुतायत से हुआ करता था । इस प्रकार यह मापा नाम से ही नहीं रंग रूप से भी हिन्दी ही थी ।

इस धंभ के रचयिता धनी आदिम साह उनही सरी में (१६२६ ई०) जब बीजापुर के आदिलशाह हुए तो उनके फरसी प्रेम के कारण उनके दरबार में हिन्दी के प्रतिष्ठित फारसी काव्य की बर्षा जोरों से शुरू हुई । उन्हीं के राजकवि मुसवरी ने जिनके सिखे हुए तीन आदयान धंभ-मिलते हैं—मुसवरी इसका ठारीके धिक्कन्दरी घोर धनीनामा । इनमें से धनीनामा में आदिम साह के सब बर्ष (१६२६-१६६२) तक के वास्तव का बर्णन है । यह धंभ धाम भी आदर से देखा जाता है । इसी मुसवरी ने दक्खिनी से हिन्दवीपन की दूर करके उसे फारसी रूप देने का विमर्शना खड़ा किया । फिर भी हम देखते हैं कि १८वीं सदी के प्रारम्भ तक दक्खिनी में हिन्दी काव्य-परम्परा का जन्म निर्मूल नहीं हुआ था । यही तर्क कि धनी घोरनावाही के भी (जिनके दिस्सी-भाग

मन से (१७०० ई०) उर्दू-काव्य की परम्परा दिल्ली में शुरू हुई। पहले के कई ऐसे घेर हैं जिनमें हिन्दी का रूप स्पष्ट है।

धान भी अपनी अनेक विशेषताओं के साथ दक्षिणी प्रांशिक रूप में हैदराबाद मेंमूर, बरार, बम्बई, मुबरात धारि में बसे हुए मुस्लिम और कुछ हिन्दू-परिवारों में बोली जाती है। शिर्षन के 'सिगिस्टिक सर्वे प्रांश इन्डिया' में दक्षिणी बोलने वालों की संख्या ३६५४१७२० प्रांकी हुई है। इस प्रकार हिन्दी भाषा भाषी जनसमूह के साथ दक्षिणी का घट्ट सम्बन्ध है। उत्तर और दक्षिण के मायावी सम्बन्ध की यह एक सुनहरी शृंखला है। दक्षिणी इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी के विकास में उत्तर की ही नहीं, दक्षिण की भी महत्वपूर्ण देन है और उसमें दक्षिणी भाषाओं का भी योगदान है। वस्तुतः यदि दक्षिणी के रूप में हिन्दी का प्रसार और बिना नहीं हुआ होता तो धान 'घण्ट-भाषा' या राजभाषा के रूप में उसमें उस व्यापकता का समाने नहीं हो पाता जिसे उसने अपने प्रभावों के इन गूढ़ सम्बन्धों से प्राप्त किया है। क्या भाषा और क्या साहित्य दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी के इतिहास के अत्यंत दक्षिणी का विविष्ट स्थान है। उसके व्यापक विवरण के बिना हिन्दी का कोई भी इतिहास पूर्ण नहीं कहा जा सकता। इस ग्रंथ के प्रकाशन में इसी अपूर्णता की पूर्ति की ओर हमारा ध्यान है।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, इस संग्रह का रचयिता धनी धारित गाह [द्वितीय] फारसी का बड़ा प्रेमी था। कहा जाता है कि फारसी पढ़ने में वह इस करार मसमूम था कि हिन्दुस्तानी बोलना तक मूल गया था। वस्तु इस संकल्पन को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी बात हकीकत नहीं थी। पहले फारसी-श्रेम के बाबनूद भी वह हिंदी को भूमा नहीं और हिंदी में भी बरकरार पूर्ण रचनाएँ कीं। एक ओर जहाँ उसने अपना उपनाम 'गाही रता' का बड़ा दूसरी ओर हिंदी उपनाम 'मन और' मदन रूप' का भी प्रयोग किया। एक ओर जहाँ उसने कवीरा मसनवी गजल मुसम्मन और मुसम्मन, बर्दाई धारि में रचनाएँ कीं तो दूसरी ओर कबिता बाह (बोहरा) भूमना धारि प्रचलित हिंदी छंद तथा मुषावी भासावरी नट, बिहागरा केनरा देवी, टोड़ी बांगड़ा सारंग भी पौड़ी प्रेम् बाहला गोंडमल्लार, यमन (ईमन) रामकली पूरबी बिनाशन धारि शास्त्रीय तथा लोकप्रिय छंद रामनियों के हिंदी मीठ भी लिखे। एक ओर जहाँ उसने फारसी-फारसी के छन्दों का प्रयोग किया है वहीं दूसरी ओर हिंदी के 'भण्ड' 'भण्ड' 'मलक' 'मुन' (मुन) 'इरसन' 'नयन' 'निरसन' 'मुषण' 'नया' (नदिया) 'तिरसोऊ' (निलोऊ) 'कबकी' परनाब' (प्रसार) 'मजन' 'पीब' धारि जैसे परम्परागत शब्दों का भी स्वाभाविक और निश्चिन्त प्रयोग किया है। भाषा विद्वानों के लिए यह भी एक ध्यान देने की बात है कि उसकी भाषा के अनेक प्रयोगों में बगड़ी का प्रभाव भी स्पष्ट लजित है। धनी धारित गाह की अनेक रचनाएँ और अनेक रूपन धारणी काव्यों की परिचय का छोड़कर सर्वथा भारतीय भाषावरण में रचित है।

इस संकलन में श्री आदित्याह की रचनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि कवि की पूरी रचना-शैली का परिचय पाठकों को एकत्र प्राप्त हो सके। इस संग्रह (कुस्मिन्मास) की मूल हस्तलिखित प्रति हैदराबाद के सरकारी संग्रहालय में सुरक्षित है। वहाँ से उसकी फोटो प्रतिलिपि प्राप्त करके श्री श्रीराम शर्मा और श्री मुबारिबुद्दीन 'रफ़त' ने उसका भावही व्याख्यान तैयार किया है। मूल रचना के साथ उसके सांख्यिक विकास का क्रम प्रकट करते हुए धर्म भी दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त कठिन शब्दों के धर्म तथा उनके उत्तरम और व्युत्पत्तिगत रूपों का निर्देश भी कर दिया गया है, जिससे पाठकों को इस कृति का पूरा धारण प्राप्त करने में सुगमता हो।

मूल पुस्तक की हस्तलिखित प्रति को देखने से इस बात का ठीक-ठीक पता नहीं चलता कि उसका पहला पत्र और अन्तिम पत्र कौन सा है। इससे पुस्तक के बीच से एक पत्र और अन्तिम शब्दों से एक पत्र लेकर उनके बीच विद्यापीठ के नमूनों के तौर पर दिए जा रहे हैं। कवि के इतिहास आदि के सम्बन्ध में सम्पादकों ने विस्तार से प्रकाश डालकर आवश्यक जानकारी सुलभ कर दी है। इसके लिए वे हम सब की ओर से आभार के पात्र हैं।

यह संग्रह (कुस्मिन्मास) अब में भी अब तक नहीं छपा है। हमें इस बात का दुःख और शोक है कि यह महत्वपूर्ण संग्रह पहले पहल हिंदी में ही छप रहा है और इसे प्रथम प्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय हिंदी विद्यापीठ को ही प्राप्त हो रहा है। इसके संकल्पित मित्र श्री श्रीराम शर्मा अनुसंधान और अनुशीलन के कार्यक्रम में विभिन्न हमारे विद्यापीठ-परिवार के अंग बन चुके हैं। मुझे निश्चित है कि इस पुस्तक में साहित्यानुपमियों तथा भाषाशास्त्र के प्रेमियों को एक समान मनोरंजन और अध्ययन-अनुशीलन की महत्वपूर्ण सामग्री मिलेगी।

क० मु० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ

आगरा विश्वविद्यालय,

आगरा

व्याख्यानिक प्रयोगशाला २०१३ वि०

विद्यापीठ प्रचार

संसाधक

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

मूमिका

बहुमनी साम्राज्य हिन्दी समय इस्लाम भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था। १६वीं शती के आरम्भ में यह साम्राज्य उत्पत्ति की करम सीमा पर पहुँचा हुआ था। इस शती की समाप्ति के साथ-साथ यह साम्राज्य नष्ट हो गया। मुसलमानों और बीरर में जो विद्यालय स्थापित किये गये वे वे लैब्ररी में परिवर्तित होने लगे। इन दोनों शतकों में बहुमनी राज के लोगों के जा बड़े-बड़े मकबरे बने वे वे मिश्रीप खूबे लगे। मुसलमानों और बीरर दोनों शतक लगे हिन्दु बीररपुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर में लगे बुधों की बीरर उठने लगी आदमी लुहने लगी। मनीषियों और कवियों के लिए बना आश्रय भिन्न। मुसलमानों और बीरर के लैब्ररी आज भी विद्यमान है, हिन्दु इन शतकों में संस्कृति और ज्ञान-दान के जो आश्रय प्रारम्भ हुए वे वे समाप्त नहीं हुए। इन अनुष्ठानों के मरमान और पुणेहित दोनों दक्षिण के लोहित तीन शतकों बीररपुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर—में बन गये और कुछ ही दिनों में आन्ध्र आशावरण से उक्त अनुष्ठान की पूर्ति में सहायता प्रदान की।

लैब्ररी शती के उत्तरार्ध में बहुमनी साम्राज्य लुप्त लक्ष्मण लुप्त था। राजवंश के महामानवी हिन्दु अनुष्ठानों बंगालों की प्रविष्टि और आदमी के पद्यों और मरमान के लोहित के आश्रयों ने अब इस साम्राज्य को लुप्त बना दिया था लो उन दिनों साम्राज्य की सेवा में कुछ महामानवी व्यक्ति लोहित से और मुसलमानों का मरमान बिना जा रहा था। साम्राज्य का मरमान उन दिनों प्रदान मनी महामानवी आश्रय के लोहित में था। महामानवी आश्रय में एक विद्यालय की स्थापना की थी। इन विद्यालय में अनुष्ठान-कार्य के लिए इर-इर से विद्वानों का नियमित किया गया था। महामानवी आश्रय आदमी के पद्यों के पद्यों आश्रय का आशी बना हिन्दु उनक निर्मलप पर जो विद्वान बीरर में एकलित हुए वे उन्हें लुप्त दिन तक निर्यात नहीं लुप्त पदा। दक्षिण के लोहित व्यक्ति शतकों में उन्हें आदमी के लोहित लुप्त गया।

बीजापुर गोमकुण्डा ग्रहमदनगर

जिन दिनों बहमनी साम्राज्य पर्यन्त प्रवृत्ति में लड़कड़ा रहा था साम्राज्य को ऐसे सामन्तों की सेवाएं उपलब्ध थीं जिन पर किसी भी राजवंश को गौरव प्राप्त हो सकता था। बहमनी साम्राज्य को इससे पूर्व इनने भीरू बुरखर्ची और योग्य सामन्त प्राप्त नहीं हुए थे। महमूद गवाह का उत्तमोत्तम उत्तर किया था चुका है। यूसुफ धारित कुर्मी कुतुब और निजामुलमुल्क तीनों ऐसे सरदार थे जो सम्पूर्ण साम्राज्य की बागडोर संभाले हुए थे। यह धारित की बात थी कि इन सुयोग्य सामन्तों के रहते हुए भी साम्राज्य की रक्षा न हो सकी। इन बुरखर्ची सामन्तों ने मलिक को पहचान लिया था अतः उन्होंने स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की। सब से पहले यूसुफ धारित साम्राज्य की सेवा से पृथक् हुआ। यूसुफ धारित को महमूद गवाह बहुत चाहता था। उसका पालन-पोषण भी महमूद गवाह की देख-रेख में हुआ था। महमूद गवाह उसे पुत्र तुल्य मानता था। जब महमूद गवाह को प्राणवैद्य दिया गया तो यूसुफ को बहुत दुःख लगा। समय पाकर उसने बीजापुर में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इसी तरह कुर्मी कुतुब ने दोसकुंडा और निजामुल मुल्क ने ग्रहमदनगर को राजधानी बनाकर नये राज्यों की नींव डाली। यद्यपि तीनों सामन्तों ने बहमनी साम्राज्य के तीन बड़े भागों पर शासन स्थापित किया था किन्तु बहुत दिनों तक बहमनी वंश के प्रति उनकी आस्था बनी रही। जिस समय इस वंश के उत्तराधिकारी बड़ी विपत्ति-वस्था में थे यूसुफ धारित ने उन्हें अपने यहाँ आश्रय दिया और उनके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसा स्वयं के साथ करता है।

कुर्मी कुतुब ने भीते भी कभी अपना को सावक नहीं माना। उसके मरने के बाद ही कुतुब वंश के साथ 'शाह' शब्द जुड़ा और कुतुब वंश के स्वाम पर कुतुबशाह शब्द नम प्रयोग होने लगा।

बीजापुर के अधीन वह कन्नड भाषी प्रदेश था जो उन दिनों विजय नगर के शासन में नहीं था। राज्य के कुछ भाग पर विजय नगर का आधिपत्य था और कुछ भाग पर दोसकुंडा का। ग्रहमदनगर का शासन मराठी भाषी क्षेत्र पर था। बीजापुर राज्य के अन्तर्गत कुछ मराठी भाषी क्षेत्र भी शामिल होता था। बीजर में कुछ दिनों के लिए बरीर शाही राज्य रहा किन्तु इस वंश का अधिकार-क्षेत्र बहुत सीमित था। बीजर का बरीरशाही वंश अधिक-समय तक शासन न कर सका।

विजयनगर साम्राज्य

इन तीनों राज्यों को सबसे अधिक भय विजयनगर साम्राज्य से था। घलाबूटीन हिलारी और उसके सेनापति मलिक काफूर के नामों से बरबरी के पारव बरबन के काफरीय और इरानमुद्र के होयमना अपने राज्यों की रक्षा न कर सके किन्तु इन तीनों राज्यों के पतन के पश्चात् सीमा ही विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई और इस साम्राज्य ने पश्चिम भारत की बनसा में नई आस्था और नया विश्वास उत्पन्न किया। मूढि के सम्बन्ध में नई व्यवस्था काम में आई। व्यापार में वृद्धि हुई। कला और साहित्य

के सम्बन्ध में इस साम्राज्य के संभावकों ने जो कुछ प्रयत्न किये उन्हें भ्रुसाभा नहीं जा सकता। इस साम्राज्य की धन-साया में सेमुय के घट्ट विषयों ने साहित्य की उस मेदिनी का धरममन दिया जो दुर्धनों में भी हरी-भरी बनी रही। कम्बू साहित्य को पुनर्जीवन दिया। वैदिक बादमय के उद्धार के लिए इस साम्राज्य ने जो प्रयत्न किये उनकी तुलना पूर्ववर्ती किसी राज्यवा से नहीं की जा सकती। विजयनगर साम्राज्य और दक्षिण के मज्जित मुस्लिम राज्यों में सर्वत्र सभ्य बसठा रहा। अथ में तीनों राज्यों के संयुक्त प्रयत्नों ने विजय नगर की दक्षिण को लालीकोटा के युद्ध क्षेत्र में परास्त किया। कुछ समय के लिए दक्षिण भारत में बीजापुर, मोमकुण्डा और बहमननगर बहुत प्रविष्टतासी राज्य बन गये। यह इतन ही सकता है—यदि मुगल साम्राज्य इन तीनों राज्यों का बिरोधी न बनता, महापट्ट में मिबाबी काम न लेते और तीनों राज्यों में विजयनगर से सकते समय जो एकठा जलान हुई थी वह बनी रहती तो दक्षिण भारत का इतिहास किम तरह लिखा जाता? ये तीनों राज्य भारतवर्ष के इतिहास पर क्या प्रभाव डालते? भाव इन प्रश्नों का उत्तर कौन दे सकता है?

इन प्रश्नों का उत्तर बाह्य कोई न दे सके, किन्तु यह कहा जा सकता है कि इन राज्यों ने कुछ नई परम्पराएँ स्थापित की थीं। बहमनी शासकों ने अनुभव किया था कि स्थानीय जनता की संस्कृति और उसके साहित्य में कुछ उदात्त तत्व विद्यमान हैं। उस समय चक्रवर्त का जन्म नहीं हुआ था। कीरोफगाह बहमनी का जो मजार मुलबर्गा में बना हुआ है वह मुस्लिम और हिन्दू स्थापत्य कला के मिश्रण का अच्छा उदाहरण है। चक्रवर्त ने जो रंग रंग और नीति चपकाई थी वह चक्रवर्त के साथ समाप्त हो गई किन्तु दक्षिण भारत में जिस परम्परा का प्रभाव कीरोफगाह बहमनी ने किया था वह मोमकुण्डा में मुहम्मद अली अलुवसाह के युग में पूर्णतया विवक्षित हुई और बहमन हसन तामासाह के समय में भी विद्यमान रही और बीजापुर में भी उसे विवक्षित करने के लिए प्रयत्न किया। इन तीनों राज्यों के नरेशों की संगीत तथा साहित्य से बड़ा प्रेम था। इस्लामी धार्मिकशाह (हिन्दू) ने जिन जिन राज दक्षिण में गीत गीत जो 'मकर' नामक संस्कृत में संकलित है। उनमें 'अम्बुसु' की उपाधि स्वीकार की थी। उनके दरबार में दूर-दूर के संगीतज्ञ आते और समावृत्त होते। हिन्दुस्तानी संपीड में मोमकुण्डा और बीजापुर के नरेशों की समान रुचि थी। बीजापुर और मोमकुण्डा के पुत्रों प्रबन्धों का निरीक्षण किया जाये प्रकट वहाँ कपुतने संगीतज्ञ पद्यों के नरेशों से गीत सुने जायें, हम समय की प्रवृत्ति को दक्षिणायनी रूप में देखते हैं।

दक्षिणो भाषा

समय की यह प्रवृत्ति पूरी तरह प्रतिफलित हुई भाषा के क्षेत्र में। निम्मायेह इन राज्यों में कुछ नामन्त्र और राज्याधिकारी तथा चर्चायेह उके से जिनकी मातृभाषा तुर्की ईरानी प्रकट प्रकटी थी। राज्य का कार्य शास्त्री में होता था, किन्तु नाचारम कर्मचारी या तो निम्नी बीजापुर और बहमननगर के जाये से या फिर दक्षिण भारत के निवासी थे। दक्षिण भारत के बहुत से हिन्दू बड़े-बड़े घरों पर नियुक्त थे और कुछ

बीजान-मसी आदिग घाह

प्रदेश घिबाबी ने मही लिया था उस पर उसने अधिकार कर लिया। बीजापुर के पदबात घोरंगजेब ने सोलहगुणा पर आक्रमण किया। जब बीजापुर घोर सोलहगुणा के स्वतंत्र राज्य न रहे तो इतिहास भारत का घचित-मनुसल जाता रहा। घोरंगजेब को सोमे मराठों से लड़ना पड़ा। वह घोरंगबाद में बस गया। राजधानी दिल्ली के बहुत से परिवार घोरंगबाद में घाये घोर घन्त में घोरंगजेब की घन्तघटि भी घोरंगबाद के निवट ही हुई।

यहाँ इतना घोर उन्नेख बरमा घाबदयक है कि बीजापुर घोर सोलहगुणा के घासक गया है। बम के बारे में इस सम्प्रदाय के लोग सुभी तथा घग्घ सम्प्रदायों से सम्बन्धित मुसलमानों की तरह घास्वा रखते हैं किन्तु उनमें कुछ बिगोय बातें हैं जो उन्हें हमारे मुसलमानों में घृण्य कानची हैं। रहन-सहन में भी उनकी कुछ बिरोधताएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। ईरानी साहित्य के सम्बन्ध में इन लोगों की रचि स्पष्ट है। ईरानी परम्परा के बहुत से बिन्द् इन लोगों में बिद्यमान हैं। ये ऐसे बिन्द् हैं जो बीजापुर घोर गालकुन्दा के घासकों को भारतीय बनता के निवट किन्तु दिल्ली के मुयनों से घृण्य करते हैं।

घहमदनगर का निजामुसमुस्क बंग घपिक समय तक घासगासक न रह सका। घादिलगाही बंग घोर कुतुबघाही बंग लगभग दो सौ बर्य तक राज्य करते रहे। इन दोनों राज्या ने इन वा घचितों में बहुत से उल्हेघनीय कार्य किये। सवीत स्थावर्य घादि के घतिरचित रचिखनी बानी के बिकास में भी इन दोनों राजबनों ने समान रूप से योग दिया।

प्रस्तुत सकलन घादिलगाही बंग के मतवें राजा घनी घादिलगाह (द्वितीय) का लिखा हुआ है। इन बंग के नरनों की ताविका बिन्न प्रकार है—

- (१) मुमुक घादिलगाह
- (२) इम्माइन घादिलगाह
- (३) इबाहीम घादिलगाह (प्रथम)
- (४) घनी घादिलगाह (प्रथम)
- (५) इबाहीम घादिलगाह (द्वितीय)
- (६) मुहम्मद घादिलगाह
- (७) घनी घादिलगाह (द्वितीय)
- (८) निहगदर घादिलगाह

घागन काल
 (१४२० ई०-१२ ई०)
 (१२२० ई०-१३२४ ई०)
 (१२३४ ई०-१३३७ ई०)
 (१२३७ ई०-१३०० ई०)
 (१३०० ई०-१४२९ ई०)
 (१४२९ ई०-१४३९ ई०)
 (१४३९ ई०-१४७३ ई०)
 (१४७३ ई०-१४८९ ई०)

बीजापुर साहित्य साधना

मुमुक घादिलगाह मरमुक गाराग वा घर्घ पुत्र वा उयने मबने पहले बहनी गाराग घोर के कुछ भाग पर स्वतंत्र घागन स्थापित किया वा घघ बीनर के मुस्लिम बिज्ञान घोर बिबि बीजापुर बने घाये। इबाहीम घादिलगाह (द्वितीय) के घागननाम में बीजापुर साहित्य मनीत घोर घादिलगाह बिन्न का केन्द्र बन गया। उनरी बघावि 'मनुसल' थी। मनीत के माघ गाय उनमें साहित्य के प्रवि रचि थी। स्वर्ण बर्र भाग में घीन निगना

हिन्दुओं ने बर्म-परिवर्तन भी किया था। जो लोग हिन्दी बीजापुर और प्रहमबाबाय से यहाँ प्राये थे वे बरेलू बीसबाबा में हिन्दी के उस रूप का प्रयोग कर रहे थे जो लेनीय प्रभावों को लिये हुए था। जो हिन्दी क्षेत्रीय बोलीयों के प्रभावों को ग्रहण कर वर्तमान बिहार, उत्तर प्रदेश राजस्थान और पंजाब के बड़े भाग की सांस्कृतिक भाषा बनने लगे। यही भी जिसमें घनीय कृत्यों ने पहुँचियाँ लीं। जिसमें विद्यापति ने गद्य लिखा और जिसमें कबीर विषय विस्तार को धर्मों का रूप दे रहे थे। निम्नलिखित इस भाषा में उस समय तक फारसी के समान उच्चकोटि के काव्य नहीं लिखे गये थे। फारसी के समान उसमें विस्तृत-सामर्थ्य नहीं था। फारसी और फारसी की तरह भाषों की अभिव्यक्ति नहीं थी, इतना होने पर भी इस हिन्दी के अपने गुण कम नहीं थे। उसमें साहित्यिक भाषा बनने की क्षमता थी। संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश के विकास में योग देने वाले साहित्यिक साक्षर व्यक्ति हिन्दी के इस स्वरूप से परिचय प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव नहीं कर रहे थे। यह भाषा ब्रह्मि भाषाओं से विशेष कर मराठी से सम्बन्धी से सकती थी। बीजापुर और पोन्नकुण्डा के शासकों ने इस भाषा के विकास में उत्प्रेक्षणीय योग दिया। फारसी के बड़े से बड़े लेखक और कवि के समान इस बोली के कवि और लेखक दरबार में आदर पाते थे। शासक स्वयं इस बोली में कविता लिखने लगे। बड़े-बड़े बर्मोंपदेष्टाओं ने इस बोली में उपदेश देना प्रारंभ किया। धार्मिक विषयों पर टीकाएँ लिखी जाने लगी। इस भाषा ने धीमे धीमे सांस्कृतिक भाषा का पद ग्रहण किया और जीवन के सभी क्षेत्रों में उसका व्यवहार होने लगा। यह बोली हिन्दी की एक विशेष घंटी है। हिन्दी की प्रमुख शक्तियों और विभाषाओं से इसका पारंपरिक प्रकट करने के लिए इस बोली को ब्रह्मिनी कहा जा सकता है। इस विभाषा से लिए वाचकन यही नाम प्रयुक्त होता है।

तीनों राज्यों का अन्त

बिजय नगर साम्राज्य की समाप्ति के पश्चात् दक्षिण के ये तीनों मुस्लिम राज्य बहुत दिनों तक अस्तित्वशीली नहीं रहे। हिन्दी के मुगल शासक इन राज्यों को प्रभुत्व दृष्टि से नहीं देखते थे। प्रहमबाबा नगर उत्तर भारत के निकट था। उसकी सीमाएँ मुगल साम्राज्य की सीमा से मिलती थीं। अकबर ने सबसे पहले इसी राज्य पर आक्रमण किया। प्रहमबाबा नगर का अस्तित्व समाप्त हो गया। प्रहमबाबा नगर का शासन क्षेत्र मुगल साम्राज्य में वसा गया। बीजापुर और साहजहाँ के समय में बीजापुर और पोन्नकुण्डा फलते-फूलते रहे। औरंगजेब ने ज्यों ही बरेलू भूमिओं से छुटकारा पाया उसने दक्षिण के ये दो मुस्लिम राज्यों को समाप्त करने का निश्चय किया। इन्हीं दिनों महाराष्ट्र में शिवाजी का उदय होता है। शिवाजी का पिता बीजापुर में एक बड़े पद पर था। शिवाजी ने महाराष्ट्र के मुगल राज्य को पहले ज्यों का त्यों छोड़ दिया और बीजापुर के घातों तथा युगों पर अधिकार करना प्रारंभ किया। यह स्पष्ट दिखाई देता है औरंगजेब पहले शिवाजी से नहीं बीजापुर के आधिपत्याहों से निपटना चाहता था। इस स्थिति का लाभ शिवाजी ने पूरी तरह से उठाया। औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण किया और दो

प्रदेम पिबाजी ने नहीं लिया था उस पर उसने अधिकार कर लिया। बीजापुर के परबाय औरंगजेब ने गोपकृष्ण पर आक्रमण किया। जब बीजापुर और गोलकुण्डा के सम्बन्ध राज्य न रहे तो दक्षिण भारत का दक्षिण-मध्य प्रदेश बना रहा। औरंगजेब को शोध मराठों से करना पड़ा। वह औरंगजेब में बस गया। राजधानी दिल्ली के बहुत से परिवार औरंगजेब में आये और अन्त में औरंगजेब की अस्तित्व की औरंगजेब के निकट ही हुई।

यहाँ इतना और उल्लेख करना आवश्यक है कि बीजापुर और गोलकुण्डा के शासक गिनाये। धर्म के बारे में इस सम्बन्ध के शोध मुझे तथा धर्म सम्प्रदायों से सम्बन्धित मुसलमानों की तरह आस्था रखते हैं किन्तु उनमें कुछ विवेक बातें हैं जो उन्हें हमारे मुसलमानों से पृथक् करती हैं। रहन-सहन में भी उनकी कुछ विषयवस्तु स्पष्ट दिखाई देती हैं। ईरानी साहित्य के सम्बन्ध में इन लोगों की रुचि स्पष्ट है। ईरानी परम्परा के बहुत से बिन्दु इन लोगों में विद्यमान हैं। य ऐसे बिन्दु हैं जो बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों को भारतीय जनता के निश्चित किन्तु किसी के मुसलमानों से पृथक् करते हैं।

अहमदनगर का निजामुलमुल्क बाद अधिक समय तक वासनाम्न न रहे सवा। आदिलशाही बंग और गुजराती बंग समय-समय दो-दो बरस तक राज्य करते रहे। इन दोनों राज्यों ने इन दो राज्यों में बहुत से उल्लेखनीय कार्य किए। मंगल स्थापना आदि के अतिरिक्त हरिजन की भाषा में भी इन दोनों राज्यों में प्रचार रूप से योग दिया।

प्रमुख सफल आदिलशाही बंग के मठों तथा धनी आदिलशाह (डिग्री) का गिना हुआ है। इस बंग के मठों की तालिका निम्न प्रकार है—

धामन धाम

(१) धूमक आदिलशाह	(१६६० ई—१७०० ई०)
(२) इस्माइल आदिलशाह	(१७२० ई०—१७३६ ई०)
(३) इब्राहिम आदिलशाह (अधम)	(१७३४ ई०—१७४० ई०)
(४) धनी आदिलशाह (अधम)	(१७४० ई०—१७८० ई०)
(५) इब्राहिम आदिलशाह (डिग्री)	(१७८० ई०—१७८९ ई०)
(६) मुहम्मद आदिलशाह	(१७८९ ई०—१७९६ ई०)
(७) धनी आदिलशाह (डिग्री)	(१७९६ ई०—१८०० ई०)
(८) मिर्जाद आदिलशाह	(१८०३ ई०—१८०६ ई०)

बीजापुर साहित्य-साधना

धूमक आग्नि अहमद शासन का धर्म पुनः वा उसने अपने रहन-सहन की साधना के गुप्त भाग पर अत्यन्त ध्यान स्थापित किया था मध्य बीजपुर के मुस्लिम विद्वान और बरि बीजापुर बन आये। इब्राहिम आदिलशाह (डिग्री) के शासनकाल में बीजापुर साहित्य मधीन और धार्मिक विद्वान का देश बन गया। उनकी उपाधि 'अहमद' की। मधीन के नाम नाम उनमें साहित्य के अति रुचि थी। स्वयं वह नाम में दो विद्वान

बा । इसके शासनकाल में एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई जिससे बीजापुर का महत्व बहुत बढ़ गया । गुजरात में बहुत दिनों से मुसलमानों का स्वतंत्र राज्य था । दिल्ली में आये दिन कोई न कोई उत्पात होता रहता था । गुजरात में बहुत दिन तक शान्ति बनी रही । उन दिनों अहमदाबाद सूफी सन्तों का एक प्रख्यात क्षेत्र था । ये सूफी सन्त पश्चिम भारत राजस्थान और दिल्ली की यात्रा किया करते थे और कभी कभी दक्षिण में भी वार्षिक चर्चा तथा चर्म-प्रचार के लिए पहुँचा करते थे । एकबार ने जब राज्य विस्तार की नीति अपनाई तो गुजरात का राजवंश समाप्त हो गया । इसी तरह अहमदनगर भी पतनस्थ हुआ । गुजरात और अहमदनगर के पतन से बहुत से विद्वान और कवि विस्थापित हो गये । इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) ने अपने हुए से लेकर इन विद्वानों और कवियों को बीजापुर में निमंत्रित किया । नित्यप्रति राजधानी में किसी न किसी विद्वान का आयोजन होता रहता था । इसके शासनकाल में मूवहीन खूहरी खीरहीन सीराजी और मुहम्मद अबुल कासिम फरिदा जैसे विद्वान तथा कवि दरबार में थे । फरिदा ने फारसी में भारत का इतिहास लिखा ।

भक्ती आदिलशाह (द्वितीय) का राज्यकाल

ऊपर जो विवरण दिया गया है, उससे यह स्पष्ट हो गया कि भक्ती आदिलशाह (द्वितीय) के सिंहासन पर आसीन होने से पहले बीजापुर में साहित्य और कला के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार हो चुका था । भक्ती आदिलशाह (द्वितीय) केवल समृद्ध राज्य ही नहीं एक समृद्ध साहित्यिक परम्परा का उत्तराधिकारी भी था । उसने अपने पिता से बीजापुर की साहित्यिक परम्परा और माँ से गोलकुण्डा की सांस्कृतिक निधि उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त की थी । इसके पिता मुहम्मद आदिलशाह का बिजाह गोलकुण्डा के मर्मज्ञ कवि तथा प्रसिद्ध शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह के मंत्रीने मुहम्मद कुतुबशाह की पुत्री और अब्दुल्ला कुतुबशाह की बहन खदीजा सुलताना महरबानू (बड़े शाहब) के साथ हुआ था । जब खदीजा बीजापुर पहुँची तो उसने साहित्यिक आयोजनों में बड़ी रुचि ली । उसके पिता चाचा और भाई आदि या तो कवि थे या कवियों के प्रायश्चित्त थे । उसके पक्ष में वहाँ बहुत-सी सामग्री ही गई खुस्रू नामक कवि भी दिया गया ।

बीजापुर दरबार के लेखकों ने भक्ती आदिलशाह (द्वितीय) को मुहम्मद आदिलशाह और खदीजा का धीरस पुत्र माना है किन्तु धीरंगजेब के साथ जो लेखक बीजापुर के अभियान में सम्मिलित थे उन्होंने इस बात का जस्तोज किया है कि आदिलशाह (द्वितीय) मुहम्मद आदिलशाह का धीरस पुत्र नहीं था । खदीजा ने किसी वरिष्ठ परिवार से उसे दान का अनुरोध किया था, खदीजा ने ही उसका पासन-पोषण किया था । मुहम्मद आदिलशाह के बहान्त होने पर सामन्तों ने भक्ती आदिलशाह को यही पर बैठा दिया । इसके बारे में बीजापुर के लेखक ही अधिक प्रामाणिक प्रतीत होते हैं । जो लेखक गोलकुण्डा के अभियान में धीरंगजेब के साथ थे उन लेखकों ने गोलकुण्डा के लक्ष्मीनारायण अबुलहसन के सम्बन्ध में भी भक्ती आदिलशाह (द्वितीय) से भिषकी-मुलकी कहानी लिखी है । इन

सेवकों ने बताया है कि धन्य हूँ एक मामूली घराने में पैदा हुआ था और संयोगवश गद्दी पर बैठा दिया गया था ।

धनी धारिद्र्यगाह (द्वितीय) जब गद्दी पर बैठा तो चारों ओर दारिद्र्य था, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही विपत्ति के बादल घिर आये । पिताजी ने बीजापुर के कई किसानों पर अधिकार कर लिया । धनी धारिद्र्यगाह का एक निश्चय सरदार अधिकारियों पिताजी के बदनबूझ का शिकार हुआ । मुगल सम्राट औरंगजेब बीजापुर पर अधिकार करण का प्रयत्न करता है । बीजापुर राज्य के पतन के समा साधन उपस्थित हो चुके थे किन्तु संयोगवश धनी धारिद्र्यगाह (द्वितीय) धारिद्र्यगाही बंध का अन्तिम नरक बनने से बच गया ।

चारों ओर विपत्ति ही विपत्ति दिखाई देती थी । इस विपरीत परिस्थिति में भी धनी धारिद्र्यगाह (द्वितीय) के कलाभ्ये में कोई अन्तर नहीं आया । उसने अपने दादा की परम्परा का निमाने का प्रयत्न किया । अन्य धारिद्र्यगाहों नरेशों की तरह इसे भी भवन निर्माण का शौक था । इसका मकबरा पूरा नहीं बन सका किन्तु जो हिस्सा बना था वह आज भी विद्यमान है । इस मकबरे के परे को देखते हुए कहा जा सकता है, यदि मकबरा पूरा बन जाता तो वह बीजापुर की विश्वविख्यात गाल गूँबज से भी विद्याल तथा भव्य होता ।

धनी धारिद्र्यगाह (द्वितीय) कवि या कवियों का पाषण्डाता था । उसके दरबार में दक्षिणी के कई बड़े कवि विद्यमान थे जिनमें सुखरती धनीन हागामी और धमावी उल्लेखनीय हैं । सुखरती का स्थान दक्षिणी के श्रेष्ठतम कवियों में दिया जाता है । इन कवि की दो पुस्तकें—'गुलशन इरक' और 'समानामा फारसी शिपि में छप चुके हैं । इनने बहुत सी पत्रों और कसीदे लिखे हैं । और रस और गुंवार रस में इसे बहुत उन्नतता मिली है । यह धनी धारिद्र्यगाह के बचान का मित्र था । दोनों बचपन में साथ साथ खेलते थे । युवा और बुढ़ावस्था में भी दोनों साथ साथ रहे । फारसी के कवियों में बंगलाचरण के लिए जो पद्धति काम में लाई जाती है उसके अनुसार समकालीन गायक की मदद (प्रवृत्ति) करना आवश्यक होता है । सुखरती ने अपने कान्धों में धनी धारिद्र्यगाह की मदद मिली है । मदद धमावा नृपति प्रवृत्ति से सम्बन्धित कविता से धनी धारिद्र्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हुई है । सुखरती ने औरंगजेब के प्रथम आक्रमण का वर्णन भी बहुत सुन्दर ढंग से किया है । धनी धारिद्र्यगाह (द्वितीय) ने सुखरती को 'मलिकुरतोघरा (कवि सम्राट) की उपाधि प्रदान की थी ।

सुखरती ने अपने पाषण्डे धनी धारिद्र्यगाह का गिण्य बताया है—

मुझे यूँ मुग्धन बादगाह याद है
पिछे पीर न यम्के उम्ताद है
मुज उम्ताद उम्ताद पासम छछ
जिता हूँ छछ जिन जम छछ
मुज जद इराहीम धमा धनी
तू मुगली मुहम्मद का जाया धनी

(पुस्तकें इरक)

यदि नुसरती की रचनाओं की ध्यान में रखकर इस कथन पर विचार किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि बि ने अपने आभयशता के प्रति अत्यधिक सम्मान प्रकट करने के लिए ये पंक्तियाँ लिखी होंगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि नुसरती असो आदिसआह की अनेका कविता के शेष में बहुत ऊँचा स्थान रखता है किन्तु उपयुक्त पंक्तियाँ केवल अत्यधिक सम्मान के लिए ही नहीं हैं। इसमें सच्चाई अवश्य है। कथन में असी की अधिक सुविधायें प्राप्त रही होंगी। अनेक विषयों में नुसरती ने उससे सहायता ली होगी। बि के नाते असो आदिसआह नुसरती की तुलना में नहीं आता किन्तु वहीं एक साहित्य शास्त्र का सम्बन्ध है वह नुसरती की सहायता करता रहा होगा।

नुसरती और असी आदिसआह (द्वितीय) की मित्रता को लेकर बहुत-सी झगड़ें प्रचलित हैं। आजीवन दोनों व्यक्तियों में सौहार्द बना रहा। इस सौहार्द में न जाने कितनी बटनारें चिरस्मरणीय हो गईं। कई बार दोनों कविता में ही बातचीत करते। एक समय असी और नुसरती छान में बूम रहे थे। ऊबारा बन रहा था। ऊबारे की प्रसंग्य बूँदों को देखकर असी ने कहा—

उड़ता सो यो फव्वारा पानी का क्या निष्फल है
नुसरती ने तत्काल उत्तर दिया—

तुम शाह पर उड़ाने मोती का मोरखल है

नुसरती के 'असीनामे' से बीजापुर वहाँ के राजवंश और विद्यपकर असी आदिसआह (द्वितीय) के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। उसने असी आदिस का बचान बड़े उताह से किया है—

ओ हे साहे आदिस मुसम्मी बसी
अनी इन्ने सुलताँ मुहम्मद बसी
तेरे बिल के दरिया का शर यक है मौज
फ़तक पस्त आन तुम बयासों की मौज
तेरा घर हर मुर्दा बिल कूँ जनम
करे खिरा बहर छुस मसीहा का दम
सिक दायराँ घर ते तुँज सऊर
घर्या तब ए मौजूँ ते सुज नरम नूर

असी आदिस का कविता संग्रह

असी आदिस कवि का उसमें सत्रह कोटि की कल्पना शक्ति थी, साहित्य-शास्त्र से उसका परिचय था इन सब बातों का परिचय नुसरती के कर्बनों से मिलता है। प्रस्तुत कविता संग्रह नुसरती के कथन को पुष्ट करने के लिए पर्याप्त है। कविता संग्रह की

हस्तलिखित ग्रंथि धाम्म राज्य के केन्द्रीय अभिलेखालय में सुरक्षित है। लिखित पुस्तक के २३० पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ ९ × ३३ माहति का है। सामान्यतया प्रत्येक पृष्ठ में सह पंक्तियाँ हैं। कुछ पृष्ठों में पंक्तियाँ कम भी हैं। पुस्तक पर लिपिकाल धयबा लेखन-काल नहीं दिया गया है। जब तक इन संकलन की अन्य प्रति कहीं नहीं मिली। इस संकलन को देखते हुए जात होता है, यह कवि की उत्कृष्ट रचनाओं का संग्रह है। उसकी अन्य रचनाएँ भी धयबा होनी चाहिए, किन्तु इस संकलन के प्रतिरिक्त उसकी कोई दूसरी रचना उपलब्ध नहीं हुई। इस संकलन में घंसी आदिलशाह (द्वितीय) व धयबा काव्य नाम शाही प्रयुक्त किया है। बीतों में उसने 'शाही' के स्थान पर 'मदन' धयबा 'मदन रूप' काव्य नाम लिखा है। दो-तीन स्थानों पर उसने 'घंसी आदिल' का प्रयोग भी 'मोय' के रूप में किया है। कवि ने बीजापुर के यहाँ का विस्तार से वर्णन किया है। यह वर्णन एक कवि का वर्णन ही नहीं है। गृहपति धयने घर का वर्णन कर रहा है। हस्त-लिखित ग्रंथि के रखने के यह जात नहीं होता कि पुस्तक कहाँ से धारण हुई है और वहाँ उसकी समाप्ति है। उस पर जो अंक बात बने हैं वे उस समय के नहीं हैं जब पुस्तक लिखी गई थी। संकलन को आधोपान्त पढ़ने के पश्चात् यह जात होता है कि संकलन अधूरा नहीं है। कविघनी के कवियों ने संवत्साधारण के सम्बन्ध में कारसी काव्यों का अनुकरण किया है। कारसी काव्यों की तरह धारम में ईश-स्तुति की जाती है। यह ईश-स्तुति 'हम्' कहलाती है। ईश स्तुति के पश्चात् हजरत मुहम्मद की प्रशंसा की जाती है। इन प्रकार की प्रशंसा के लिए नात धम का प्रयोग होता है। 'नात' के पश्चात् हजरत मुहम्मद के सावित्री और उत्तराधिकारियों का वर्णन रहता है जो मुनाजात कहलाता है। जिसे कवि मुनाजात में हजरत अनुकर भादि धमोकाव्यों का बखान न करके केवल हजरत घंसी का वर्णन करते हैं। हजरत घंसी सहित १२ इमामों की प्रशंसा की जाती है। मुनाजात के बाद समकालीन शासक की प्रशंसा—मदह—रहती है। और फिर कवि धयना परिचय देता है। इन परिचय के पश्चात् वास्तविक विषय धारम होता है। हम्-नात मुनाजात और मदह निघने का अंग बहुत कुछ स्वच्छ हो चुका है। किसी भी कवि का संवत्साधारण सम्बन्धी अंग देखा जाय तो उसमें अन्तों का हेरकर प्रवरम दिताई देता है, किन्तु अन्तों में धयिक धयन नहीं रहता। हिन्दी के प्रेमचारी कवियों—मुहम्मद कावसी धारि ने भी इस कवि का अवलम्बन किया है। प्रस्तुत संकलन का धारम कवीरों से हुआ है। पढ़ना कमीश ईरवर से सम्बन्धित है दूसरा हजरत मुहम्मद से, तीसरा घंसी से और चौथा घंसी सहित बाह्य इमामों से। इन तरह हम् नात धीर मुनाजात से संकलन धारम हुआ है। कवि स्वयं शासक है धय मदह का धयन नहीं सठता। फुटकर कविता में कवि के धाम-परिचय के लिए स्थान नहीं होता। हमसे यह जात होता है कि धारमिक पुण्ड नष्ट नहीं हुए हैं। उद्गु नाथ्य की विभिन्न धीतियों को ध्यान में रखकर संकलन तैयार दिया गया है। धारम में कमीरे हैं फिर मसनवियाँ उनके पश्चात् पदम धारि। इन भाग के कविता दोहे धीर नीत एक स्थान पर हैं। धय में धारसी की कविताएँ हैं। धारसी की कविता किसी विषय से सम्बन्धित न होकर केवल 'धारसी' से सम्बन्ध है। धारसी धीर धारसी कविता में धारसी कहने को विषय प्रया है। धारसी

बर्नभासा के प्रत्येक धकार के कुछ धंक निश्चित हैं। भारतीय ज्योतिष-विद्या में भी कुछ धर्मों के धंक निश्चित कर दिये गये हैं। इन धर्मों से संख्या का काम लिया जाता है। कबि एक या दो धर्म धरना एक वाक्य में किसी व्यक्ति के जन्म-मरण धरना किसी घटना से सम्बन्धित संस्कार का उल्लेख करता है। इस प्रकार की कविता का महत्व काव्य की दृष्टि से कुछ भी नहीं है, किन्तु इतिहास के लिए इस प्रकार की कविता बहुत सहायक सिद्ध होती है। इस संकलन की फारसी कविता का इसीलिए महत्व है। इन कविताओं में जो संस्कार दिये गये हैं वे ऐतिहासिक दृष्टि से भी प्रामाणिक हैं। इस तरह संकलन में कमरा काव्य के सभी धंग धा मये। इस बात की संभावना नहीं की जा सकती कि संकलन के कुछ अंशित पृष्ठ लुप्त हो गये होंगे। पुस्तक के मध्य में कुछ पृष्ठ मरु हो गये हैं। दो-चार पृष्ठ ऐसे हैं जिनके धकारों को कीड़े खाट गये। ऐसे स्वर्तों में (—) रेखा अंकित की गई है। जहाँ पृष्ठ का पृष्ठ बीमरु का नहीं है, वहाँ भी इस बात का उल्लेख कर दिया गया है।

दक्खिनी की बहुत सी पुस्तकें फारसी और नावरीमिपि में रूप लुकी हैं। यह संकलन धर तक उन्हीं में भी नहीं लुका है। यह पइसी बार रूप रखा है और वह भी नावरीमिपि में दुल्ही की टिप्पणियों के साथ। इस्तनिश्चित पुस्तक में फारसी लिपि का जो रूप प्रयुक्त हुआ है उसके पढ़ने में कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं। उधरों स्वात-स्वात पर अलंकरण के लिए बिन्दुओं का उपयोग किया गया है और बिन्दु अगल्ले गये हैं। संकलन के सभी स्वर्त पढ़ लिये गये हैं। दो बार पंक्ति ऐसी रह गई जिन्हें प्रयत्न करने पर भी नहीं पढ़ा जा सका। इन पंक्तियों को जैसा पढ़ा जा सका उसी रूप में लिखा गया उन्हें रेखांकित किया गया है और बड़े धकारों में लुका गया है।

संकलन का विषय

प्रस्तुत संकलन की कविताएँ किसी एक विषय से सम्बन्धित नहीं हैं। उन विनों दक्खिनी में कविता लिखने की विठनी प्रवृत्तियाँ विद्यमान थीं उन सबका समावेश इस संकलन में है। विषय के अनुसार कविता का बाह्य रूप बदला है। दक्खिनी में कविता का जो बाह्य रूप लिया गया है वह धीलों को छोड़कर पूरे का पूरा फारसी काव्यों से मिलता-जुलता है। धागे बसकर जब उन्हीं एक स्वर्त धाहिरियक धापा के रूप में विकसित हुई तो उसने इस बाह्य रूप को ज्यों का त्यों धरना लिया किन्तु दुल्ही में रीति-बदल कविता का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने इन बाह्य रत्नों को बहुत धंधों में स्वीकार नहीं किया। उन्हीं की धरमें धमके ऊठीवे और मसिये दक्खिनी की गल्लों और मसियों धाहि से परबर्ती हैं। मुहम्मद कुसी कुतुबदाह की धरमें बहुत विकसित विद्याई देती है। बजही ने अपने पवरस में एक उल्लेख री है जो उल्लेख के पूर्ण-विकास का परिचय देती है। गृधरी के ऊठीवे यदि धापा पर ध्यान न दिया जाय तो धाधुनिक उन्हीं के ऊठीवों से बहुत मिलते-जुलते हैं। यही बात मसनवी के बारे में कही जा सकती है।

प्रस्तुत संकलन छोटा-सा है किन्तु इस संकलन में उस समय की सभी प्रवृत्तियों का समावेश हो गया है। समझनी धरी में दक्खिनी में किताब विकास कर लिया जा,

इसका पूर्ण परिचय इस खाते से संकलन से मिल जाता है। काव्य के स्वरूप में ही नहीं भाषा की दृष्टि से भी यह संकलन अपना महत्व रखता है। फारसी और बरबी के भाषा दोनों भाषाओं के लक्षण इस भाषा में सम्मिलित कर रहे हैं किन्तु उसका मूल रूप सर्वथा स्वल्प था। संस्कृत और हिन्दी के साथ स्याम्प नहीं माने जाते थे। मराठी का प्रभाव इस बोली पर पड़ रहा था भाषा की संरचनाही स्थिर नहीं थी किन्तु उसका बहुत कुछ परिमार्जन और परिवर्तन हो चुका था। व्याकरण पर भी ध्यान दिया जाता था।

काव्य-सौन्दर्य

वक्त्रिणी के बहुत-से काव्यों का महत्व केवल भाषा सम्बन्धी विकास की दृष्टि से है किन्तु यह संकलन भाषा के साथ साथ काव्य की दृष्टि से भी महत्व रखता है। संकलन कवीरे से प्रारंभ हुआ है। इसीसा प्रपञ्चात्मक कविता का एक स्वर्ण रूप है। प्रपञ्चा किसी राजा की भी हो सकती है किसी महारजा की भी और किसी स्थान परवा बस्तु को भी। प्रणी आधिसलाह (द्वितीय) ने काव्य के विभिन्न वर्गों में अपना कौशल दिखाया है किन्तु उसे कमीरा सेवन में ही अधिक महत्ता मिली है। कमीरा निवन की रीति निरिक्त हो चुकी थी। उसकी बेंची बेंचाई ऐसी फारसी ने ली गई है। प्रारंभ में कवि एक भूमिका बंधता है ऐसा प्रतीत होता है जैसे उस भूमिका का मूल विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है किन्तु कवि बड़े नाटकीय ढंग से उपयुक्त प्रसंग पर भूमिका और बन्ध विषय का सम्बन्ध जोड़ता है। कमीरे की उपमत्ता बहुत कुछ भूमिका पर निर्भर होती है। 'घाही' गिया सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता था प्रत्य हजरत मुहम्मद के पञ्चान् उनमें हजरत प्रणी का कमीरा गिया। दोनों कमीरे उदाष्ट हैं। 'घाही' उस महान् प्रेम करता है जहाँ वह रहता है। चारों ओर के बाधावरण से उसका राजागन्ध-मन्धन है। इसीलिए हजरत मुहम्मद और हजरत प्रणी की प्रपञ्चा के पञ्चान् वह अपने सम्बन्ध महान् करने उद्योग और करने अत-मुष्टों का बचन करता है। मनोभाव का उद्घाटन करने के लिए उरमा एक आदि प्रसंगों का उपयोग किया गया है।

पहल बत्राया जा चुका है, इसीसा भूमिका से प्रारंभ हुआ है। हजरत मुहम्मद के कमीरे में एक उद्योग का बचन भूमिका के रूप दिया गया है। यह सम्बन्ध उद्योग के हीन को हेमकर कवि कराना करता है—

उम्ब जल सम भर हीजा नहीं है जाना नूना दर
बन्धन का मुग निमान तई मुग्न प्रम्या से—पा है

हीजों में पानी नहीं है। बन्धन का सम निमान के बिना से उद्योग—
दरंग जड़े है।

प्रवर दावद के मर्का कर दस्ताने से निमान है
मयूरी नाषत ठार बरग विदग्न दस्तान है

पातल मने डाल्याँ दिसें भारज की मुख यूँ
सदन सुन्दर के ओवन पर सयन वाला चढ़ाया है

हरे पत्तों में बड़ी हुई नारंगी ऐसी लपटी है जैसे हरे वस्त्र में बड़े हुए तबली के स्तन । उद्यान का वर्णन करने के पश्चात् कवि ने हजरत मुहम्मद की प्रशंसा प्रार्थना की है । उद्यान का वर्णन पढ़ते समय पाठक का हृदय धार्मिक सौन्दर्य से मोत-मोत हो जाता है और तब—

सया मासी न कर दावा बड़ा वो नावें पाया है
—(बड़ा) वो हस्म अहमद का जिने दीं अप निपाया है
विस्मा ओ नूर का झलका खन्वर तुम सम पड़या हसका
सुरिज ने काम भा हस्का बँद्यों में अप सिखाया है

हजरत अली के कसीदे में सुरा की माबूरी भूमिका के रूप में भी गई है । यह सुरा न तो लौकिक है और न साधारण । इस मनु का पाप सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता । कवि सूफी साधक की तरह हजरत अली के सम्बन्ध में कहता है—

हँस खाल से पिया ने आते सटकते देखे
परदा नयन के म्याने राखू न तूतिया का

अपने प्रिय (हजरत अली) को देखने के लिए उसे सुरमे का आवरण भी प्रिय नहीं । प्रिय यदि अपने हाथ से मनुपान करावे तो क्या बात है—

पिय साठ रात जागूँ प्याला पिया सूँ माँगूँ
प्याला सजा वही है पिय हात के दिया का

और—

अश्रित अशर पिमावे होवे कसप क्या का

हजरत अली बिश्वास से और परम पराक्रमी भी । उनके पराक्रम का वर्णन करते समय कवि की बानी का शोध इस तरह व्यक्त होता है—

तुज नहर के आतिश करने हस्पन्द होय हासिय जिते
शमशीर के पानी मने दुश्मन के सिर हैं बुबबुडे
रज तम के सट भरबार सय
अकपक गँवा दुश्मन अड़े

वहाँ-वहाँ बीर रत का उबुमन है, कवि की भाषा बहुत सरल है। उसने रसिकता के प्रवर्धित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है। ये शब्द देखने में प्राम्थ्य प्रतीत होते हैं किन्तु उनमें शब्दों की व्यक्त करने की पर्याप्त समता है।

अमीदाद महम के कसीदे में कवि अपने महम उद्यान और खम-कुम्हों का इतना प्रशंसा वर्णन करता है कि पाठक के मन में उन सब का चित्र प्रकट हो जाता है। अमीदाद महम के वर्णन में उसने दिन और रात का प्रभावशाली वर्णन किया है—

हुषा परकास जो दिनकर दिखाया मुक का भस्मक
लाजों से बीस के भंग होती है रात बमल

दिन पूरी तरह नहीं निकलता। कुछ कुछ घबरा है। साव्यवस्था का हल्का सा घबराव कितना मुहावरा है—

दिसाये बीस के घागे सियाही रात की यूँ
थोड़ा उम्मी साफ भयन में पड़े हैं भार बजम

रात मुन्दर लजीमी गवबयू है। दिवस बर की गति वसति हुआ है—

देख जब बीस के मोशो यूँ बना भाठा है
सिये है रात भस्मकी लाने है दिन के भगल
उसी के दुब से बसी रात में हासर से हलक
देखो यूँ बीस सटकता भाठा समदुर सा उमल

कवि उद्यान का वर्णन करते समय फ़ारसी शब्दों की परिपटी को छोड़ता है। वह भारतीय कन कूर्तों में सौन्दर्य का वर्णन करता है। घाम की इस मुन्दरता का साक्षात्कार कितने कवियों ने किया होगा—

देखो कारोणरी बिस भाव की बीठा है बहार
अव के जर्ज में मनप्रस भूँ भर्पा है जर हून
खुदा नजर भम्ब की खूबी दिस तन में हो ग
बहुरता शार का नीमा नोमा है यूँ के पवन

उसके उद्यान की घंजीर के साथ घट्टा क्या है? उन घंजीरों का देवता कौन है जो न के परदे में खड़ा नाके धमन? कवि का भाव काय और कौन का है? नहीं रहा। बसित मात में लड़ी के निभता उभरा एक पक्ष है। है न के

कहता है। सेंबी के पेड़ पर एक फल लगता है—मुंजल। मुंजल जाने में धीतर धीर मधुर होता है। इन फल में जल का अंश अधिक होता है। मुंजल गरमियों में होता है। यह प्यास बुझाने के काम भी आता है। इन फल का इतना सीमाव्य कहाँ कि मावर जन माहिर्य में उसका नाम भी नहीं। किन्तु 'साही' ने उसका भी वर्णन किया है। घाम और धंजीर के परचाइ उसकी वृष्टि सेभी क उँचे वृक्ष पर गई—

विसे शरबत के यू कूजे जिते नारियल के कपर
मीठे बह नीर के लक्ष्मे से मर्या है मुंजल

मुंजल क्या है शरबत के कूजे हैं। इन्होंने नारियल को भी जीत लिया है।
साही एक मनुष्य के नाते कहता है यह महक रही वृक्षियाँ एक रहे—

जो सगों नूर सूँ बिनकर अछे होर जाँव व गगन
तो सगों रात दिन व पहर बडी कस्त मने
बखो आनन्द सूँ इस जर में सदा तास मँवस

फिर वह कवि के नाते स्वार्थ से ऊपर उठता है—

जान होर दिस से उचा हात दुभा मगता है
ता अछे अमन में सुख जैन से यू खस्क सकस

पाँचवाँ कड़ीवा श्रुमार रस से सम्बन्धित है। कवि की वृष्टि में प्रेम का बड़ा महत्व है। प्रेम एक खस्य है जो उसकी बाह सेने गया बही उत्कृष्ट गया। कवि के विचार में—

गर इस्क के पछाँ मने अबूअली उसभे कधी
ना खोस सक इस गिरह कू बेताब हो अक्सर अके

इस प्रेम में कैदना भी मधुर हो उठती है। दाँतू मोती का रूप धारण करते हैं—

गर कोई नजर कर इस्क की दर्पन में देखेगा नयन
सामा विसे भाँसू का यू खस्तान मोती जू सके

श्रुमार रस सम्बन्धी कड़ीवे में प्रेमिका मान किये बैठी है। प्रेमी उसका मान मँप करता है। प्रेम की जिस बाटिका में प्रेमी और प्रेमिका बिहार करते हैं, वह—

सहाँ का भासी पिरम का पानी
नयन मड्याँ में सदा पिलावे

जिते धम्मसाँ धमन के ऊपर
लिने-फुने हो करे भन्तारा

प्रमिका का धरितरित सौन्दर्य देखन योग्य है। केवल उसके नख को देखकर चन्द्रमा धिन गया और धमाकसा हो गई, नख के मोन्दर्य का वणन सुनकर ही प्रुव नभन संवड़ा होकर उत्तर गिमा में पड़ा हुआ है —

हरे अँचल में सुंदर वा मुक यूँ चंदर गगन बिच भलक दिसे ज्यूँ
हँसी में तिसके धपर निने यूँ हुमा दफक मिस सबा का पारा
सुंदर नखाँ कूँ चंदर ने देक्या बभल हुमा सब धमास में छप
खबर यूँ सुनवर गँवा गया पग मिया है बोना कुसुम का सारा

मसनबी

संक्रमन में दो मसनबियाँ हैं। मसनबी एक प्रकार का ब्यात्मक काव्य होता है। मसनबी प्रेम-कथा को धापार बनाती है, किन्तु यह पाठ्यक नहीं कि मसनबी का विषय प्रेम कथा से ही सम्बन्ध रखता हो। कीर रखतबा धम्य रख से सम्बन्धित इतिवृत्त पर भी मसनबी लिखी जा सकती है। मसनबी की छंदि बहुत पुष्ट हो चुकी है। यह एक प्रकार से स्वतंत्र रचना होती है और उसके प्रारंभ में हम्म सात मुताजात और मरह रहती है। इस संक्रमन में एक मसनबी 'छँबर मामा हबरत धमी के एक मुद से सम्बन्ध रखती है और दूसरी मसनबी गूँगार रख से सम्बन्धित है। मसनबी को सधप में कहना समझ नहीं है। सधप में न तो चटना का बचन दिया जा सकता है और न पारों का धरित-विनम हो सकता है। संक्रमन की छोटी छौंगी मसनबियों में 'गाही' को उत्सखनीय संक्रमन नहीं बिनी।

गहन लिखने में बलि सक्रम रहा है। उन समय लिखनी में गहन का बिकास हो चुका था। इसी लिए गाही की गहन में श्रौडता है। गहन का मुरप रख है गूँगार। एक ही गहन में विप्रत्यय और संयोग दोनों प्रकार के गूँगार रख की सृष्टि हो जा सकती है। गहन का प्रत्येक घेर स्वतंत्र होता है किन्तु गहन के सभी घेर मिल-कर धोता धबबा पाठक के मन पर एक मुग्ध, मग्न और उमरा हुआ चित्र प्रकट करते हैं। गहन का निर्माण बलि की रचना और गाधना का प्रतिक्रम होना है। बलिनी और धामे बलकर उधू में जो गहन धुक गुरू में निर्भा रई उधू में बल निर्धारित नहीं होता था। धाम बल का प्रारंभी कर्मधामा के प्रत्येक धमन के धम्यगुणधाम तथा बल-धमन्य के धाबार पर गहन की दीवान में संरहित बिजा जान मग। यह शक्ति इनकी बड़ी कि मरसत धसरों के धम्यगुणधाम और बलधमन्य के निग बहईली गहन में निर्भा जान नहीं और बलि मग बल धा रई। महाकवि नाबिक न इस प्रकार न गहन गहन की बुरई धनुष की थी। लिखनी में कुछ बलि धमे हुए हैं जिन्होंने प्रत्येक धमन के धम्यगुणधाम पर गहन

मिथी है किन्तु भावी एक वह पद्यति पूरी तरह स्वीकृत नहीं हुई थी। भावी की एकाग्रता का विन्यास और बाह्यरूप ईरानी है, किन्तु उनके वर्ण्य विषय पर भारतीयता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। फारसी काव्य के शृंगार के साथ साथ भारतीय ङंग का शृंगार रस भी इन एकाग्रता में दिखाई देता है। कहीं प्रेमिका का सौन्दर्य प्रेमी को बन्दी बनाता है—

फाँदे करे दो जूल्फ़ मुँहवरवास रबबासे
मुँह नैन पक्षेक के बदल सिस रखे चारा

कई स्थलों पर भारतीय गारी का दिव्य और साधनात्मक रूप प्रतिमान हुआ है। वह भारतीय गारी को अपनी प्रकृति से प्रिय को बन्दी बनाने की बात तो दूर अपना सर्वस्व समर्पण करने में ही अहोमाय्य मानती है। तब में अपने आपको पला देती है, जिससे जन्म जन्मान्तरों तक वह अपने प्रिय की वासी बन सके। उसे अपना पुत्रक और परिच्छिन्न पर अनीष्ट नहीं वह प्रजापतिजी की नीरवमय पथ पर आसीन होकर पृथ्वि धनुमन करती है—

अर्धग हो में पिया की दिसती हूँ छार्वे सम हो
कह भाव ते रिक्ता कर लेती हूँ मन में जम जम
हैं हैं छकी हुई हूँ पी बस्म का पियासा
पिब जीव हो के हरबम बसता हमन में जम जम
कीटी हूँ चक कसौटी रंग रूप जो परखते
पिब सूर-सा झलकता बरिस सखन में जम जम

प्रिय प्रेमिका को स्मरण कर से तो प्रेमिका जिहास हो जाए और फिर के बल प्रेमी के पास पहुँचे—

सजन मिसने बुतावे जो
अमूँगी पौव कर सिस सूँ

कई कवियों ने कविता बोले अथवा घर में दो भाषाओं का प्रयोग किया है। एक दो अथवा तीन शब्दों में संस्कृत अथवा हिन्दी होती है तो एक शब्द में फारसी या हिन्दी। उद्गीर्ण की इस तरह की कविताओं से हिन्दी भाषी परिचित हैं। अनी भावित ने इस तरह एक द्विभाषी अथवा त्रिभाषी मिथी है। एक घेर यहाँ दिया जाता है—

बो मनवसी भाने की घुन सुनते हुमा मुज काम सुक
भत धोक सू पीने भवस पुरा मी कुनम पमाना रा

ब्रजभाषा के कवियों ने रूपों का निर्वाह दूर दूर तक किया है। हिन्दी की ऐतिहासिक कविता का यह प्रभाव साही पर भी दिखाई देता है। एक पूरी सजस बृत्त पर लिखी गई है जिसमें बृत्त को एक संन्यासी के रूप में चित्रित किया गया है।

मुसम्मस और मुसम्मन

फरसी में पाँच चरणों और छह चरणों की कविता के लिए धम्म धम्म नाम है। इस संकलन में एक मुसम्मस और एक मुसम्मन है। मुसम्मस सुनने में पीठ प्रतीत होता है। मुसम्मस में बिपहिनी की शैवना किछ सफ़लता है ध्वनित हुई है—

सा दीपक बिरह्दा अपने में
तन जाली झुक-झुक अपने में
तुम याद कर तलमसती हूँ
सूँद तेन में दिस तनती हूँ
तन मोमवसी हो जलती हूँ

ताजा बन्दे मघाज और गुलबर्गा

मुसम्मन में कवि ने वशिष्ठ के एक प्रसिद्ध सूत्री वाक्य ताजा बन्देनबाज की प्रशंसा लिखी है। साही अपने भासपास के वातावरण से बहुत प्रभावित है। वह इस प्रभाव को अपनी कविता में व्यक्त करता है। उसके समय तक मुमबर्गा के ताजा बन्दे नवान नेमू दरज की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उनके मजार पर यात्रा की तरह सड़कों भर-भारी एकत्रित होते थे। मुसम्मन में ताजा का यही महत्त्व मुखरित हुआ है।

स्वर्ण ताजा की मजार के कारण गुलबर्गा का मिट्टी भी—

पाव है बाज़ूर ते जाँ तूँ समाया सो जमी

मसिया

कवि ने एक मसिया भी लिखा है। मसिया धोक को व्यक्त करता है। हजरत मसी के दो मुठुरों—हजरत हुसन और हुसेन को लेकर इनक मसिया लिख दये। मसिया उर्दू काव्य साहित्य का विचार संग्रह है। प्रमुख संकलन में जिस पद्य पर मसिया लिखा गया था उसे बीमरु खाट गई, यहाँ 'साही' की मसिया सम्बन्धी रसाल का अर्थन दन का कोई ज्ञापन नहीं है।

दक्षिणी कविता के अन्त में पञ्चर रवाइफ़ी और दर मुकमिल है।

१. मुपाना पूर्व कर के मरा।

कवित्त-बोहा-महेसी

बकिष्नी के धारंगिक लेखक बब तथा हिन्दी की प्रम्य मिमाषाओं के चाहित से प्रच्छी तरह परिचित थे। बजही ने 'सबरस' में स्थान-स्थान पर बजमापा के बोहों को उद्घृत कर धपना मठ पुष्ट किया है। बकिष्नी के इन कवियों की तरह 'धाही' भी बजमापा की परम्परा से प्रच्छी तरह परिचित था। उसके कुछ बोहे, कवित्त और पहेसी इस सफलन में एक स्थान पर भी गई है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन बोहों और कवित्तों में बजमापा के कवियों जैसा प्रभाव नहीं है किन्तु इन बोहों तथा कवित्तों से इतना परिचय मिलता है कि सुदूर बकिष्नी में रहते हुए भी बकिष्नी के कवि उस भाषा से कितने प्रभावित थे जो उत्तर भारत के बहुत बड़े लोक की सांस्कृतिक भाषा बनी हुई थी और यह भी पता चलता है कि धाही की कविता में जो भारतीय तथा बिबाई सेते हैं उनका उद्गम बजमापा की कविता से हुआ।

गीत

बीबापुर के सासक संगीत में बकि रहते थे। बिबाहीम भावितशाह (द्वितीय) हिन्दुस्तानी संपीत का बहुत प्रेमी था। संगीत के कारण बीबापुर बरजार में बजमापा की प्रच्छा स्थान मिल गया था। धाही ने बिन राग-रागिनियों में गीत लिखे हैं वे इस प्रकार हैं—

मूलना मूपासी सासावरी, नर बिहागरा देसी टीकी कैचारा काँपड़ा धारंग
भीपीकी मैरें सडाना बौड मलार, यमन रामकसी पूरणी पूरिया मलार, बिबाबन।

राग-रागिनी में स्वर और ताल पर ध्यान रखना पड़ता है। फसत काव्य-सौन्दर्य उस भाषा में बिबाई नहीं देता कितना काव्य के प्रम्य र्थों में देखने को मिलता है। धाही ने अपने पीठों में धन्य यमन करते समय बिरोध बकि से काम लिया है। न तो जनमें ध्याकरण का उत्कर्षन है न धर्मों की छोड़ मरोड़। बर्ष मैत्री पर पर्याप्त ध्यान रखा गया है।

'धाही की प्रतिमा बहुत सी है। यह छोटा सा संकलन उनकी प्रतिमा के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डालता है।

छन्द

हिन्दी के छन्दों के अतिरिक्त धाही झारखी के छन्दों पर पर्याप्त अधिकार रखता है। धाही ने अपनी प्रत्येक कविता नये छन्द में लिखी है। बकिष्नी के धारंगिक कवियों में धाही जैसे बहुत कम कवि हैं, जिनके छन्दों में बिबिसता नहीं है। एक प्रम्याहुत गार जिनके छन्दों में मुखरित हो रहा है। जिनके छन्दों की सम बिपय को स्वर्प ध्यस्त करती है। धाही ने कुछ प्रत्ययानुप्रास और वर्धसाम्य ऐसे भुने हैं जिनमें कविता लिखना प्राक् भी कठिन माना जाता है। कवि का एक कसीरा सफायास वर्धसाम्य पर है। इस प्रकार का वर्धसाम्य धरमस कठिन माना जाता है। कवि अपने छन्द-कौशल से स्वर्प परिचित है—

बैध्या हर मैत में कई सपड मू सनप्रत के नवस

सेप नाय का स्मरण कवि ने एक दूसरे स्थान पर भी किया है। उसके उच्चारण में अंगूर ऐसे रखीये हैं कि एक अंगूर फूटता है तो उसकी मिठास सेप नाय को भी भिंसती है—

सारे अंगूर की बेलाँ पे पक यूँ खोखे
मिठाई सेस कूँ धँपड़े पड़ गर भुईँ पे पिघल

पौराणिक बेशकामों और बटनामों का उपयोग भी शाही ने अपनी भाषा को सजाने में किया है। गोवम अथि ने इन्द्र को सहस्रसिमी (मन) होने का शाप दिया। तप के कारण इन्द्र सहस्रसिमी से सहस्राक्ष हो गये। कवि ने सहस्राक्ष इन्द्र और मन्वन्त रंभा का उपयोग अपने महान की शोभा को चित्रित करने में कितनी कुशलता से किया है—

यभी अरायण हुई महस में इंदर ने देखन नयन किया तन
रंभा से अंती हुसन में भाषी बँधी अपस तो बिरद अपारा

एक अन्य स्थान पर इन्द्र की सामर्थ्य से लाभ उठाया गया है—

इन्दर सँभार्या भारती तुज मुक्त सलौने के बवस
बंद-सूर दो दीपक दिसें आकास सो बासा हुआ

बहिष्कानी के बहुत से कविओं ने भारतीय उपवर्णों आख्यातों और काव्य-कविताओं का उपयोग किया है किन्तु 'शाही' की कविता में इन सब का जैसा समुचित प्रयोग हुआ है, वह अन्यत्र नहीं दिखाई देता।

भाषा

इस संकलन में झारखी के समाहित उत्तम शब्दों और समाहित शब्दों का प्रयोग हुआ है, किन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं है। वामिक भाषा को प्रकट करने के लिए ही इस प्रकार के शब्द आये हैं। समाहित शब्द इन्द्र समास और पठ्ठी उत्पुष्ट में ही आये हैं। जैसे हूरोपरी, राहरो सवन आहोमक्रसोस, कृतहोबद, बबरो-मसंग। कवि ने संस्कृत से ऐसे उत्तम शब्दों का प्रयोग भी किया है जो सामान्यतया बोसबास में नहीं आते जैसे बिनकर, चरक, पावक। झारखी के कुछ कुछ उत्तम शब्दों का प्रयोग भी हुआ है—सीजिबा मुनगर, इस्का मरू, अक्ररू, मुरस्ता, मुस्तबाब। संस्कृत के तत्सम और हिन्दी के ठेठ शब्दों की संख्या बहुत अधिक है। इन तत्सम शब्दों से बहिष्कानी के भाषा वैज्ञानिक विकास के समझने में सहायता मिलती है। मर्घा (मरिनी) बरम (बर्ष) सरन (सरण) कर्बन (कर्म) नाँव (नाम) करतार, सँसार सँज बोसी आदि।

ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत अधिक है जो बोस-बास की बहिष्कानी में। प्रयुक्त होते हैं किन्तु जिनका साहित्य में कम प्रयोग हुआ है। जैसे अझ अझूने, पूर क

मिपा समू समों में बड़बड़े जूझत खड़बड़े, पम्पर, भडकत बटा घतपत, सकसक, मोटाल बीबान प्रादि ।

हिन्दी के कुछ शब्दों का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में हुआ है। 'बुरी' शब्द का प्रयोग शाही ने कई स्थानों पर किया है किन्तु वह सौत या सपत्नी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मूहम्मद इब्नी क़ुतुबशाह ने भी इसी शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। इसी तरह मोम शब्द शाही की कविता में प्रेम का पर्यायवाची है। जैसे—'साईं करे मोम जब दूर होवे मेहन'। इस प्रकार के शब्दों पर यथा स्थान टिप्पणी लिखी गई है। दक्खिनी में लकार रकार में नहीं बरतता किन्तु शाही ने एक स्थान पर 'छम' के स्थान पर 'छर' का प्रयोग किया है। यह तब भाषा के प्रभाव को सूचित करता है।

हस्तलिखित प्रति के पढ़ने और छारसी छरवी के शब्दों के अर्थ निर्धारण में मुझे मेरे मित्र और मूलबर्मा कालेज के सहकर्मियों फारसी और उर्दू के प्राध्यापक श्री मुबारिजुद्दीन 'उज्जत' से बहुत सहायता मिली है। दक्खिनी ठेठ हिन्दी मराठी प्रादि शब्दों के अर्थ निर्धारण और उन पर टिप्पणी लिखने का काम पूर्णतया मैंने किया है अतः उसका शायित्त्व मुझ पर है।

मैं आगरा विश्वविद्यालय के क० अं० हिंदी विद्यापीठ का आभारी हूँ। विद्यापीठ के सम्बालक डाक्टर बिरबनाथ प्रसाद जी ने इस संकलन के प्रकाशन में आ सहायता की है उसके लिए मैं आभारी हूँ। श्री जयराजकुमार दास्वी जी ने प्रूफ देखने में आ सहायता की है उसके लिए मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

२५ मई १९५७
नवमैमिण्ट सिटी कालज
हैदराबाद

श्रीराम शर्मा

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

(अकल) का मकतब हुमा ऊहम के पढ़ने बवल
अकल मुअस्सिम अर्पे क़िस्सा सिखाया कुहम
अकल सबरदार है अकल हमाकार है
अकल का जासूस हो मुक पे अछे मू किरल
अकल से कूटे जिते नेम-धरम होर किते
अकल कूँ घीसाक का लेने पिन्हाये बरन
अकल कसौटी हुई सबा के कसने बदल
बूझ रक्या है सराफ़ क़त्लो सरा ज्यू क़ैशन

पढ़ने बदल—पढ़ने के लिए अर्पे—आप ही स्वयं। अछे—है कूटे=परीसा की
बाँधा। किते—कहाँ बू—यह, बरन—रंग कसने बदल—कसने के लिए, ज्यू—जिस
पछ। मकतब—पाठ्यात्म ऊहम—बुद्धि मुअस्सिम—अध्यापक विद्वान (इस्म)। कुहम—
पुराना हमाकार—सब काम करने वाला घीसाक—विधेयता तथा—स्वभाव, क़त्लो
करा—खोटा और करा।

बदल < बदले —स्वान पर बखिनी में 'बदल' सम्ब का प्रयोग बहुव्रीहि विभक्ति के
बिह्व स्वस्व होता है। अर्पे—आप + हों > अर्पे > अर्पे मुक < मुक नेम < नियम किते—
कुह > कित > किते बखिनी में सकर्मक क्रिया के मध्यम पुरुष में बहुवचन का रूप।
बरन < बर्ने रक्या—रखना आसन्नभूत तथा सामान्यभूत कृत। रक + रया रचिया >
रक्या। ज्यू—ज्यू > ज्यों।

क़ैशन < क़शन, पुरानी बखिनी में पूर्ण अनुस्वार का उच्चारण नहीं किया जाता।
अर्धानुस्वार का उच्चारण किया जाता है। जब पूर्णानुस्वार का उच्चारण होता है तो
'अ' का उच्चारण कहीं कहीं 'ओ' किया जाता है।

मुचना—हस्तलिखित प्रति में आरम्भ के तीन पृष्ठ नहीं हैं। पुस्तक बीजे पृष्ठ से
उपमध्य है।

अकम् का मोती मगर मग्न के समेत मित्र
 खूब दिखाने अकम् दुर खन दुरे अदन
 सब बे कीबाड़ी मगा पसक का परमा बंधा
 सीस नयन का छना अवन का यू है बतन
 तन के जिने में सदा हृदय अलावे अकम्
 रखत अकम् से दिसें सकल भंगूरे दसन
 भद करे ही अवन अकम् कूँ मते मिमा
 घर क हवासे हुई घर की बड़ी हा रसन

दुर=दो, अक=धीन दिखाने=दिखाने कीबाड़ी=किबाड़ (४० व०) छना=छना सकली=अक अवन=दीन दिसें=दिखाई देते हैं रसन=धीन । मग्न=पसिद्ध कबला=किबाड़ा दुरे अवन=अवन नामक स्थान का मोती, सब=सोठ, अवन=दगा, रखत=पसिद्ध घर=घार ।

मित्र<मीत्र, दुर=दो <दि >दिदु>दुर, अक=अक >अक >अक ।

दिखाने=दिखाना (दिखाना) दिखाना अ० अर्धवान बिबि मि० । दुरे अवन=दुरे-अ अवन ।

कीबाड़ी=कपाट > किबाड़ > कीबाड़ ४० व० । छना=छना > छना > छना । सकली=सकली ही > सकली ही > सकली । अकम्=अकम् > अकम् ।

दिसें=दिखाना (देखना) धारिम मूत्र और बिबि ४० व०, ५० ।

भद=भई > भई > भद । कू < कू < को ।

मूत्र बुरी गर जुदा, और हो रहता मूत्र
 अकम् की शिमवन मने अकम् अक राय उन
 याम त मारीबतर राह अक जा मुमम
 बाय न पुनत ह पग अकम् किया बी गमन
 अकम् का जिम पट मन पूर अकम् पटा
 हउ कूँ वही पा अवन राह मगाव मगन
 हा को हउपक की मूत्र मग ता हमन कूँ वही
 बार कहता है हवा बंद मुमन मूत्र मगन

मने—में धद्ये—रहे कुमल—कोमल, बाव—बायू धुजते—काँपते, बी—बही,
 पवन—गमन घट—घरीर हृदय । हममकू—हमको कता हूँ—कहता हूँ इता—इतना
 सर—सगर, यदि । जिसवत—एकान्त छिन्न—विस्था रायेकग—मंगणा देने वाला हूँ—
 ईस्वर, बंद—बोझ सुखन—मयम सुखबजन—मनोहर छन्द ।

मने—मध्ये > मने ते—से कुमल—कोमल > कुमल > कुमल बाव—बायू > बायू >
 बाव । धुजते हैं—धुजना (काँपना) व अम्य पु पुलित । बी—बही बूज < धुज, गवन—
 गमन > गवन, सगन—सग > सगन, बूज—बूझ > बूज । हममकू—हमको > हमम हमन+
 को—हमकू कता हूँ—कहता हूँ > कता हूँ, इत—इतना > इता > इत ।

छाक ने पुसने बना रूह से उन में भरा
 चाल जसा कर अजल आप सिखाया मगन
 धाव व धाविस मिला छाको हवा ते कजा
 चार अनासिर जगा देह सँवार्या हमन
 दीर फिरें जो तमाम सिजदा करें सुबहो धाम
 लेके सितायाँ सँगाठ बाद सुरज होर गगन
 नूर का अलकात वे हूरो परी सग सँवार
 सात तबक सरग ने पूर रक्खा जुस मिनन

उन—घरीर अजल—अजल पहले । मगन—मग्न तस्वीन आनन्द पूर्ण । ते—दे,
 सँवार्या—संवाया हमन—हमारा सुबहो धाम—सुबह (प्रात) व (दीर) धाम (संख्या) ।
 लेके—लेकर सितायाँ—मन्त्र सँगाठ—सात अलकात—अलक परी सग—परी तक
 सरग—स्वर्ग, छाक—मट्टी, रूह—आत्मा धाव—पानी धाविस—अग्नि छाको हवा—
 छाक (मट्टी) व (दीर) हवा । अनासिर—अनसर (तत्व) का व व० सिजदा—अभि
 वादन नूर—प्रकाश, हूरो परी—हूर (अप्सर) व (दीर) परी । तबक—स्तर, जुस
 मिनन—ईस्वर ।

चार अनासिर—भारतीय बार्हणिकों ने पाँच तत्व माने हैं, जबकि इस्लाम
 में आकाश को महामुख नहीं माना जाता । सात तबक सरग के—इस्लाम के अनुसार स्वर्ग
 के सात भिन्न-भिन्न स्तर । अजल < अजल मयन < मयन सँवार्या < सँवारिया संके—लेकर
 सितायाँ < सितायाँ (व० व०) सँगाठ < सँग गुरज < गुरज < मूय । बलिस्ती में धारंग
 के दीर्घ ऊँकार का ह्रस्व उकार बनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है । अलकात < अलक
 सरग < स्वर्ग रक्खा < रक्षित ।

सरग से धरसात पाड़ भूम सँवारे अपार
 गरम कूँ सीतल करे भूले भुला कर पवन

बहिस्त मूनव्वर बना साक किया सय साना
पाव व मानिक सिद्धा खूब सर्वार्थ सहन
झड़ झड़ले बना साया जमीं पर सटा
पाव के चले भखंड बाग के दिसते जमन
एक हुक्म ते हुए पाव के जसमे निछस
हाहरो सबन की नयी पूर बड मौजवन

पाड़ = हाडकर, मूम = मूमि कूँ = को पाव = हीरा, मानिक = माणिक
सटा = हाता जमन = स्थायी निछस = स्वच्छ पुर = बाड़ । बहिस्त = स्वय
मूनव्वर = प्रकाशमान (मूर - मूनव्वर) भाड = मिट्टी राख । सहन = धोहन,
साया = छाया घड़डा सबन = घड़ (घोर) दूध, मौजवन = तरंगित ।

हरम < स्वर्ग में = में (से) पगदान कारक की विमर्शित । पाड = पाडकर
पाडना = उखाड़ना मूम < मूमि मौजन < मौजस झड़ले < झड़ (पड़) + ला (हानिक) ।
मानिक धार के स्थान पर ऊडार । मटा-मटवा (मिरासा रखना कमाना) का मू० का० ।
दिसते = दिखना (दीखना) बतं व० व दिखाई देते हैं । निछस = नि + छस ।
नयी < गरिया, बड़े < बड़े ।

गौर सबन व बना स्थाम सलोने निपा
भाप सरफराज कर सबन दिबाया बरन
झड़-कर रात दिन भाप इबादत बडस
हृदक सगा कर सबन लाम स राख्या धमन
गाहो गहा कइ निपा जोक भूँ राख्या मिला
पम बयाबा पड़ा जग कूँ किया धंजुमन

निपा = उत्पन्न कर, मरुन = मरु बरन = रंज भाड कर = पेड़ घोर फल
भाप इबादत बन = भापकी मर्ति के लिए, धमन = पवित्र-निर्मल पेम = प्रेम बयाबा =
संयम मौज बयाई वा धीन । बन = गरीर सरफराज = हृत्पथ गाहो पना = बाग्माह घोर
ऊडोर, गाह (गामक) व (घोर) गहा (ऊडोर) । जोक = प्रमत्तता धंजुमन = प्रथा ।
मिला < निपकाया (निपकाया = उत्पन्न करना) ।

सकने = दक्षिणी में सकन का सर्व सम्पूर्ण होता है । गाही व इन पदों का प्रयोग
कई स्थानों पर किया है किन्तु उमरा क्त स्पष्ट नहीं है । वही सकनी घोर वही सकने
घोर कही सकना । बरन < बन पर < फल दक्षिणी में धम का तरह पजार के स्थान पर
'र' का प्रयोग निपकानुसार नहीं होता किन्तु 'गाही' में मकार के स्थान पर यहाँ 'र'कार
का प्रयोग किया है । बन = मरुपान कारक की विमर्शित । धमन < धमनिया (विपुल)
बयाबा < बयना (बटना) + भाव = बयाबा ।

साही' भाबिक इता बोस मुनाबास कुच
 साके करम तुज प हाय महरे हुसेनो हसन
 कार जहाँ के सकस फिक ते भारी भस्मे
 साई करे सोम जब दूर हो जावे मेहन
 भाहा भकसोस के कुबह ते महफूज घर
 साया करम का विसा जोइसू रस मूज बदल
 साई सचा है तुहीं सेवा तुजे है सही
 जिते जहाँ के साही रोज करें तुज सरन

कुच—कुच, भस्मे—रहे, साई—भाबिक, सरन—सरन ।

मुनाबास—हजरत मुहम्मद के उत्तराधिकारियों की प्रशंसा तथा स्तुति । करम—
 इवा महरे हुसेनो हसन—हुसेन और हसन के लिए । कार—काम मेहन—कुच, भाह
 भकसोस—भाह (हाय) व (धीर) भकसोस (पक्षात्ताप) । कुबह=बुराई, महफूज—
 सुरक्षित (हिफ्ज-महफूज) । साया—छाया धामय । जीक—मानन्द रोज—नित्य ।

'साही' कवि का काव्य-नाम (उल्लेख) । कवि ने बीत में 'महमद रप काव्य'
 नाम का प्रयोग किया है ।

हुसेन—हसन—हजरत भसी के पुत्र तथा हजरत मुहम्मद के शीहिब । हुसेन की मृत
 कर्बला के मैदान में हुई और हसन अपनी पत्नी के विश्वासघात के कारण मरे । सिय
 सम्प्रदाय के लोग इन दोनों को विशेष आदर से देवते हैं ।

इता < इता, कुच < कुच, तुज व < तुज पर, भस्मे—भस्मा (रहना, होना) क
 भाबिक सिय भन्म पुरुष । साई < स्वामी । सु—से करनकारक और अपादान कारक के
 विभक्ति । सचा < सत्य तुहीं < त्वमेव जिते < जितने । साही=साह (ब न)
 सरन < सरन ।

कसीबा' दर माते पगम्बर सलवातुल्लाहे भस्मेह

वेसो नीरोज भेचस यू बहारिस्ता दिखाया
 बरक बिन फल व फूला ने पवन के हस बिभाया है
 सरन की भीज की कुर्सी सैबाया बोस (?) हो दिनकर
 खन्दर सारे बूसाने दर बसन्त सारा बनाया है

बरक—बर्षा बोस—फूला पामना (?) दिनकर—सूर्य । बहारिस्ता—बसन्तीघान
 भीज—डंवाई, कुर्सी—सातवें आकाश पर ईश्वर का आसन ।

। कसीबा—प्रशंसारमक काव्य लिखने की छैसी जो किसी भी छन्द में लिखी जा
 सकती है ।

बैबल < बैबल बलिबली में ललक ललकों के साथ भी पूर्ण अनुस्वार का प्रयोग बहुत कम हुआ है । बरक < बरक < बरखा < बरपा < बर्पा । फुर्क < फूक (ब ब) । हल < हाल । सरक < स्वरक < स्वर्य । बन्दर < बण्ड ।

नाल = हजरत मुहम्मद की प्रार्थना में मिली गई कविता । लीरोक = ईरानी लीनों का एक वर्णोत्पन्न ।

सना ले हाँस घस डाला मुरया का बँध्या सेहरा
गगन हीरा हुआ चाँदरा सगन प्रपना गिनया है
हुका परदा बँस का कर सिताई का लणट तिस पर
मुवाता मुश्तरी होकर हुनद सूरज सगाया है
बराती सब बुनाया है छरक आना दिखाया है
जल किसकल सरापा कर मुरख लीमी हा बाया है
उदक बस बस भरे हँसी लहो है जानी मूमी पर
बन्दर का मुख दिखाने लहो मुरज बरखा भँगापा है

सना = हाता हाँस = हँसनी लगन = लगन मूरुय = मूरुय । बँस = पतंग लणट = विस्तर कर्ब हलर = हल्दी डरक = पानी बरखा = बारिशवाँ धारने ।

सेहरा = बर के मुख की मातर मुवाता = गुंमार करने वाली, माइन । मुश्तरी = कुहलति । छरक = बरपाव जरी = बरगार, बिगबन = देव सरपा = मरगिण गोली = बर, । हाँस < हँसनी (हँसनी = घस + नी) । बँस < बँस < बँस । बरखा = बारानी का ब ब ।

बैबल बन्दर के रदकों मूँ छिपाया पंख में धपन
सगाया भीर से मारी बैबल कूँ फिर तिगाया है
भजू सखन गजक काँस भँगाये जलन ब कागन
मुनी में यूँ भँवर तिसले मुयब प्याज भराया है
भरायाय भयब बूँ देन दिया लपरीक पानी की
भरर बारबल ब मन्दकी कर दग्गता लहो पिलाया है
बैबली जा छलीमी है यती मारुब नयेली है
मुनी की तिल सहेली कर गिला मजलिस में त्यागा है

बँक = बीबड़ बरू = बारी इस समय धारकी । बा मे = बहाँ के बू = इन लल
रिब बील बारी की = पानी की यती = हलनी । ररक = प्रविष्टताई दीप्यो । मरुब = बन्दन
लरक = लप्या की मानिमा बल = बलब, मूरक = बरगुरी धाराय = घोषा

बसम—समा लक्षरीऊ—नेस धवर—बादल मयक—मसक (बमके का वह बीजा जिससे मिस्ती पानी भरता है) ।

कैवल < कमल धनु < धन हूँ < धधापि । कौ < कहीं कारण < कारण मैवर < भमर < भमर । पानी < पान (ब ब) । गवकी—गवाक (ब ब) । बेंबेली < बमेसी । स्वाया है—से धाया है ।

वनपशाँ बास के दावे धरसी ले के नित बीठी
नजाकत देकते उसकी नयन नरगिस सिन्हाया है
पैसी छुशमतज हो स्थारे अपस में अप लगे गाने
मयूरी नाचते ठारें बदल बिरदग बजाया है
बेंबे पिम (?) जग पितम्बर से बसेठ के काज में मिलने
कबूतर बिरह तें कूके पपीहा घुम सुनाया है
मदन के बाम की फाँकी धखे केतुक गिरे बन में
असद कर बास में अपसे (?) मुजौंग के मन सुमाया है

बास—बंभ पैसी—पसी स्थारे—सब अपस में अप—अपने में आप । पिम—(?)
केतुक—किरती । वनपशाँ—एक वनस्पति प्रकृषी—कुलहल नरगिस—एक पुष्प जो नेस का
उपमान माना गया है । मदन के बाम—मदन बाम—एक पुष्प मदनमस्त । छुशमतज—प्रसन्न बुद्धि ।

बेकटे < बेकटे पैसी < पंसी < पसी । स्थारे < सारे अप < आप < आपनू ।

सरो माते छके मद के खड़ ब्रुसते जमन म्याने
भिनब बेजाँ कृमालाँ कर सुरक्षाँ दप रँधाया है
चपे के ग्हाड़ की खूबी दिसावे नयन में यूँ हो
मगर छजरे जमरँद का कौनन सूँ बार धाया है
सुंदर रेंती (?) जो आसी है सजन वाले की वासी है
धड़े मराजों खयासी कर पवन मराजों बड़ाया है
हरे पाठाँ मने डास्पी दितें नारज की मूख पूँ
छदन सुन्दर के जावन पर सबज वासा उड़ाया है

माते—मस्त लड़े—पूष्प म्याने—में धन्वर । कृमालाँ—कस्तोमें सुरक्षाँ—धराब
की सुराक्षियाँ दप—दप बासा—बास युवक । बाली—बासा युवती । पाठा—पछे
बासा—बूँछाँही कण्डा । सरो—एक वृक्ष जो अपनी लम्बाई और सीधे पन के कारण
प्रेमिका का उपमान माना जाता है । भिनब—भंगूर छजरे जमरँद—जमरँद (पन्ना) का
पेड़ बार—छम नारंज—नारंगी ।

माथा < मल, मुरह्यो < मुराह्यो पाछो < पाठ (न र) < पत्र । हास्या < हासिया
तकन < तदन मूज < मुज ।

अधर पर सा धरे रंगीं किया है साफ़ सासा जब
मुकाबिल रंग दिलान कूँ हिया गहिम भुराया है
गुमावो फूँ पर दावा सग्या करने समन सेती
मया मावो न कर दावा बड़ा सो नाबें पाया है
सो बोल्या बाग़ मापी मूँ बड़ा है नाबें सो निरुखा ?
जया सो इम्म धहमद का जिन हीं अप निपाया है
मुहम्मद शाहे मुरसिल का मोग्या जब नात कहने में
मिठाई पाके मन मेरा मू मजमूँ खुत के त्याया है

अधर = धोड़, हिया = हृदय, गहिम = अवसर, सेती = से लाया = बाता
निपाया = उत्पन्न किया, मिठाई = मकरता । रंगीं = रंगीन साफ़ = बड़ाई, सासा = एक
पुण्य ममन = जमैसी इम = नाम धहमद = हजरत मुहम्मद रीं = रीन धम । शाहे
मुर्शिद = रसूलों के बाग़दाद हजरत मुहम्मद । नात-हजरत मुहम्मद की प्रशंसा में
निची गई कविता । मजमूँ = मजमून विषय ।

मया < माविया < मयाया < निपाया < लाया खया < बड़ा । नाबें < नाबें लया ।
< नाम जिन < जिन्होंने निपाया < निपयाया मोग्या < मोगिया ।

मुहम्मद सा नहीं पैदा किया करतार तिरजग में
कसी ने इक से सौमार तिरजम का मरया है
गरोमत होर हज़ीकत का इनायत सब किया सार
बड़ा रतबा दे धालम में करम अपना जनाया है
गरोमत का है मिस्तार तूँ हज़ीकत का है मजहर तूँ
तेरे बिन ज़ा ज़ियेरा यह गुमरह ज़न लखाया है
मफ़ा सीना किया तेरा अपस के राख रखन में
इनमग़नी मुलमजहमी यज़त तें तुज सिगाया है

तिरजग = तीन लोक जगता है = प्रकट किया है । इक = प्रथम सरीयन = इस्लामी
धर्मधारन इनायत = प्रदान इनाया = प्रभाव व । सातम = संगार, मिस्तार = रेखांकित
कागज़ जिसे नीचे राख कर निचने के बाजन पर रेखा खींची जाती है । हज़ीकत
= बालनबिनता मजहर = वेग, राह = मार्ग गुमरह = गुमराह पथभ्रष्ट । मफ़ा = निर्मल,
नीरा = तानी घड = रक्षा इनामग़नी = विजिता मुलमजहमी = बाक बनना । यज़त
= शरण ।

धनी आदिन शाह का काव्य-संग्रह

विराज < विजय, सौंदर्य < संसार, शक्तिनी में उत्तम चमकों के पूर्ण अनुस्वार का उच्चारण भट्ठाभुस्वार होता है। कभी-कभी अनुस्वार युक्त अकार का उच्चारण ह्रस्व ओकार के रूप में होता है। गुमरा < गुम + राह। तुज < तुझ।

तवत्सुव कर से धाया तुज जगत के अजुमन म्यान
 उसी पल ताज होर तोहफा रिसालत का पठाया है
 हुमा है मौजिजा ऐसा तेरे खुश इस्म का जग में
 मुबारक नाँवें तू तेरे मुया कू फिर बिताया है
 मुतह्हर बिस्म है धामा मुनब्वर इस्म है सारा
 बड़ाई जब दिसाया तू गगन न सिर नवाया है
 निपाया रब मुहम्मद जब बिता पाया कुफ़र का तब
 तड़क जा 'ताऊ किसरा' सब भगत सारी बुझाया है

पठाया = भेजा मुया = मुठ नवाया = भुझाया निपाया = उत्पन्न किया बिता =
 बिताया पाया = नीचे तड़क जा = बरक पया। तवत्सुव = श्रम ताज = मुकुट,
 तोहफा = गैट, रिसालत = रसूल का पद (रसूल ईश्वर का सम्बोधन बाहक = रिसालत)
 मौजिजा = जमाकर, इस्म = नाम मुबारक = सुम मुतह्हर = पवित्र धामा = श्रेष्ठ,
 मुनब्वर = दीप्तियुक्त रब = ईश्वर, कुफ़र = ईश्वर की एकता को धत्तीकर करना
 ताऊ किसरा = बयबाद के निकट एक महल जो हजरत मुहम्मद के जन्म लेने के दिन
 पर हिल उठा था। होर = और।

पठाया = पठाया सा नू अन्व पु० ए० व । नाँवें < नाम मुया < मुया < मुठ
 निपाया < निपाया = उपजाया बिता = बिताया बिताकता सा० नू अ० पु० ए० व ।
 पाया < पाव भयत < भयति।

जगत के सिर उपर साया गगन का रोखे महफार लग
 तेरी नासेन का साया गगन (के) सीस छाया है
 अनन्द की बात थी सानी मुहम्मद, रास की प्यारी
 पिरत का सर्त करने तई पियारा घर बुसाया है
 बल्मा तू रब तू जा मिसने जमीं तय हुई तेरी भसने
 हुमा मेराज एक पल में भरत पर तुज लिजाया है
 तेरा किरदोस में घर है सदा तू कुफ़र पर वर है
 तेरे तई रु फिराया जिन उसे हक ने जसाया है

सम—तक तेरे छई—कुम्हार के प्रति क—आत्मा धाया—छाया, धामयः । रोने
मह्वर—प्रलय का दिन आनेम—नाम जपतः । किरवोत—स्वर्ग कर—प्रभावपूर्णः ।

मेराज—हजरत मुहम्मद रईसर का साक्षात्कार करने के लिए साठवें आकाश
पर देवदूत क धाम बन थे । इस घंटे को 'मेराज' कहते हैं । इस्लाम में इस मेराज का
बहुत महत्व है ।

कर < कर, प्रपद < प्रपद, किरत < किरत विरात < विरात सिखाया = मे आया ।

१ करिस्थी का न था कर तदा या मूर सो तेरा
तेरे प्रहकाम मह्वर सम जगत क सिर बड़ाया है
बड़ा तुज दीन का कस है दुज दो सब हुए पस है
तेरी अंगुष्ठ के कस तें बंदर दो नई कराया है
जहाँ के सफ में दिससा तू खेदर सार्या में अमक जू
जिते बूज जो भूक ये सो वो पुत्र सब तू चुकाया है
अमकली है पिछानी जा नुबुवत की निछानी वा
दुनिया होर बीन बानी हो हुकुम जग में बसाया है

करा—करकर, ली—तब, बही । कर—सिर, सारः प्रहकाम—आदेश
(हजरत-प्रहकाम) । मह्वर—प्रलय-दिन सम—समान प्रपद—उपलब्ध, दीन—पर्व
छक—कंसि ।

पतिषी कू पत दिगाया जब सत्या कू सब सिखाया तब
धुतां लोडया हयां जैसी नचां जैसा मुखाया है
जतिषी में तू ब स्माना है नही फिर तुज सा घाना है
तेरे ते दीन पाना है समज मूज यू मुभाया है
अम से हात छाया है इसम जग कू सिखाया है
गया मो राब स्मान तदे मुरिज कू फिर मंगाया है
रिसामत का तू सरमाया हुकुम हक बा तू ही पाया
समू ते सीज बत कर मिरज जंगम त स्माया है

१ जिस समय हजरत मुहम्मद ने रईसर का साक्षात्कार किया था, देवदूत भी
अतिथित नहीं थे । देवदूत स्वर्ग में एक विशिष्ट स्थान तक ही जा सरगा है ।

२ हजरत मुहम्मद ने शर्बना की गई कि वे कोई अवतार दिखाएँ हजरत मुहम्मद
ने अपनी पंखों बड़ाई और आँद के दो टुकड़े कर दिये ।

पठियाँ—पठि (ब ब), पठ—प्रतिष्ठा सत्ता—सती स्त्री (ब ब)। वठियाँ—वठि सम्पासी, (ब ब)। तु ब—तू ही स्वामी—चतुर, घाना—बुद्धि, बीन—बर्ष यू—इस तरह, इलम—ज्ञान गया सों—जो बीत गया स्वामे सहे—सामे के लिए, समू—प्राप्त। बूत—मूर्ति, घरन—स्वाम्य, रोब—बिन घरमावा—पूँजी।

पठियाँ < पठि (ब० ब०) सत्ता—सठियाँ, बूता—बूत (ब० ब०) हत्ता < हाठियाँ < हाठियाँ < हस्ती (ब० ब)। मद्याँ < मठियाँ बीत्याँ < बहूठियाँ < बहूठी (विद्यमान ब० ब) वठियाँ < वठियाँ < वठि (ब ब०)। तु < त्वम्, यू < इत्थम्। इलम < इलम स्वामे < मे घाने रिवाकत—रसुम (ईश्वरीय सन्देशवाहक) का भाववाचक, समू < समूह मिरब < मृग स्वामा < जाया, ब—ही, मराठी में ब का उपयोग ही के अर्थ में प्राचा है और बकिनी ने इस अर्थ को इसी अर्थ में ग्रहण किया है।

दिस्या जो नूर का झलका जम्बूत तुब सम पढ़्या हलका
सुरिब ने कान भा हल्का बँदिया में अप निहाया है
पठियाँ सठ-मठ के छोड़ता ये वठियाँ के पड़े बँटे (?)

हुए ठाने गई बाँचे जिते हरबे बुझाया है
घनू जो पोर में अगला घना पौसाव बाजू का
मुकामिल जब हुआ है तुब गरम अपना गँवाया है
जिते मगरिक सँ मगरिक लग बड़ाई रोब अफ़्तू हो
मुबूवत के सदर ऊपर समों में तू सुझाया है

दिस्या—दिखाई दिया झलका—जमक तुब सम—तुम्हारे सामने भा—बातकर, बँदियाँ—बन्दी (ब० ब०) गई—वे ही बाँचे—बचे घना—बा, लग—लक समों में—सब में। नूर—प्रकाश हल्का—कान की बाली, घनू—घनु, बाजू—भुजा मगरिक—पूर्व मगरिक—पश्चिम अफ़्तू—अधिक मुबूवत—नशी का पर ईश्वर का सन्देश वाहक सबर—अप्यस, अप्यस के बैठने की जगह।

मुलामी के बिहू स्वरूप घरन से कान में बड़ी बाली पहनाई जाती थी।

दिस्या—दिसता है < दिसिया है < दिस्या है, पढ़्या—पढ़ा < पठिया बमियाँ—बन्धी (ब ब)। अप < आप।

किया काबा^१ फ़तह जिस दिन हुए हैरा परी होर जिन
हुमा यू मुतशिकन वायम खमीसुस्ला का जाया है

१ मक्का शरीफ़ का एक स्थान जहाँ हज करने वाले यात्री प्रशिक्षण करते हैं।

निक्या है नात^१ यू सारा तवा मुक्त रोगनी पान
रसन बू^२ काँ अछ ताकत तुहीं हक का सयाया है
मजामी के भर्मा भोती चतुरपन के से सब सेती
कसीदया में मूरम्मा कर कसीदा यू बनाया है
सुमारे इष्ट का निस दिन दैमा दिल में धया 'चाही'
बरन तस सीस सा धपना दुमा मगन को धाया है

बाया=वैश किया हुआ बेटा। रसन=जीम भराया=प्रसवित बाब=उल्लाह,
सेती=से धाया=दोहा दिन=मूर्तों के समान अक्षर प्राची जी मानव जाति को
कष्ट न देकर कई बार सहायक सिद्ध होते हैं। चतुरिजन=पूँति चक्र कायम=गा-वत
स्वामी। तवा=अन्त-करण स्वभाव। मजामी=विषय मूरम्मा=वर्तित।

हेरु<हेरुन होर=घोर निर्या<निखिया रसन<रसना काँ<कहीं तुहीं<
तुम ही सयाया है<सयहिया है=सयहा। बैबा<बसा बर्मा<वरिया=बरा बर्मा<
वरिया=भरा सब<बाब।

हजरत अमीर को प्रणाम

कसीदा दर मन्त्रवत हजरते अमादन मामिनीन अमी अल हिस्मनाम

घा रे ब्यास, भुज बू^३ व्यासा पिता मया का
ता मस्त हाब दम्^४ मुबडा अमीर^५ पिया का
पिब जीव का गुमाई पिब मू^६ पिरत सगाएँ
पीना गगाब पिब मिल पान भरत पिय का
पिब मंग बाज बग्न दग मगुन अपन में
माँबा हुमा बबन ×क×बा हिरदै के जंसियाँ का
जावन फड़क बत है पिय मस्त हो मिमंग
आसिंग बस्त रूँ अब बँद गाल अंगिया का

करान=मुष्ट विज्ञेय मया=प्रम मुकडा=घाईनि गुमाई=स्वामी घरन=
बननव आसिया=जोगी व० व०। जोवन=म्यन आनिय=आनियन बँद=बद,
अँदिया=अँदी गा=जिमये।

रियाका<व्याना मया<माया मुडा=मगडा<मुग+डा गुमाई<गोस्वामी
पिरत<प्रीति घरत<घर, पिया<प्रिय पिय<प्रिय बाज<बाज सयुन<सुनुन

१ हजरत महम्मद की प्रणाम में लिखा गई बरिदा।

२ हजरत अमीर हजरत अहमद क दाया घोर अतिमा क पनि ये।

सीसा < सख < सत्य । हिररई < हिररय < हृदय । जोसी < ज्योतिषी, जोदन < जीवन क
हैं < कहते हैं । भौनिया < भौगिया < भन + द्या ।

बदल = बहिष्कृती में 'मदल' शब्द का सर्व सवर्ग सत्त्वानीय और परिवर्तन होता
इसका प्रयोग बहुव्रीहि विभक्ति में भी किया जाता है ।

भुज देख पीव छतियाँ सुन भस्त मद की बहियाँ
जावे सदा जिया छिज हसरत सूँ तूतिया का
सन के भवन पुरिन में पिय की फिरा दुराई
साग्या है मोत मीठा वो डोल मद पिया का
हँस चास से पिया ने घाते सटकते देखे
परदा नयन के म्याने राखूँ न तूतिया का
पिय सात रास जानूँ प्यासा पिया सूँ माँगूँ
प्यासा सदा बही है पिय हात के दिया का

छतियाँ = स्तन छिज = झीज विगड़ित झीजना = उत्तरोत्तर ह्रास होना बटना
तूतिया = सीठ, पुरिन = पुरी नवरी (ब ब) । दुराई = बढाई, दुहाई । डोल = चा
हँस = हँस म्याने = में, सदा = सच्चा तूतिया = सुरमा । छतियाँ = छाती (ब ब) बहियाँ =
बात + द्याँ छिज < झीज (झीजना) । पुरिन < पुरी (ब ब) दुराई < दुरा (विमुमु) ब
व्यक्ति (प्रतिष्ठित व्यक्ति) + घाई । साग्या < भगिया < भग्या । हँस < हँस राखूँ < रखूँ
सात < साव दिया का < दिये हुए का ।

तूतिया = बहिष्कृती के कई कवियों विशेष कर दाही ने अपनी कविता में सर्व
'तूतिया' शब्द का प्रयोग तूती के धर्मे में न करके सीठ के धर्मे में किया है ।

बाजे धराव प्यासे बेबैफ हो रहे हैं
प्यासा पिया दिया सो आराम है जिया का
पिय जीव भुज चुराया तन नेह ला मराया
क्या बस्फ भव कहँ मैं उस भस्त मोहिया का
मय पूर कर पियाला पिय सेज में पिलावे
सज्जेगी मन भूला कर उस सूर भोगिया का
प्याने धराव के मूँ दिसते नयन में सारे
कंपन का रम किया है उस्ताव कीमिया का

जिया = प्राण मन जी । भुज चुराया = भेरा चुराया मोहिया = मुग्ध करने वाला
मोहने वाला । पूर कर = भर कर, मूर = बीर, भोगिया = भोगी भोग करने वाला,

अभी धारिण चाह का काव्य-संघ

विपत्ते—विचारों से । बाड़े—कुछ, बेकंठ—बनगा कोमिया—रसायन रस-
मयिक क्रियाओं द्वारा सोना बनाने की विद्या ।
जिया < जी < जीव । मोहिया < माही पुर < पूरा < पूर्ण भोगिया < भोगी विद्या
दिया सो—विद्या ने दिया है वह दिवत—मराठी की दिवश क्रिया का वर्तमान
काल धर्म्य पु ब ब ।

प्याय क स उलासाँ ज्यने हरन उद्यात्पाँ
दिवसा नवल तमाच तासीरे सीमिया का
नह के धराव खँ हुई पिव के मदन की माती
छाडी हू माज कुल की क्या काम रू रिया का
गह हात का पियासा गर कोइ नहर सूँ देख
होवे को मय्य पल में दघा सट हया का
गोमा धराव का यूँ दिसठा है मुख रँग में
गाया धाऊ के प्याय खुरघोद है जिया का

उलासाँ—उलाय (उलाह, जोग) ब ब. हरन—भुग खें—छ माती—मस्त,
सट—डाल दे, छाडीरे सीमिया—परकाय प्रवेष्टकी विद्या करिया—कुबिया सपना घाया-
पीया हया—मगना मुय्य—माय धाऊ—उपा धीर सग्या की सग्या, थुरखीर—
मुय्य जिया—प्रकाय ।

सटना (बंजारी)—छोड़ना डालना रग देना पटकना । उलासाँ < उलास ब ब ।
उद्यात्पाँ < उद्यानियाँ नह < लह, माती < मात्रा < भी तिय दया < धंदा

जब सब त सब मिया कर म पूव साठ पिई 'म'
जावन हुमाय हा मुज नाता हुमा हिया का
होवे छुमार मुज पठ ठव हट को सट मिसूगी
निम दिन बनेगी मुमरन स नाबें पमिया का
क्या म को बउं बडाई म मज जब बडाई
कनी धाय जिगाव ज्यू ह्यम हीमिया का
जा पीव मुज बुमा का प्यामा पिरम मिसावे
मे मय्य हा जिगाऊँ बिज पाव तिन मिया का

मे—मे तिर—भी जावन—वीरन बट—हय निबर । हट—जिद सट—छोड़
कर, बेजना—बेसो, कैरी—द्वितीय विप विना—मन मने बाया, पब—घोठ छपार—

—नशा मरज—मरिचक, इरम हीमिया—मूत बिषा घीर ग्रहों को मधीन करने की बिषा ।

सात < साब पिई < पीई—पी हुई हुआस < बस्तास हट < हठ, सुमरन < स्मरण
नाई < नाई < नाम । पेमिया < प्रेमिया < प्रेमी । कर्ई < कर्हू केसी < कठि, पिरम < प्रेम ।

पिव मस्त मद बनावे जो कठ मुज लगावे
अद्रित अघर पिमावे होवे कसप क्या का
पिव प्यार के जुगल कर जब रस-मरस किया मुज
छुसबू सगी मराज में कस्तूर मिरगिया का
भदया है मव बदन में पिव सात रहे अनख से
आशिङ हो में पिया की परवाना ज्यू दिया का
प्यासे की भाँत कहते होय मस्त मुज रसन सब
मँगता हुस्मार होने से नाँवें एसिया का

बकावे—बकाता है कसप क्या का—कायाकल्प कस्तूर मिरपिया का—मुज
की कस्तूरी दिया—दीपक भाँत—प्रकार, रसन—बीज एसिया—हबल्ल घसी का
बिरब । आशिङ—प्रेमी ।

पिव < प्रिय बकाना < बकाना मुज लगावे < मुझे लगावे अंबुठ < अमृत
कसन < कल्प क्या < काया जुपत < युक्ति परस < स्पर्श मिरगिया < मूज + इमा भाँत
< भाँति रसन < रसना नाँवें < नाम हुस्मार < होशियार (होश) ।

छाहे नबक बली है तिस नाँवें सा घसी है
वो राजवान अहमद मुसतान ओलिया का
जिस जात में मुहम्मद गर ना अछे घसी की
हैरौ सदा फिरे वो ज्यू संग आसिया का
तुज छह जवान भगे मरासूख है अयू सब
तू खेर है अजस ये मौसूक अंबिया का
तुज तेग की अस्तक ये बिजली छपे गगन में
शमशीरखन तुही है सरदार अस्क्रिया का

तिस—उस (उसका) ना अछे—न रहे खरे—घप्ट हूए । छाहे नबक—हजर
घसी नबक नामक स्थान पर हजरत शमी बकनाये गये थे । बली—पहुँचवाता छिट । राजवा
—रहस्य रखने वाला अहमद—हबल्ल मुहम्मद ओलिया—साबू, सल । रस आसिया—
बकरी का परवर । मयसूब—परजित, प्रभावित । अयू—अनु, अजस—मुवापि मौसूक—

भली धारित शाह का काम्य-संग्रह

प्रशंसित । अरिया—मृत (नवी) धमपीरजन—उत्तमर जमान बाता अरिया—पवित्र
 धारपी अमी—हृदय महम्मद के जामाता और कृष्ण समय परवान् उनके उत्तराधिकारी एक
 धनीका दिया लोग इन्हें बहुत महम्मद रीत ह ।

अब हात तें उपाया कह सक सका भोगाया

रागिया का

धे कतार

देखा का

विमर जा

पेड़िया का

रान सारे

भूमिया का

हृदय सोंहार—बाग धीमान—

—होट हन्दा—घनु दीन—बर्न

7—तनवार, घनु—घनु ।

६ कह< कति सोंहार< घंहाद
 राय< घय< राया भूमिया<

एक में घ का तें धारित होने के

वा दिया है

रागिया^१ का

३ धम्म य

रीमिया का

१ में महज है

दो सौ छद्म बराबर धम्मारा^२ क किया का
 तुल्य काय की मज्जर मू धम्म हा रखा प्रमथ सुख
 पोता हुमा तर्न में रंग न्य भूमिया का

१ जरी (मिशन के) स्थान पर ग्रीक भी पढ़ा जा सकता है ।

२ कपडिया के स्थान पर कपडिया भी पढ़ा जा सकता है ।

३ धम्मारा के दिया का—धम्मपीर द्वारा दिये हुए ।

छिन्ना—छीना हुआ छीन। दिसा है—दिखाई दिया है। भाम—बमबड़ सकना—सम्पूर्ण मछे—रहे, तबीयें—तब से सुरिया—सूरज सुभात—बहुसुखी, करसिया—सेमापति, प्रदासत—म्याय हक—ईश्वर, भजस—भुगादि भजस—ध्वजा तकसीर—परिणाम बावू। रीमिया—अवृष्ट दर्शन की विद्या मीनान—तराज सिफ़त—विशेषता समसीर—तनवार, जम—झुका हुआ प्रसक्त—पाकाया।

छिन्ना—छीनना (ह्रास होना) भूतकाल ए व० पु०। दिसा—दिसने (म०) (दिखाई देना) मू० का ए० व० सोझा—तोड़िया, सुरिया—सूर्य।

पूरे बँधा क़वामद जेते इसम जहाँ के
तूँ रहनुमाँ सचा है उस्ताद अतकिया का
कीता है बालपन में कह बुव तूँ लख तमाशे
सर ज़रम-ए-करामत तूँ पीर अतकिया का
उस्ताद मुस्तफ़ा हो सारा इसम विया तुम
ह्याया बणा हुकुम सब तूँ सँह किमिया का
तुज जात में सत्तावत बुनियाद है भजस यें
तेरे विये तूँ होवे मन सेर लोभिया का

कीता है—किया है बुध—बुद्धि सँह—साथीक लोभिया—लालची। क़वामद—क़ाबज़ा (नियम) व व। जहाँ—जहाँ, रहनुमाँ—मार्गदर्शक अतकिया—परखेजगार लोग बमरिमा सोप। सर ज़रम-ए-करामत—बमल्लार का उद्भवस्थल। अतकिया—पवित्र लोभ मुस्तफ़ा—हज़रत मुहम्मद हुजम बजा माया—धावेष पूज कर सामे किमिया—ईश्वर (कबीर)। जात—अनित्य सत्तावत—दानवीलता भजस—भुगादि, सेर—वृष्ट

इसम—इसम सचा—सच्चा कीता है—करना बावु का आसन्नभूत का पंचाशी क्य बुर—बुध—बुद्धि। तू—त्वम्, सँह—स्वामी लोभिया—लोभी।

ठाका बदल इबावत कीता है तब सत्तावत
मक्क़ूस कर लिया है करतार अतनिया का
तुज हात के असर का कस है परस से भगला
कचन सरीर होव तुज हात के छिया का
रीजन हुमा है वो घट जिस घट नज़र करे तूँ
सरताज है सदा तूँ कुध्वार अतकिया का
जिस सीस पर अली का सामा भगर होवे कुज
वा घेर हो सिने में परवा सटे भया का

ठाढ़ा—ढाढ़ा करतार—ईश्वर, कस—सक्ति सम्ब। परस—पारस (पत्थर),
ममसा—ममिक, दिया का—छीने के कारण बट—हृष्य चातिक—चाठक मया—डर।
इबादत—प्रार्थना सच्चावत—धानसीसता, उबारता। मकबूम—स्वीकृत (कबूम)
मइनिया—मनी भोग सरलाब—शिरोमणि भेद्यतम। कुम्हार—महान् (कबीर)।
मउकिया—पवित्र भोग, धमरिया।

कीठा है—करना किया का पंजाबी में सासभ भूत, करतार—(कतू, संस्कृत
४० व०) कर्त्ता, हाव—हस्त परस—स्पर्श सरीर—घरीर, तुज—तुझ, कुछ—कुछ
मया—मय, मिना—सीता (छाती) परवा—परवाह।

ठाढ़ा के स्थान पर कोई दूसरा पाठ भी हो सकता है। तुम्ह हाव—‘तेरा’ के
स्थान पर बूटी बिमक्ति में भी तुम का प्रयोग। दिया का—दिए (स्पर्श किये)
हुए का।

चातिक हुमा है मुज दिन कहता है पीव पिव कर
सेवक हुमा हूँ दायम तूँ साईं मुज बिया का
तुज बात में करमत दिसता है मुज मबद सग
है तुज मता मबन ये ज काम बेरिया का
तुज सूर नर के भागं सूरिज दिसे ठसे का
तूँ सूर कस दिपक है माठा पिता मया का
मगहूर है जगत में मुदिकसकुचा धमी है
मुदिकस अगर दिसे कुछ से नाईं सामिया का

साईं—स्वामी बिया—जीव करमत—करमात, बयत्कार। तय—तक मूर—
बहादुर, ठसे का—ठप्पे का मया—भागा, सामिया—स्वामी दायम—स्वामी धारित।
मबद—धनम मता—प्रदान मबन—मनादि बेरिया—निराईबर, मुदिकस कुचा—
बटियाइयों को दूर करने वाला।

चातिक—चाठक नाईं—स्वामी बिया—जीव करमत—करमात जे—जन्
पु० कर्त्ता ४० व० ‘ये ठाढ़ा—रस्सा, मया—माया—भागा, नाईं—नाम सामिया—
नामी—स्वामी।

मुज निज मुज बिया मुज बात मुज मूरनर—पट्टी में उल्लस पुस्य तथा मध्यम
पुरन बापी मबनाम का “मुज” धीर तुम बन। कहता है पीव पिव कर—रस्मिनी
का बहु प्रयुक्त प्रयोग, ‘कर’ का प्रयोग पूर्वकामिक रूप में। है तुज मता—तुज का
बनुपी में प्रयोग।

तूँ चाह पुरहुनर है जेते इमम में बर है
निम दिन मछ मयां तुज मसरार परसिया का

‘साही हुमा है आशिक सुन नौवें मुसजा का
साया उसी च का है तिस सीस पर दया का

बेते—बितने बरतिया—पूथी उसी च का—उसका ही तिस—उस, पुर हुगर—
कार्य कुशल दया—प्रकट असरार—मेव (धिर-ब० व०) । मुसजा—हजरत शही ।

बेते<बितने तिस<तिसा बरतिया<बरती तिस<तस (पु पष्ठी
रक व०) । सीस<सीस ।

उसी च का—उस + ही + च (मराठी ‘च’ ही’ अर्थ का बोधक सम्बन्ध) ।

कसीदा० दर मन्कबते दोआजदह

इमाम

अलेहिमुस्सलाम

मुज दिल केरे मैदान पर अब इस्क के कौमी चढ़े
तब होस के रावत जिते मुक मोड़ हो बेखुद पड़े
जो इस्क के सुलतान का फरमान घट में आइया
इताल हो पुनर्त्पायी यू दो किदमत बरस तिस दिन सड़े
नाबिह हुमा सुसलान यू अब खुद किया हीरान हो
अब इस्क के परधान मिल बुद सात सऊ बर सऊ सड़े
सीना मगर जुस्मात है दिस आप तिस में पाब है
दिसते निशान्या इस्क के जैके सिफन्दर^१ य बड़े

रावत—सवार, वीर । जिते—बितने बट—हूय इताल—उत्थान पुनर्त्पायी—
उने बुद—बुद्धि, परधान—मुखिया पाब—पंचरतन इस्क—मेव बेखुद—मूर्च्छित सुलतान
—आप्तक फरमान—आदेश किदमत—सवा नाबिह—आत्मन्, सऊ बरसऊ—पलित
इ सीना—अम्मी जुस्मात—मन्त्रकार ।

आइया<आया पुनर्त्पायी<पुनर्त्पा व० व बुद<बुद्धि परधान<प्रधान,
त<साब निशान्या<निशानिया ।

केरा—पष्ठी कारक के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द जो वाक्य में ‘के’ विभक्ति
रूप धारण करता है ।

गुल का बदन जिससे हुमा गुल होर और तिस कर जिया
हर के बदन में हो आप जैसे कुँदन पर गग बड़े

१ ईश्वर द्वारा रचित बारह इमारतों की प्रशंसा में लिखी गई कविता ।

२ सिफन्दर महान ।

गर मुसहवस खोवे जनम पा ना सने तिसका मरम
मुदिकस घदा है इरु की जान वो ही जिस सर पड़े
जिस इरु का सरताज है हर राखतिस पर बाज है
सज्ज भँवर हो निठ फिरे असमान गरबे गड़गड़े
जा तथा में घीरीं अछ तिस पर खतर होय इरु का
मागूक की निठ याद में ज्यूं मीन जल बिन ठड़पड़

वित ते—विखते होर—घोर, और—भीष तिस कर—उसका धरै—प्राय
हुँव—घोना मरम—रहस्य पड़े—घटित होती है, तिस पर—उस पर, असमान—
आकास पड़पड़े—पड़पड़ाहट करे, मूल—मूल बहन—गरीब, हर—प्रत्येक घर—बहि
मुसहवस—भूटी सामसा बाना सर—विर, सरताज—मुकुट, बाज—प्रकट स्पष्ट। गरबे—
मघनि तथा—स्वभाव घीरीं—मधुर, पतर—पत्ररा धार्यका। मागूक—प्रमिका।
और—अनर, धरै—घाय ही कृपन—कुंदन मरम—अर्थ पड़े—पटना किया का
मूलकानिक कय भँवर—अनर, नित्र—नित्य।
कर—सम्बन्ध कारक में प्रयुक्त होने वाला चार जो 'का' विभक्ति के रूप में
परिवर्तित हुआ।

जो इरु की मुरत मिथ्या सीना सज्जीना साक कर
उसकी कमरारी धँगे नकचाय जग के गिर पड़े
मन इरु में पावक हुआ दिन की धँगठी पुर कर
ता बिहू के अपराध ते घाय सिन में पड़ पड़े
मागूक की दूरी बन्ध बस ह वो विखते इरु में
नेह रुन दिससा कर घबल मुरझन की गत माधिर पड़े
माधिर पड़े साबित कदम मागूक की जब राह में
हिरने में तब सागे निठा मागूक गरब लड़ पड़े

पावक—धमि धँगी—धँगीली तो बिहू—तेरे बिहू, पड़पड़े—पड़पड़ाया
है, बस—बग बिगड़े—उलझे मुलाना—मुरझाना पड़े—घटित होता है, मुरत—आवृत्ति
सीना—छाती सज्जीना—आक जगमगारी—बिजगारी नकचाय—बिजगार (नका)
घोना—अंधारा साबित कदम—दृढ़ पन आधिक—अधिका मागूक—प्रमिका गरबे—
मघनि।
मिथ्या—निर्मिता धँगे—अपे पुर—पूर्व ता—तब अपराध—अपराध बग—
बग पत्र—अति हिरने—हृदन मिग—मीन।
बिरहा डमन के दूँ में बिपाकूम पड़ी नित्र जद यूँ
बाग हो गुट जा बन ते ज्यूँ पाउ पीसा हो—

अपना उपर तम पाँव के एक पिर नहीं रखते कहीं
अस्पन्द हो आशिक वेह सब जिरही भगन बक तड़के
गर इक के पंजा मने धा बूझली सलभे कहीं
ना खाल सक इस गिरह कूँ यत्ताव हो अक्सर भडे
गर कोह नजर कर इष्ट की धर्म में देखेगा मयम
साया दिसे भाजू का यूँ सलतान मोती यूँ सहे

इसन के—इसने के बें—उँ बेंकत—निष्कृत दिनस । पात—पता अपना=पुष्पी,
कहीं=कभी तड़के—तड़के की अति के साथ भुगना, धाजू=धातू । बड़े=पीला अस्पन्द=
नजर उतारने के लिए प्रयुक्त होने वाला रॉई के समान काला वाला पंजा—पंजा (ब ब)
मिरह=गाँठ, बेताब=बेचैन, साया=छाया सलतान=सोटाटा हुमा ।

इसन < इंसन बिपाकुल < ब्याकुल नित < निरव पात < पता कहीं < कहीं,
भगन < भगि ।

बूझली=भूझली सीमा एक प्रसिद्ध मुस्लिम वार्षिक ।

है हुस्न के बाजार में खुम्मार खुम्मार होइ के
मव इष्ट पी मनमस्त हो आशिक हमेशा गबगड़
सोंसार के दरयाव में शम्वास हो मक ध्यान यूँ
आशिक सवा मारे उड़ी तो हात कुच मोती बड़े
हर मक सगावे इष्ट कई मुज इष्ट है उस साह का
जिसके खड़ग का नाई सुन कुपकार बग के हड़बड़े
जिस धेर के रहस्य धीरे धीरे रहे वीरान में
सुरपास सब तिस गीबें सुन पातास म्याने जा दड़े

मव=मुरा बड़बड़े=परबते हैं, दरियाव=दरिया समुद्र । उड़ी मारना=पानी में
तैरने के लिए ऊपर से कूटना । हात बड़े=मित्रे, कई=कहीं खड़ग=तलवार, हड़बड़े=
माने अपनीच हुए । सुरपास=विश्वास दहना=भुगना, बिपना । हुस्न=सौन्दर्य खुम्मार=
घराबी । बूमसना=महिरामय, शम्वास=गोवाबोर, कुपकार=काकिर (ब ब) दहसत=
घातक, धरवा=सिंह, वीरान=जंगल ।

सोंसार < सोंसार, कुच < कुच, बड़े < बड़े कई < कहीं खड़ग < खड़ग ।

हुनहुन तुरेंग की फेर धीरे रहे बाब के पग धूज कर
आकास पर हासा दिसे जब नास का साया पड़े
मूरत तुरेंग की देख कर अपसर हुए गुमनाम सब
जबस की चपसाई मिरस चपसा गयन में जा दड़े

सती धारिण साह का काम-समह

बैठे तुरंग पर सार हो जब सज्ज ते धरि हो बस्या
मक हाउ होर मक बार सूँ कह सक भद्र गिर गिर पड
जब ते कोड़ा पिरीं उपर केया तुरंग सूँ सार हो
हमबार हो रहे सुम तल डोंगर धरि जे लड़वड़

गुरंग=घोड़ा डेर=बसहर, बाव=हवा, मूज कर=काँप कर, अपघर=अपघर,
सार हो=सवार हो डोंगर=पर्वत लड़वड़=ऊँड़ लड़वड़ दुमदुम=हमरत सती के
पाड़ का नाम हुता=बुल बाँव या मुरख के बाँवें धोर वज्रने बाता बुल।
नाम=पाड़े के पाँव में जड़े जानबाया लोहे का टुकड़ा लठ=पवित्र मनु=मनु,
हमबार=समय।
बाव<बाव, अपघर<अपघरा सार<सवार, लठ<लाठ पिरीं<पूखी केया
<करिया बस्या<बसिया बड़<कई।

केता तुरंग बीपट तुरंग तल बीक सद्या सारे कुरंग
सामिग हो काही उवा मुक में पकड दब हाय खड़
जब भस्य के सुम तल की गरद साकर पही ददे उपर
जा मुल सती पानी निक्स ज्यूँ नाठ के पुतल खड़
तुज हाउ के परताब ते ना ताब त्या भुगरिख जिते
सायम सट हार साब सट सपने में नित लठ हडबड
तुज डहर के साविग बने भस्यन्द हाय हासिग जिते
समघीर के पानी मन दुमन के धिर हैं बुड़बड

केता=कसा सद्या=कसा गुरंग=इच्छा बीषा=नाब काही=बुध तिनका।
उवा=उठा कर, दंश=घनु, कैती=ते जिने=जितने हडबडाना=बबपना, बने=
निरट, बुड़बड=बुलबुल। भस्य=घोड़ा सुम=घोड़ा के पाँव का निक्का हिस्सा
बरद=बुल ताब ताता=पीस रचना भुगरिख=बहुशेष पूजक। ताब=स्वयं नीर।
डहर=बीब साविग=साय हासिग=ईर्ष्या (हय=हासि) समघीर=समवार।
मुक/मुक दैव/दंश नाठ/नाठ परताब/प्रताप।

हर नित में मिता मूर सूँ प्रताहा जकर का पूर सूँ
रज तज क सट पर-बार मब बकपक गेवा दुमन मक
गुजर क तेर सामन बबरो पमग नागुन धिता
रंग जं हो तन ताप भर सब उम दं मर बड़
जब रन में गीक गङ्ग सूँ फिर हाय दहाग मग बूँ
उग बार की भनबार ते भूनाग क पन मर पड़

तुज हात ओरावर बदल पिरपी गढ़ा यक नास हो
सुन हैदरी नारे कूँ तुज मगस के मस्तक धड़धड़े

पूर=बाड़ रज=राज्य अकपक=अकबास सर्वपूर्ण बातें। बड़े=बड़े मूनाग=नाप मंगल=एक ब्रह्म फलहो अफर=विजय लंघर=तलवार, बबरो पलंग=सिंह र बीता नाबून=तब दरे सर=परेखानी बहसत=मय मर्ग=मृत्यु, ओरावर=नेत्रासी, हैदरी नारा=असी का उद्घोष।

रज/राज/राज्य।

जूमन्त करने तुज बदल जेतें सिसह बदि बते
बल टूट जा पग बीह के ज्यूँ कीन्तेय होकर मड़े
मूसा असा हो सङ्ग तुज फलक्या है जब मैदान में
अफसूँगराँ अफसूँ बिसर मुक बंघ हो बर धर दड़े
तेजी तेरी शमशीर की रिपु गर देखे सोने में तो
मौहूम के नुकते ते कम कह साक तुकड़े हो पड़े
सरबार तेरे हात की तासीर ते हुई सुर्ख रु
निस दिन रगत में यूँ विले ज्यूँ लाल मलमल सा मड़े
ज्यूँ सामने आ सक बँवे मगकर हो ना मान तुज
पक हूँ बचन सुन जान में बह सफ़ पे सफ़ सफ़ हो पड़
हो क्रीज म्याने गर्म जो देख नज़र भर घूर जिस
तन जस बसन्तर में सकस सिर कीलसा होकर पड़

जूमन्त=मुड़ जूमना। बते=बताने कीन्तेय=अबुन बिसर=भूलकर, दड़े=इसे सोने में=घोटे समय नींद में। रगत=रून का मड़े=साकर मड़ा हो बूर कर बना=कोय भरे नेत्रों से देखना कीलसा=कोयसा बसन्तर=शाम सिसह=हथिमार, सा असा=हज़रत मूसा का अवतारपूर्ण बंघ, अफसूँगराँ=आबूगर, अफसू=बादू, तासीर=गुण सुर्खरू=लाल मुहु बाला, मघस्वी मौहूम=अपवित्र नुकता=बिलु, बुर। प=पक्षि मगकर=अमण्डी (गकर=मगकर)।

जूमन्त/जूमना बँवे/बाँवे टूट/टूट बिसर/बिसर, मुक/मुक बड़े/बड़े
इना भिना का मूतकानिक रूप, साक/साक/साक रगत/रगत/रगत। बड़े/बड़े/बड़े/बड़े/बड़े।

जब साक बर बाँधे अघे दावे जिते पड़ दीन सूँ
तुज सँक की पर बाट ते ज्यूँ मुर्त बिसमिल फड़फड़े

बेते हजारी पर एकल साया तुरी जब सख कर
हो नत विषल क्रीड़ा सखस धापस में भाये हठवट
सारे जहाँ में नहीं हुआ तुज सार का धमणीरजन
जिस पर किया एक बार तूँ का यह धरावर हो पड़
दुलदुल का जब दावा है तल पिरपी उपर मुन जान में
बरी महावत ज भय सुन छाड़ द दग हा सख
तुज लडग की हार इत्म की सारीक म क्यों कर सकूँ
हज की इनायत य अधिग यू दा सिकत तुज हस सख

परकाट=बोट तलवार की काट। एकल=एकाकी हठवटाना=बबडाना
सार का=समान सुन=या बेतना। सैक=तलवार, विस्मय=धायक दुलदुल=
हजरत समी के बोरे का नाम इनायत=हुषा धनुषहीन। हक=ईस्वर।
धये < ये।

फिर फिर हुआ साजिम मुज सारीक कहना गाह का
तो मतम ए—सानी^१ बिपा मत चौक तूँ हर यक पड़
ना बोसन कुच जानत य तबा के आ गडवट
तिर साक में ध्यान दिने जब दस्य में पठ ब खड़
जो बाइ भया दाह दस्य का वा दस या सब दम का
तिम दस की तासीर त यक पम मनै कुर्या पड़
गर तूँ तग्राकुन कुच करे धायान मव मूदिरन निन
जिनहाम तूँ धामा करे मुदिरन जिन्तर कुच सा पड़

पन=कतुन हर यक पड़े=हर कोई पड़ साजिम=सावसरत सारीक=प्रसंगा
तबा=स्वभाव इनाम=कतुन, दस्य=धन्यपन, कुर्या=कुरान सारीक तग्राकुन=धनवान
बनना धामा=धामान धरम।

सख/सखि पड़े/पड़े, कच/कच, तिरपोर/तिरपोर जिन्तर/जिन्तर।
तुज मुज का जब ते हुमा साया धर्या मुज सीम पर

ते ते सखस धायाम हो गम क उड़ मख काकड़
तुज नाँव की तामीर त मजबूम हो मर बखन
तावीर कर गम जतन प्रीमात्र के मार बड़

१ कतुन सानी=कतिया के धारम में समान मुज के दो चरण मगना^२ का
साया है। जब कतिया बड़ी हो जाती है तो फिर नये मगन में शिनु निपटन मुज के
साथ कतिया प्रारंभ की जाती है।

घोंदकार की क्रीड़ा जिते मुज विस ते सब भागे हें तो
रोशन हुआ है घट सकल सुख नाँवें भा जब चित्त चढ़े
बाँदया मुकरर काफिर कइ बार में समझत बदल
ता रीज कर सहसी करे यू मनकबल जो कोई पड़े

हैं हैं = रोम रोम काकड़ा = धमिल (बई का बिनोला = काकड़ा) मूर्त =
मानस, हुआ = मुस्लिम धारणार्थों का एक पक्षी जिस पर इस पक्षी की सामा पड़ती है
बहु रंजना बनता है। साया = छाया मकबूल = स्वीकृत (कबूल = मकबूल) प्रिय। ठाबीज =
ठाबीज गले या मुखदण्ड पर बाँधने के लिए सिखा गया रंग या रंग जिसे बालु के छोटे
से पात्र में रखा है, धीसाक = धमिलाना मुकरर = दोहरा बार, समझत = चतुराई धमकार
(साहित्य)। सहसीन = प्रशंसा मनकबल = हजरत मुहम्मद ॥ सम्बन्धित लोगों की प्रशंसा।

हैं < रोम नाँवें < नाम, बलन < यल भौवहार < धमकार, चढ़े < चढ़े बाँदया <
बाँदिया, रीज < रीज पड़े < पड़े।

दीपक लगा मुज तब ने बाँदया है जो कुम्हार सब
बार इमामी' बिन कहीं देख्या नहीं पूजे चढ़े
धम्मल भसी भल मूर्तजा जिस नाँवें है धरे खुदा
सावे सिफत उस साफता जब तेरा से पुसदुस चढ़े
हुआ हसन उस मुजतबा सरदार है सज्जेन का
जिस सूर की खिदमत बदल हत जोड़ के हुरी चढ़े
तीजा हुसेने मुक्तदा मकबूल है करतार का
मरदूब है वो जग मने उस जात सँ जो कोई लड़े

सावे = धमिली लकड़ी है सोभित होती है। सूर = सूर, करतार = ईस्वर, हत जोड़
के = हाथ जोड़ कर, तीजा = तीसरा। तबा = स्वभाव कुम्हार = चढ़े लोग। धरे खुदा =
ईस्वर का बहादुर, सज्जेन = विषय मकबूल = प्रिय मरदूब = तुच्छ निष्काशित। हुर =
धमरा।

बूँदया < धूँदिया < धूँधिया < धूँध। सूर < सूर, हत < हस्त करतार < कर्तृ सज्ज
का कर्ताकारक का बहु बचन (कर्तार)।

कुम्मल इमामे चारुमी सो पीर जेनुस धावदी
होवे हियायत सल्ल कूँ मिम्बर उपर जब वो चढ़े

१. बाह्य इमाम-शिया सम्प्रदाय के १२ सम्माननीय महापुरुष।
२. लाफटा = धरबी की एक कहावत जिसका अर्थ है हजरत भसी के प्रतिरूप
किसी की बहाई नहीं भसी की तलवार के समान किसी की तलवार नहीं।

चारो पहर दिन-रात मिल हित-चित्त लगा यक ध्यान सूँ
'शाही' बिरद कर इस्क सूँ यूँ मनकनत दायम पडे

बिरद = यक, साहिब जमाँ = धरने युग के अधिष्ठाता ।

कसोद' ए हमसे जमस बर तारीफे होख ब अलीबाद महम व बात

दिसे मुख नयन में इस होख पे चबना यूँ निम्न
घर्या है चाँद नें ज्यूँ टीक धपस मुक के धगल
सफाई देल के इस होख की चंदर दायम
बले आकास पे घस शोक सूँ धमरित ते उमस
परिया धपरिज हो खयाँ देल के इस होख के तई
अछे धमरित ते मर्या होख यूँ समदुर ते दुगल
फनारे कल सूँ उखल बूँद सुहावे हैं जिते
दिसे सार्या के नजर में डले मोती ते निम्न

दिसे = दिखाई देता है निम्न = पवित्र टीक = टीका । धपस = धपने,
धगल = धावे धमरित ते उमस = धमृत से ऊँच कर, तंग पाकर । खयाँ = बोली कल =
मञ्जीर सार्या = छह सामन = चरब ।

निम्न < निरक्षण ययाँ < बरिया मुक < मुक घत < घति धपरिज <
धपरज < धपरजमें । खयाँ < खयाँ कहियाँ । समदुर < समदुर सार्या < सारियाँ < सारे ।

मुख = धमिलनी में 'अ' सर्वनाम को द्वितीया तृतीया आदि विभक्तिमें की रख
पठ्ठी में भी 'मुख' (मुख) आवेज होता है । पै = अधिकरण कारक की विभक्ति 'पर'
का स्वामीय ।

मछी रंग रंग अछे कह बात के इस होख मने
दिसे नुकरे के सरापा फिरे जव जल में खल
मछी के जल्द सलकने कूँ बिठा भर के नजर
छाँ ते जात गगन पर किया है जस ते निकल
मिठाई जग में हुई उसकी पम्पर ते पैदा
मगे यूँ नीर सयद म्याने सवर ते अफजल
फनारा होख में नादिर सुहावे रूप में यूँ
गोया ज्यूँ मास के ऊपर लिखा है जल में कँवस

१ धमीराद महम और बाब तथा होख की प्रशंसा में लिखा गया सकारण
कहीरा ।

भरी धारिण साहू का काव्य-संग्रह

मदी = मदेसी, रंग रंग = रंगबिरंगी कई जात के = कई प्रकार के लवण = लव
 बनी समझने = सरलने ठिठा = बिना तर्फी से = सबसे जोर = प्रकाश पसर = निस्सरण
 करना। मुझे = चौदी का सरापा = गन्धित, मरद = होट, भफुल्ल = भेठ (फूल)
 बाहिर = अनुपम यात्रा = मानो।

समकना / सरकना बिठा / दृष्टि बिस्पा / बिलिया केवल / कमल।

जिने इस नीर कूँ देखा सो बिया डीऊ से यूँ
 सगे भाईने से भतर यूँ नजर में निरमल
 जिने इस नीर कूँ चाख्या सो उठ्या बास के यूँ
 गोया ग्युँ सहदो सवन से भरी है हौज का तल
 गया खेरा का सब रंग देखत कल का फतर
 पड़्या तल सिर हो सदी से यूँ जमी पर तिरमल
 कवाया घाठवाँ समदुर भरी जब नीर मूँ हौज
 सबावार उसके भोगे है यूँ भसीबाद^१ महल

जिने = जिमने नीर = पानी भेतर = बघत, तल सिर हो = नीच
 मिर किये हुए, कवाया = प्रमिद हुआ उनके भोगे = समझी सुतना में डीऊ =
 घानव, सहदो सवन = सहद घोर रूप खेरा = एक रेखीन पथर, सबावार = प्रसन्नार्थ,
 समदुर होने योग्य।

देखा / देखिया भेतर / बहतर, निरमल / निमल चाख्या / चाखिया,
 उठ्या / उठिया भरी / भरिया फतर / पथर / प्रमदुर। पड़्या / पड़िया / पड़ा।
 कवाया / बहवाया, भोगे / भागे।

जिने = 'जो सर्वनाम के कर्ता कारक का रूप।

जता गज गज मूँ रखा जाके हुआ करण यूँ जो
 दिन हम करण मूँ मिल परत हुए घाठ भबल
 पाया पूरा भल्ल हम करर गया पासात तसक
 ताक निमरा होवे मेराज हमी वह के भगन
 सुमन्दी मरन का भगत न हा ताउन भी फिने
 प्रयात^२ निक त बाभ्या न यूँ बहार है नबन

१. बीजापुर में बना हुआ फारिनाही शालकी का राजप्रसाद।

२. चतारूँ = चक्राचूत पुनान का प्रमिद शार्पनि-धन।

सवा सूरिज ने भोग भूर इसी कस्तर भोगे
जब से दीवार पे सनभसत सूँ दिठा है खर हस

गज नज—हाथी हाथी बाके हुषा—बाकर हुषा भरत—पुष्पी मयस—
परंत पाया—नीच तसक—तक लेखक—देखना, मन्वर—आकाश, नवल—नया दिठा—
दिखाई दिया कस्तर—महल मेराज—उज्ज्वल पद खेह—देहती बुमन्वी—ऊँचाई, उच्छ्र—
छत, क्रिक—चिन्तन करहुष—विन्दु स्वर्णश्रव ।

जटा/चिडगा भरत/परिणी ।

ताके किसरा—इस्लाम पूर्ण ईरान का एक नगर इस नगर में एक महल उसकी
एक बड़ी ताक भी हजरत मुहम्मद के जन्म के अवसर पर यह ताक बिर गई ।

हर एक एक ताक भछे ताक भपस रूप मने
'मानी' मन्वर के लिख्या मेह सूँ तिस पर जववस
भरे थे जाम के गुप्त कर सारे मजर के मजर
न भछे सूर भी इस सम जामे^१ जम से यू मिमल
सफ़ा सन्दस के मिला जोग वे मजर के उपर
भगर नन्दन के भरे पात करोके के भगस
दरीचा जोल मिझाते विसावे पात सूँ यू
गोया आसिग बवल भावे छवीसी नार चैबस

भपस रूप मने—भपने रूप में मन्वर—महल मन्वर—सुराही सिमा जोग दे—
योग रूप से जमक कर, पात—पत्ता सूर—सूर्य इस समय—इसके सामने ताक—कमान
मेह—चित्र फलक जववस—चित्र का हाथिया जाम—सुरा मन्वर—बुस सफ़ा—पंक्ति,
स्वच्छ । सगवस—चन्दन गुल—गुल ।

मन्वर/मन्दिर, पात/पत्ता ।

मुबारक आब बे बाँचे हे सफ़ा सोफ़ा यू
भछे तिस छीबें में दायम सारे भरबावे दवल
सारे खुशकव भछें बाँबा सरो शमशाद के सम
भछे जौबीना यू दालान पे तूवा का सकस
तनखी तन कूँ सौवारी सारी परमस मने यू
गिमावा कौद पे सारा गोया भीपे हे सौदस

१ मानी—एक पौराणिक जमत्कार पूर्ण देवदूत चित्रकार ।

२ जमघीर का प्याता—पौराणिक कथा के अनुसार जमघीर के पास एक प्याता
था जिस में उसे संगार की बटनाएँ दिखाई देती थीं ।

कभी इस भरत पे नई हुई है इमारत भी कहीं
कहीं कोकस^१ नहीं देखा है सपन में यू महस

भाव से—भाव से अन्धकार से डंग से । तिस छाँव में—उस छाया में साँची—समा,
परम—मुपस्थित कौद—बीबार, गिलाब—मिट्टी का पुताब । मुबारक—दुम, सफा—
पंक्ति सोफा—ढँचा प्राप्तन भरबाबे बरम—कभी लोग, सुपुत्र—अन्धसी क्रय के सरो
धमधाद—सरो धीर धमधाद के पेड़ । तुबा—स्वर्ग का एक वृक्ष तन्भी—सिद्धी,
संदन—चंदन ।

इस होर जिस ते रासन यू इमारत है सदा
भाव नित मूर यू हर सुबह कूँ तहसील बदल
मूर पाया है धरऊ भाके इमारत के ऊपर
के यू पा नाँवें धली का हुमा है बुज्ज हमल
रख्या मूरिज ने दुबा कर देखो यू रात के तहई
दिखाने नूर अपस का किया है दीस दुगत
हुमा परकास जो दिनकर दिनाया मुक का भलक
साजों से दीस के अंगे होती है रात बरम

मूर—मूरज दीस—दिन साजों से—भाव से अंगे—आगे दुगत—दुपनी
दिनकर—सूर्य, बरम—बोझन अदुरय । इम—नाम जिस—धरीर, तहसील—अधिकार
में होना गरऊ—बहुपन मूर—प्रवास ।

रस्या / रसिया, बरम / बरम / बरम । परकास / प्रवास, बरम / बरम ।

होवे दिनकर के सब से बड़ाई दीस की सब
समे कहने यूँ तदा से छबीली रात बरम
देखो किम माँत मूँ छाती यूँ सँवारी है गमन
जूबी ब गुल कूँ किया बम सगाया भरके सुंदर
जिस इम निनी की जमानत भंग यूँ रात गमा
गोया ज्यूँ भाग के ऊपर जाना है माम पिगत
जमी ब गुल बिछाने पे तजम्मूल मूँ अप
मगा कर रात कूँ गहरो यठा है नीम बरम

दिनकर—सूर्य वीस—दिन तथाते—तब से जूही—जूही, भरी—स्वयं कमी—
क्रम हेम। सबन—कारण संवस—बदन बसासठ—भाग, तजम्मुन—सुन्दर,
धानदार बकल—बीड़ा।

वीस/दिनस, भाँत/भाँति सैनामी/सैवरिया/सैनास जूही/जूही, सैदस/सैदस पिगल/पिगल।

दिसावे वीस के घाणों मियाही रात की यूँ
योड़ा उयूँ साऊ नयन में पने है नार कबल
बड़ावा दीस का देखत महा बत विस में पकड़
वेखो यूँ रात समथ खा जाती है जख निरुम
दिन के भैवान पे जब सूर ते देख्या है कसक
रात की जात में पिआ है इसी दुक से खसल
तोल्या है सूर ने दिन कूँ सगा भाकास के बास
तिस में इस रात के बट कूँ घर्या पासंग के बदल

मियाही—कामिआ, धन्यकार। पने है—पहुँचती है कबल—कामल बड़ावा—
बुद्धि। महा बत—बड़ी बात, सूर—सूर्य बास—बासी बट—बाट तिस में—उसमें,
हसद—ईप्सी खसल—बाधा।

पने है/पहने है, कबल/कज्जल बत/बात दुक/दुख/दुख। तोल्या/तोल्या
सोतिया बर्वा/बरिया।

देखे जब वीस के मोसो कूँ बना भाता है
सिये है रात अकसी माजे है दिन के भगस
उसी के दुक से जमी रात में होसर से डसक
वेखो यूँ वीस सटकता भाता समपुर सा उवल
सूर कबल के खरीने त रखा दिन कूँ सैवर
बड़ाई बेक के तिसकी हुई है रात निवल
सगो छिजने कूँ रयन चर्द ये इस वीस भोगे
सैदा सो हाट का मस हो सग्या छाती पे कुवल

माजे है—सज्जित होती है दिन के भगस—दिन के सामने होतर—भिय
सैवर—सैवार कर, निवल—बुर्बल छिजना—क्षीण होना कुवल—निर्बल क्षीण। मोसो—
बर बना—बर, अकसी—क्यूँ, खरीना—सुनहरापन।

दुक/दुख/दुख। समपुर/समृद्ध बैक/बैक निवल/नि—बस छिजना/छिजना,
सैदा/सैदा/सैदा सग्या/सग्या/सग्या।

मुकद्दम दीस व निस का दया कम जियाजत के कर
 बास्वा हूँ यही ते में तारीफ़ कछेक बाग बदल
 गुनाबी गुम नें दिखाया भये मुझ सोस भये
 दखो इस फूल ते है बाग मनें सब परमस
 बेबसी, जाई व जूई दिस उदमम के नमन
 बेदे के आइ पे फूली मू सगे ज्यू मद्यमम
 दिहाव ताज मुदुल कन धाखे भरवान खजिस
 लिया है हेम का रग सब रंगीला मू मद्यमस

निस = रात बाग मन = बाग में, परमस = सुगन्धि, जाई व जूई = जाति पुष्प
 पीर जूही उदमम = नखलगन नमन = समान, बसा = बसा आइ पे = पेड़ पर, हेम =
 स्वयं मुकद्दम = दामे दया = दान कम-जियाजत = कम ज्यादा मद्यमम = मगान,
 धाखे भरवान = मूँके का डानी खजिस = लज्जित।

परमस / परिवल बेबसी / बेबसी जाई / जाई / जाति जूई / जूही उदमम /
 उदमम बेदे के / बेदे के ।

मरे हूँ बाग के तन्हे गुली हर जिम्मे के बह
 खुममन रेंबेती तिस में मू दिमावे बदल
 हुए हूँ काम के डानी सो मदनशाम के फाँज
 तिसमें खुगवास से बलुक मू हुमा है धक्कन
 मड़ा है दोम हा दायम मँजा कर बाग के ताई
 खुमनजर पात के हासी रंगा वर रग में सहरा
 गरबुगा फूल ते चोरी निम कइ भीत का रग
 बितावे मा मू चितर सज के बके तिम के दगल

रेंबेती = रेंबेती काम = दामेद मदनशाम = एक पुन मनमस्त । फाँज = फाँजी
 केतुन = बन्नी प्रथम = बन्नी शम = एक पुन (?) मँजा = धूपा (?) वसंद बितावे =
 बीजत तिया बिनर = बिज हर दिन = बिजि प्रकार खमन = बिज रन के
 गरबुगा = एक पुन रबनी मया ।

म < कई रेंबेती < रेंबेती केतुन < केतुका धक्कन < धक्कन बिनर < बिज ।

मार ताबीह गुली की पूरी हुई जा मू तमाम
 पत्नी मू बाग के तारीफ़ बनें सब मुदमम
 देगा कामगरी किम भीत की बीता है बहार
 सब व उज में मनमन मू मया है खरहन

खुश नजर अब की खूबी दिसे यक तन में दो रंग
कहूवा सारका नीमा नीमा है ज्यू के पबस
मिठाई देक के भंजीर के फ्रीका हो सवा
साजों ते मोम के परदे में छिपा जावे असस

जीवा है—क्रिया है अब—आम सारका—समान, लक्ष्मीह—उपमा, मुबमन—
संक्षेप में, बहार—वसन्त ऋतु। पार्ज—पाव, वर्तन। खरहस—तरस सोना कहूवा—
एक तरह का पीला पत्थर, नीमा नीमा—आवा आवा पबस—(?), असस—सहृद।

असस अमरित फर्मा इस बात में अमरित के सिद्ध
साया गर तिस का पडे तो होवे धीरी हजस
सारे भंगूर की बेला ये पके यूँ छोछे
मिठाई सेस कूँ अपड़े पडे गर मुहँ वे पिगल
दिसे खरबत के यूँ कूँजे जिते नारियल के कपर
मीठे बड़ नीर के चरमे ते मर्या है मुखस
मारंगी रंग का हवस धर सगी आ बाग मने
रंगाई तन कूँ सरासर देखो रंग रस में सकस

अमरित फल—एक फल तिसका परे—उसका पड़े सेस—सेप नाम अपड़े—प्राप्त
होती है, मुहँ—पूछी नारियल के कपर—नारियल का छप्पर, मुखस—ताड़ी के पेड़ पर
लगने वाला गोलाकार फल, सिद्ध—विशेषता, वृत्त। सावा—छाया धीरी—मिठास,
हनजस—इश्रायल का फल छोछे—गुच्छे, कूँजा—प्याला हवस—इच्छा।

अमरित < अमृत सेस < सेप मुहँ < भूमि, पिगल < पिबल कपर < छप्पर।

खरीना पात का सारा विसावे पाच का सब
दिसे समरक यूँ शजर पर सो सोने का हैकस
देखो इस वन की बटा त न दिसे धूप वहीं
विसावे पाच के तस्ते चारो चमनी यूँ निखल
हरेक यक बालवा पानी का मर्या है सो गुलाब
खाक इस बात क फूलाँ ते हुई है परमल
फर्मा-फूलाँ यूँ इमारत की हुई जब यूँ सिद्ध
भरे मानाँ यूँ यकयक यूँ विसावे अफजस

पात—पत्ता पाँच—पंच रत्न समरक—एक फल, चमन—बाटिका भिन्न—स्वच्छ,
निर्मल। परमल—सुवर्णित मानाँ—धर्म कालवा—नासा गहर। खरीना—बहना
शजर—पेड़ हैकस—हँसती, अफजस—धेय।

पात < पत पाँच < पंच (पंच रत्न) । निबन < निबन भर्वा < भरिया < भरा
परमन < परित्त माना < माने ।

पाच = मोटा, हीरा नीलम, पाण मोटी ।

दिमाने तवध की कुम्बत 'पाही' इस बहर मने
बेध्या हर बैत में कई सफ़्त यू अनधत के नवल
जान हार दिल य उवा हात कुमा मंगता है
ता भछे भवन में सुख चैन ते यू खल्ल सकत
जा सगों नूर सू दिनवर भछे होर चाँद व गयन
जो सगों बहुरा है बाहिर भछे होर पीर बहुरा
मुत्तरी साद है जो सगों व भतारिद है दबोर
जा सगों पाँचवें धाकास पे दिसता है मंगल
ता सगों रात-दिन व पहर चढ़ी बदल मने
बना मानदे मूँ इस घर में सदा ताम-मंदम

नवन = नवान उवा = उठा कर, ता पाच = त्रिपक्ष रहे, जो सगों = जब तक
कुम्बत = शक्ति, बहर = भ्रष्ट बैत = घर, उरनेछ । बहुरा = गुरु, बाहिर = प्रकट
पीर = पूजन स्थिति बुझा । बहुरा = शक्ति मुत्तरी = बहुराणि सार = शुभ भतारिद =
दुप, पीर = निरिद ताव-मंदम = ताम पीर मंदम बदल = उल्लव ।

बेध्या < बेधिया उवा < उवा कर, उवाना = उठाना ।

कसोद ए^१-बार बर बार

रगो भर्खा मग्गा है यू बन नवे गुमा मूँ भर्खा है सारा
मरा सनाबर समन की बेमा फुल ह फूला भछ हकारा
तही का मामी पिरम का पानी मयन मइयाँ में सदा किराव
जिन भर्खा भवन के ऊपर गिन-फुले हार करे भकारा
उमी व बन में भुवन प्रमामी अनव छल्लों भपम बनाई
परी को तमी, हुमान की धामी मरा भुन वा बंधा दाम्हाग
हो भपम में गुदर वा मुक यू भदर भगन भिन भमव निम ग्यु
हैमी में निमक भपम दिस यू हूमा दारुक्रमिभ मुवा का पारा

१. एक विद्वान एकर में निगा हूमा कभीहा मोनह पक्षियों में निगा जान बाबा उम्ह ।

धर्षना = धारणार्थ नवा = मनीन, हकार = धाहति मँह्यी = क्यारिमी भकार =
 झकोले सेठी है उसी ब = उसी सुवन = चुकती धमोली = बहुमुख्य जन्द = इस भपस =
 अपने को परो की सेठी = भपसरा जैसी दोहारा = गुला धमर = होट, सरो = एक पेड़,
 सनोवर = एक पेड़, समन = बमेसी धरुया = दुलहने चफक = सग्या सबा = ठडी हवा,
 पाय = टुकड़ा।

धर्षना < धर्षना सग्या < सगिया भर्षा < भरिया हकार < धाकारा < धाकार।
 पिरम < प्रेम मँह्यी < मँह्यी < मँही (ब व०)। दोहारा < दोहा।

सुवर नखों कूँ चँवर ने देख्या बरुन हुधा तब धमास में छप
 खवर यू सुनकर गवा गया पग लिया है कोना कृतुब का तारा
 नजीक जाकर कहा सुवन सूँ करम हमन पर करो पियारी
 सुनी सुवन जब धो उठी तड़क कर कही कसैनी इठा पुकारा
 कहा मठा गया गुसा है मुज पर मुजे तुजे अब लम्पा है सोंवन
 पिरम रसी कर कमन्द डालूँ गुमान सिर बे कहेँ उतारा
 भँवस पकड़ कर मदन नखों सूँ सुंदर के ओवन मतर लिख्या जब
 गई सितर कर फुली ओ मन में कही सू मन का मेरा पियारा

बरुन हुधा = धोसन हुधा, धमान = धमावस्या जप = छिपकर गँवा गया पग =
 पाँव चले गये पंगु बन गया। कृतुब का तारा = ध्रुव नक्षत्र नजीक = निकट हमन पर =
 हम पर, तड़क कर = गरब कर इठा = इतना गया = इतना, सोंवन = बंदन सितरना =
 इतराना सिर बे = सिर से मदन = कामदेव ओवन = स्तन मतर = मंच करम = दया
 कमरब = रस्ती गुमान = धमण्ड।

चँवर < चंद्र बरुन < धोसन धमास < धमावस्या जप < छिप नजीक < नजदीक,
 कहा < कहिया सोंवन < संवन < बंदन पिरम < प्रेम, मतर < मंच लिख्या < लिखिया।

सगी मुहजठ मुज-उले कूँ जदत नूँदन सूँ जड़ गया ग्यूँ
 बहाँ सूँ बाहाँ गसे मिला कर बरे भपस से गुसे कूँ यारा
 मदन की माती भरत कूँ पाती फहम करारे हुधा उसे जब
 सिने के बुरजक मने जतन सूँ रखे रतन कर पिरम हमारा
 सली सूँ खोली पिया चुनाना मँदिर में मेरे मँदिर सँवारो
 बदन य केसर मुदाक मिसा कर भँगन पे सारा सटो फुयारा
 सजन सूँ दिस यूँ लग्या है मेरा बकोर चँवर रहे अनम कूँ
 पिया मूँ मिनते हुई खुशी मुज दुतिन का दिस सब हुधा धकारा

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ أَمَّا بِنَايِكَ فَحَمْدُونَ أَبْنَاءُ

بَنِيكَ تَبْتَ حَسَنِي الْبَيْتِ لِحُطِّي وَأَنْ بَدَّهَا دَوْلَاتُ

هَرِي أَخْلِي مِنْ سُلْطَانٍ وَوَلِيٍّ خَلْفَ لَنْجِ خَمَلْدُ

هَمِي مَفِي شَيْءٍ أَذْهَرِي بَيْنَ مَوَاتِقِ مِلْ صَاكَ كَابَا

مَنْزِلَ نَهْمُولُ خَلْفَ دَلِيْمِيَا وَجَعَلْ مَوَاتِقِ

خَبَرِي مَسْئَلُ لَوْ أَلِيَا لِيَا لَوْ نَا قَطُنَا كَاتَارَا

उधो बदन में सुधन समापी घनेछ छाणों प्रथम बनाई ।
परी का लगी हुसम की घामा गगन जूरे बाँ बंधा दोस्तेहार ।
हरे धनम में सुदर को मूक यूँ सदर गगन बिबल ममक दिम जयूँ ।
हमी में तिमक प्रपर दिम यूँ हुषा पाऊक मिस सब्बा का पारन ।
मनः सरगों कू बगर न देख्या, बभ्रम हुषा सब समाप्त में छन ।
गबर यूँ मनुवर संबा गया पग पिया है बोना कनुब का ठाग ।

मनो धारित शाह का काम्य-सबई

बहत = बहाव नव । कुँवन = सोना, बही = बाँह, अपसते = अपने से, मरम = कामरम माती = मस्त, अरत = अर्ध तापये, सिना = छाती, कदम = कदम, बँवन = मोवन सगे = हाथो, फुयारा = फूँटा जू = जूँ जिस तरह । बुधिन = सोचने अथवा = चिन्त, कदम = बिदेह करार = छाति बाँधस । कुरक = पेटी, मुदाक = कस्तूरी ।
 रही = बाँह (ब० ब०) सिना < सीना, कदम < कदम ।

बेध्या या कोकस वृत्तव इमारत छजे ये अनवर नयन सिफ्त के
 सहन के चारो तरफ चमन में अगर् बँवन का अथा कठारा
 भ्रमर के जामी अगर् दिखे जम मनम गँवा कर अनम रहे जम
 गगन सिपी कर मुरख का जस भर चितर लिख्या घर बतुर बिठारा
 बेधाई मेहँदी रँगाई धुनरी निहाल फानूस रँगारे चौधर
 रंगी पताँ सूँ सुनी कताँ दे मरुँ के ऊपर सगा फराया
 बरी बिछाना बिछा सदर कर हिलाव घबर अथा अँगन बिब
 मँदिर में अपन मुजे लिबा कर गुंसे व मोती करे निसारा

छा = छाया, अथा = या कठारा = पवित्र अथवा = सुराही, अगर् = एक सुयन्त्रित
 इय जम = जमरी, चिरकामीन । मनम = जमय चौधर = चारों ओर, बिठार =
 बिचकाट, पताँ = पताकाएँ, मुना कताँ = स्वर्ण के टुकड़ मसा = पर्वत अथा = या, गुंसे व
 मोती = धून पीर मोती निषारा = लीलावर, कोक = मेमार, वृत्तव = बँवा अनवर =
 मकानमान महन = मोवन, जामी = बैध, जम = झुका हुआ, निहाल = भ्रमर, बरी =
 मुनहण, दिनाव = विजिया का जन्म ।

छा < छाया बिठार < बिचकाट, निषार < निसार ।

मोहम पिमा जब रहे अतंज में अनव धकाने कियीं अथावे
 मुपन की मनकियाँ अथियाँ वो मनकियाँ सगियाँ पसाने कनर कदार
 मयो अरामय हुई महल में हँदर ने देखन मनन किया सन
 रँगा ठे जती हुसन में धाली बँधी अपस तो बिरद अथारा
 बिते बहर में बहर मिठा यू वने है मुदिकस अगर् बँधे कोई
 बेध्या है 'वाही' सेर यू ताबा मवद हुए जब इयाम वारा

अथा = अथवा पीठ, मनकियाँ = लड़कियाँ, अथियाँ = बँी मनकियाँ = छोटी
 पसाने = पान बिस्मान । कनर = कनर = दो राय यणी = इतनी हँदर = इन्द्र रँगा = रँगा,
 एर अमर । जती = बितती जती धानी = लहेना । बिरद = बिरद यम । अथार =
 पार, बँधे कोई = बाँध कोई ध = बनाय अरामय = अरामय बहर = छन्द बने = पक्ति,
 इयाम वारा = विद्या अथवा के १२ इयाम, जो अथवा अथवा मान बाते है ।

पिया < पिय < प्रिय धनद < धानद अधिमा < भी ईदर < इन्द्र रेमा < र
मिठा < मीठा ।

- (१) अहस्था के घाप के कारण इन्द्र सहस्र जिंग हो गये थे किन्तु उनके जिंग 'मेज' बन गये । तभी से इन्द्र सहस्राक्ष कहलाते हैं ।

अबरनामा

अवल हक की सौहोद सूँ कर सुखन
पिछे खुश अवा सूँ बयाँ कर बचन
तुझे है सजावार हम्दो सगा
तेरे हुक्म सूँ है नन्हा होर बड़ा
करीमा करम सूँ यूँ आसम किया
नभ्याँ होर बस्याँ कुँ शरफ तुँ दिया
सुसुखन नभ्याँ म रिसासत पनाह
जो कोइ नाँव सेवे ता जावे गुमाह
असी ए बसी पेक्षवा वो इमाम
सजावत सुजावत है जिस पर तमाम

मन्हा = छोटा, नभ्याँ = नबी का (ब ब) बस्याँ = बसी (ब ब०) हक = ईस्व
अवल = अवल, सुखन = बचन खुश अवा = गाथा नखरा करने वाला, बयाँ = बर्क
सजावार = सोमास्वर, हम्दोसगा = ईस्वर स्तुति करीम = दवानू, करम = दान
आसम = संसार, मबी = ईस्वर का संविषवाहक बसी = सिद्ध पहुँचा हुआ स
सुसुखन = विशेष रूप से, रिसासत पनाह = हजरत मुहम्मद, गुमाह = प्रपञ्च, पेक्षवा
मेता, इमाम = धार्मिक मुखिया, मुखिया । सजावत = सजावट, तमाम = पूर्ण ।

अवल < अवल, नन्हा < नन्हा ।

अबरनामा — अरब में सैबर नामक स्थान जिसे हजरत असी ने जीता था ।

तरी रास्त घौसयाँ कहो है किसे
क़बा के सजाने की कीर्त्याँ रिसे
इता एक क्रिस्ता सुनों जग का
के वो जय या सीन के मंग का
अथा एक खबर का क्रिसऽऽ बिकस
बड़े मङ्कसाँ पर भगस वे अतल

पधर ये गुरुज के प्रजर से धड़े
 धवे सल्ल बो छव नन्हे होर बड़े
 गुरुज होर तटी कन कुवस भी सुरम
 धंपइता न था वहाँ पवन का तुरंग

धंपइता = धंपइया, कील्यो = ताविया, विरक्त = वेडन, मइरक्त = दुर्गन्धार,
 बड़े = बपाने वय, कन = निकट, कुवस = कटिन, धंपइता = प्राप्त होना, मितना ।
 तुरंग = घोड़ा पस्त = सीमा, कजा = वीथ, मंय = लम्बा ।

धंपइया < धंपइया < धंपइया < धंपइ । कील्यो < कीविया < कीस ।

धधा कोट ऐंहा कुवस भाग का
 धंपइता न था धासरा लाग का
 उमक उस खंदक का न जोइ कह मुके
 छिहर के तराजू प धटके धके
 धधा बुपुर का उस जमी पर धन
 न सकता धधा कोई जनका दटा
 रितासत पनाह होर सहाबी मिले
 धजा की मुहिम पर बगम हा भले
 न ये क्रोम में साह दुसदुन गहार
 धधा ताह के मेनों कू धीकन धकार

धधा = धा, कुवस = कटिन, भाग = रास्ता, लाग = मकान पर बढ़ने के लिए पत्थर
 धादि वा भाग, बराना = बगना धीकन = निरंतर, उमक = गहराई, छिहर = चट्टकन,
 धजा = लड़ाई मुहिम = धनियल भाह दुसदुन गहार = हथरा धनी धाह = धाससाह
 (धनी) । धकार = धीका ।

धीकन < धनियन ।

सहाबी कित धान कर पड, बने
 न ले सक कटिन कोर फिर कर धले
 सहाबी जमा कर रमूम लुदा
 कह यू मुजाह् में कर्मो जुदा
 क जिन भर पर महर बग्तार का
 वा धानम है पुरा मने प्यार का

उसे देखेगा यूँ पाकर का असम
के जिस हात में है सडग होर असम
परबर भली कूँ बुसा कर भेगे
सबे रह खुदा बन दुआ यूँ भेगे

सहाबी—हजरत मुहम्मद से साबी प्रभू प्रमुख । धान कर—धाकर, पत्र—पत्रे,
फिर कर जैसे—सीट जैसे, मेहरे करतार—ईश्वर की दया, खडम—उधवार, बुसा
कन—ईश्वर के पास, रसूने खुदा—ईश्वर के सम्बोध बाहक, बुसाह—प्रातः काल,
असम—संसार, पाकर—विषय, असम—अज्ञा परबर—परबत, ईश्वर का सम्बोधबाहक ।
करतार < कर्तार ।

म होम तुज गरम होर सरद का अछाब
उसी वक्त हक कन दुआ मुस्तबाब
मुमाबे मुबारक अपस हात सूँ
पिन्हाये गयन में भली शाह कूँ
हुई नैन रोसनतर अछ पाक़ताब
के ज्यूँ अन्न जाकर बिसे माहताब
असम हात में दे पिन्हा कर बिरह
बिरह के बेटी हात सूँ दे गिरह
सिमह चाहरी बातिनी सूँ सँवार
इनायत क्रिये शाह कूँ खुशख़ेकार

हक कन—ईश्वर के निकट पिन्हाये—पहुनाया, प्रवेश कराया, अछाब—दुःख,
मुस्तबाब—स्वीकृत होना, मुमाबे मुबारक—शुभ वक्त अत्र—से, पाक़ताब—सूर्य अत्र—
बारस, माहताब—बाँह, असम—अज्ञा, बिरह—कवच गिरह—नीठ, सिमह—अस्त्र
चाहिरी—दिखाने के, बातिनी—बुध खुशख़ेकार—हजरत असी की उतबार ।
पिन्हाये > पिन्हा ।

रवाना हुए जग के नामदार
वो शाहे विस्तारत अधिक कामगार
जैसे शाह वहीं कुपर कूँ तोड़ने
उचा सट फतर के जुताँ फोड़ने
कैगूरे सिपर कर यहूदी जिते
सड़े माँब (?) पर हो गगन सूँ तिते

उन्होंने यहूदी भया एक कसी
कहा दाह सूँ कर नीवें मुज पर भया
दाहदा कहे नीवें है मुज भसी
अजस ये किये हैं मुजे महवसी

बालयार = कार्यनीय, उषा = उठाकर, छट = फेंक कर, बिते = बितने,
काँस = (?), तिते = उतने, महवसी = महाशक्तिशाली, अय = युद्ध नामदार = प्रसिद्ध,
बिनायत = बसी (सुप्त) का पद, कुजर = इस्लाम पर विश्वास न रखने वालों की
पारगा, विपर = डाल, भनम = अहंकार, कर्ना = बढ़ा, भया = प्रकट, अजस = सृष्टि के
प्रारम्भ से ।

छटर < प्रच्छट, कहा < बहिषा, महवसी < महावसी ।

यहूदी भया इत्म सूँ मौतबर
दिया उन अपस सोग कूँ यूँ खबर
के यूँ मदें किस-ए कूँ लेवेगा पाज
तहग सूँ यहूदयाँ की खोवेगा साज ।
कहा तो यहूदयाँ सूँ यूँ कर पिता
वे बाहर निबल कर बगे तुम इता
जिसा ये निबम हारिस भया अगस
सहवा थींच सीदा हुषा जूँ मंगस
सहाबी उपर धा गया जारे जंग
हुई ता सहावा अपस म्याने दंग

अपस साय = अपन साग आत्मीयजन । किस ए कूँ = दुय का बिता = सावधान
करक इता = इतना अगन = पावे सहवा = उपचार, मंगस = मंगल (पह) । अपस म्याने
= अपन में । इन्म = ज्ञान मौतबर = मरु, हारिस = एक यहूदी, जारे अय = युद्ध का
बोह ।

यहूदाँ < यहूदी (ब० ब०), सहवा < माहा सींग < सीपा ।

बहीं दाह मर्ने को उषा कर फुरंग
गरम हो पठाये अपस अदिरग
बिय उस यहूदी प यव बाग दाट
गया वो यहूदा जहन्नुम को घाट

हुधा धन महुदी का इस गाँव सीस
 के ज्यू चीर रखता जलम खुशानीस
 जो मरहव देखा बिरादर के तई
 कहा वो गया तो महुँगा व मई
 जिरह बाँद दुहरी भेँप्या दो फरण
 रस्या दिल में जय धह सूँ करने यकग

उठाकर = उठाकर, गरम हो = कोष में धाकर पठाये = भेजे, डाट = डाट कर
 जमकर, डाट = रास्ता मडगा व = महुँगा ही जाहे मर्बा = मरपु मव, फरण = ठलवार
 बेधरिय = निष्प्रम जहलम = गरक सक हुधा = फट गया, खुशनवीस = सुनेसक, मरहव =
 एक महुदी बिरादर = माई यकग = यकता ।

देखा < देखिया ।

सिया हात भासा जो बा तीन मन
 धिताबी सूँ धाकर सडा बीच रन
 जो देखा नजर भर जहलम का मूँ
 वो बोल्या सुखन यू अपस बूज सूँ
 के सपने में देखा हूँ मैं रात शेर
 किया फाड़ पजे सूँ अपस कूँ जेर
 वही शेर दिसता है मूज भाज यो
 चुसे सूँ करेगा मगर भड़ कूँ वो
 सहसा ने मरहव कूँ बेगी वसक
 वो धरु कर सटे सीस बें पा तमक

धिताबी सूँ = धीमठा धे, यू = यूह, अपस बूज सूँ = अपनी बुझि से, अपस कूँ
 जेर = सपने को पराजित दिसता है = दिखाई देता है, वो धरु कर सटे = वो टुकड़े करके
 डासे, सीस बें पा तमक = सिर से पाँव तक, सुखन = नखन, मरहव = एक महुदी का
 नाम । सड करना = टुकड़े करना ।

देखा < देखिया ।

गया जीव मरहव का हारिस कने
 दो बड हो बराबर म कर कूप मने
 तेरा सडग दिव में सदा सूर है
 तो ददे तेरे हात सूँ चूर है

पत्नी आदिम दाह का काव्य-मंगल

यहूदियों का मरकर मंग्या न्हाटने
 दाहशा उनन कूँ खने काटने
 पड़ कह यहूदी किते सार के
 हुए कोससे वा नरक नार के
 मुकाबिल न हा सन बगल सूँ मिता
 यहूदी गया न्हाट यह हव खता

मरकर—मरकर, दूर खने—कुएँ में, जङ्गल—तमवार, सूर—पूर्व, बंदा—घनु
 मरकर मंग्या—मेना ने हथ्था की न्हाट—मायन उननकूँ—उनको किते सार क—
 कैम कैते न्हाट गया—माय गया नार—धर्मि ।

मूर < मूर्ख मंग्या < मोंगया, हव < हस्त बंदा < बन्द ।

अया दाह के हाथ में जो सिपर
 मंग्या आके धमका सिपर के उपर
 सिपर गिर पड़ी जो जमी के उपर
 गया न्हाट लेकर यहूदी दिपर
 जिसे है सिपर हक करे गज मूँ
 उसे क्या है परवा सिपरमाज मूँ
 गुंसे मूँ दाहया खंदक कूँ असक
 ले जाये अपसकूँ जिसे के तसक
 निय हाथ में पाट भड़कन का तोड़
 क्रिये पूल खंदक पर वही पाट ओड़

अया—या दिपर—दुसरा केरे—के धमकना—फाँटना पाट—दरबार
 भड़कन—दुबगार, खंदक—खार्द । निपर—डाग राब—खुस निपरसाब—डा
 बनानवाला ।

मंग्या < मंगिया दिपर < दीपर ।

उसी घुम प धामम यह बगुमार
 निनामी घरे फनह के ठार ठार
 तर हाथ मूँ जो निबानी हम
 पड़े ता मफय्या सगत से तसे
 जिसे कम धजम में बिया है खुदा
 तो मुदिनन कूँ धामी करे बा सगा

गया तो यहूव्या के सिर में गुमान
जुमा कर कुशावा बहे अस-अमान
अमा जीव का ये दो दोरे खुदा
किया सब यहूव्या कूँ घर सूँ अदा

ठार ठार = बगह बगह, दिमागी = दीवारें, रसे = नीचे, कस = छक्ति, ये = ये
यहूव्या के = यहूवियों के, सफाया = साफ हो जाना धामम = संसार, बसुमार = अवधि,
निसान = प्यवा, फरह = विजय, अजल = सृष्टि का प्रारंभ आसी = अस्त, गुमान =
परम बुद्धि = चीन, कुशावा = फँसा हुआ विस्तृत। अम अमान = धरण।

बड़े < बड़े।

टुटा कुपर सारा खहशा सू यू
हुमा रोज गेहन गये रैन जू
मिया साह ने किस-ए कूँ तिस में रगड़
के जू बक कूँ भेता बूगस में लकड़
अधे सात किस-ए उन्हींमें कमूस
जिसे साह मर्वा मिये आ बूसस
यहूवी भिले ये हुए सिर निगू
गनीमत मगी हात हए सूँ फुबू
फ़तह कर किले कूँ शहसाह सूर
फिरे लेके सबकर पर्यवर हुबूर

टुटा = टूटा जू = जिस तरह, तिस में = जय भर में, बक = बगुला (?) लकड़ =
लकड़वाना (?) रोज = दिन, रोगन = प्रकाशमान कमूस = एक खान, बूसस = विशेष,
सरनिपू = सिर झुकाने वाले गनीमत = मृत का भाग, फ़ुबू = अधिक, फ़तह = विजय,
पर्यवर = पर्यवर।

टुटा < बूट बग < बक।

पर्यवर खबर सुन के खुशहाल दिस
हुए तो भोगे आ असी सह सूँ मिस
वही मरहमत कर बहे यूँ रमूस
हुमा है तेरा काम हक कन कबूल
सबर इस फ़तह की हुई जो मुवी
वा धामम मे सुब पर किया आफरी

जगत में नहीं कोई तुज सार का
तूँ चाह मजनकर बड़ी भार का
जेत पीर पीरा में तूँ धूर है
सेरा होर नवी का न यक नूर है

धेये दा = धान घाकर हक बन = ईश्वर के पास, सार का = समान, बड़ी भार का = बहुत बहार का, धूर = धेछ, यकनूर = एक ही प्रकार पर्यवर = पर्यवर, खुदाहाल दिल = प्रसन्न मन, धलीचाह = हजरत धली मरहूम = इषा, रमूस = ईश्वर का सन्देश बाहक हजरत मुहम्मद। कबूल = स्वीकार, मुबी = प्रकट, धाफठे = प्रसन्न चाह कवनकर = हजरत धली।

धूर < धू।

नबी के पिछे सब में तुज है धरक
को चाह रमूसी तूँ चाह नजरक
उर बाद दिन उर 'चाही का काज
सरे हैक तूँ है उमे तकतो ताज

चाह रमूसी = रमूसों के वात्साह, चाह नजरक = हजरत धली, तकतो ताज = विरासन और मुकुट।

निय < पीछे।

-मसनबी

१

बनाई है सारी अपस कूँ रयन
इसी से बवाई रयन ने माहन
रयन के धेवर पर मुभायी दिस
सान की समायी हवायी दिस
बेदर जात टीका मगाय रयन
पटाया क तिरें उतारे माहन
नमिरी क मुमन्नफ़ धेवन साय जोड
जमों कू फ़नक सूँ सगे भाग हार
जमों मू हवायी हुनर मूँ जसा
गगन क मितायी कूँ स्याय मुसा

धान कू = धान को इसी से = इसी से, बवाई = बतवाई, बहवाई प्रसिद्ध हुई।
मोहन = मोहनी दिन। हवायी = हवाई (व व) एक धातिगवाही छटाया = पटाके

मलियाँ—मली धौंस—धौंसि सितायी—सिताये गुमायी—स्पष्ट मुसलफ—विद्वत् करने वाले हुनर—कौशल ।

धौंस < धौंसि सितायी —सितारा (ब न) ।

रयन ने मोहन कहवाई—वसिलगी में कलाकारक के साथ कई स्थानों पर अना-वदमक रूप से ने का प्रयोग होता है ।

बकर बान सिसफूस निस बे असक
खडी भाके खिदमस कूँ चाह की असक
दिखाई गगन का तमाशा निगार
तो पाई है 'साही' का अत गत पियार

२

सोने की सुराही सोने का है आम
सोना बोल पीती है भर भर मुशम
बँदर मुख सही का अधिक प्यार का
सोने का है सिसफूस सुरिष सार का
सोने किया कलियाँ कर करन म भरी
सोने की खोजीरी गमे में घरी

बकरबान—एक म सिधवाबी सिसफूस—सिसफूस, असक—बान अतगत पियार—
बहुत स्नेह, सार का—सनात सोने किया—सोने की कलियाँ कर—कलियाँ बना कर, करन
—कान, निवार—प्रेमिका आम—प्राप्त मुशम—आश्चर्य ।

सिसफूस < सिसफूस भाके < आकर, अतगत < अतिगत बँदर मुख < अन्न मुख,
सही < सही करन < कर्ण ।

सिना है सही का सोने सार का
सोना होर मोठी गमे हार का
सोने का खरीना सोने का है भाँग
सोने का है टीका सोने की है भाँग
सुधन जब सँवारी है पजन का नग
सोना भा सरन लग घर्या सीस पग
करम सुज पे 'साही' का विसता है भाज
सोने का धौंसल ओट बरती है साज

सिना—छाती भाँग—भाग सुधन—बूझती, भा सरन लग—सरन में आकर,
करम—बया ।

पत्नी प्रादित पाह का काम्य-संग्रह

सिना < सीना, सकी < सखी, घोग < भय, सरन < सरण, धर्या < धरिया सीस < सीस ।

गजस

(१)

सारी रयन तेरा मदन मुख तथा में भरपूर है
तुज सुबह मुख के सामन सीपक सब मलमूर है
तुज नैन की नरमी कने मेंयते हैं मोती भाबरू
या रूप की तू खान है या हुस्न की समदूर है
तुज बाल कासे देख कर बादल फिरें हिरान हो
तुज भास होर तीलक कन क्या चाँद होर क्या सूर है
तुज गाल की तारीफ सुन पक्षज छिपे जा नीर में
तुज रंग के परताब सू कचन का भुल रजूर है
'घाही' के विल सब हाठ भ भोगती मनाने मह सू
पस छोड़ दे हठ-तट जिते भी केती मगरूर है

मदन = कामदेव प्रेम । गम्भी कने = कामसता के धागे समदूर = समुद्र मलमूर =
मल्ल गठबी । भाबरू = हरजन रंजूर = दुखी ।

मुख < मुख समदूर < समुद्र, परताब < प्रताप ।

मुख = इन स्थान पर 'मुख' का प्रयोग 'मैं' सर्वनाम के पंथी के रूप में
हुमा है ।

(२)

जिस दिन ते तुमन साज लगा मनड़ा हमारा
उस दिन ते पिण्ड का हुमा मुख तन में पुकारा
दो मन धबल पस के देखे सन तुमारे
सटके त पमक मार करे हस्त बुबारा
फदि करे दो जस्त पुँधरवास खबासे
मुख नैन पनेरू के बदल तिस रने पारा
से हात में फुपमान मसे सास पिम्हाये
पौसार पौषम मार करे प्यार अपारा

बितधोर पिया सात भरे मह पियासे
'साही' सेती मम पीके सगा नैन नपारा

ममका—मम सुमन सात—सुम्हारे साम पिरत—प्रीति धरत—पहुने, बत्ते—
पुसकर, सैन—इसारा फाँस—फँदा पसंर—पली तिल—छरीर पर तिल की झाड़ि
का श्याम बिन्दु, नौसार—चतुर अपारा—अपार, पस—पस मसकर—बमचरी। साही
सेती—साही से।

सात<साथ सग्या<सगिया, पिरत<प्रीति धरत<धरत, फाँस<फँदा
सुनमात<सुनमाता पियार<प्यार।

सुमन—सुम स्पर्शनाथ का पत्नी का रूप।

(१)

छुछ भाँत हो पियारी भाती सैनन में जम जम
नित पेम में सटकरी दिसती नयन में जम जम
नैनों की छब निरखने अजरब भई खबीयत
हो जाँद हो पिया के लमके बहत में जम जम
घायें बुला पिया में दो बोस मुक ते कहुते
अंत्रित के घुट पिया के दिसने रसन में जम जम
फूली हूँ भत लुछी सँ हो बाध बाध मन में
जब हत में हत निभाकर फिरते जमन में जम जम

भाँत—जाँति पेम—प्रेम दिसती—दिखाई देती है, छब—छवि बूट—बूट,
रसन—रसना (कीम) नय—शराब नयनन—साक्षत रूप में।

पियासे<प्यासे भाँत<जाँति पियाती<प्यारी पेम<प्रेम छब<छवि,
अजरब<आरक्य अंत्रित<अमृत, बूट<बूट रसन<रसना अघ<अति हत<हत।

कह जिम्ह चुन रँगीने सेत्र में छिछा कर
ग्रामन्ध करी हूँ पिय सँ हिम मिस बतन में जम जम
भईग हो में पिया की दिसती हूँ छाये घम हो
कह भाव ते रिमा कर सेती हूँ मन में जम जम
हैं हैं छकी हुई हूँ पो वस्स का पियासा
पिब जीव होके हरवम बसते हमन में जम जम
कीती हूँ जब कसौटी रग-रग जो परबते
पिय सूर-सा भसफता बतिस लखन में जम जम

श्री आदिशिव साहजक कव्य-संग्रह

जब भाग मुज सेबारे सब ते सरफ में तारे
'शाहो' पिरत किये मुज राखे सगन में जम जम

कर किन्तु—कई प्रकार के ध्यान करी हुई—आनन्द प्राप्त किया है, सर्व म—
सदांमिनी धार्य—छाया, कर भाग ते—अनेक भावों से है—रोग, कौड़ी हुई—किया है
बक—पीव, हमन में—मुख में बतिस सछन—बतीस सखन पुष्प के बतीस गुम,
बस्त—मिलन ।

सर्व म < सदांमिनी है < रोग बक < बल, सछन < सखन < सखन । पिरत <
प्रीति ।

(४)

मुख मोड़ ते खी है चंचल ने गुमान कर
पसखों क सीर छानत भीहें कमान कर
भाजुद यू पत की सटकी में आ टिक्या है जिव मुख
भक्त्य प्रेम कूँ देके खती है यू जान कर
कुच हो कवन कमियाँ मछे धन के सिने ऊपर
कंचुकी की छर यू सन शिरे बीर जो तान कर
मुख देखते मोहन के हुई है मिमपुंगी
सोवन धकत भये जो दिमाये वा ध्यान कर
धमरित भरे धमर ते हुई है हमाव मुख
देम्या नजर जो भर के सबद धन के ग्यान कर

पनख—पनख तीर छानन—तीर बरपाती है, पत—पतल कुच—लगन कंचुद—
चोनी धन—चोनी का विशेष प्रकार से बनाया गया कपड़ा मोहन—माहनी प्रिया,
धन—पुवडी कादुक—कोमल शिमुपुंगी—प्रकृम्भता, हमाव—खीन, सबद—होट ।

चंचल < चंचल पसख < पसख धन < धन कँवल < कमल सिने < सीने,
कंचुद < कंचुकी धमरित < धमर, रवाग < देविद्या ध्यान < ज्ञान धन < धन ।

प्यारी हो कर की दिखे मुज सामने भक्त
सोवन मुँदर के मुलड़े कूँ बोले है भाग कर
निमल बदन चंचल का यता सरफ है मगर
मूरत मोहन की छोट है चोनी कूँ ध्यान कर
दिन रात रात पहर मही मन बड़ी का याद
धारव किया है हिरद कूँ मुख विषय ध्यान कर

नीरस के भाव धग सेकर धा मिसे मोहन
नेह के मन्दिर में निठ रख 'शाही' परान कर

भान कर—सूर्य कह कर मता—इतना छोटे हैं—चामती है, यमवसी—यम से
निवात करने वाली धारण—धारण, छाह—चंदा नीरस—साहित्य के नीरस बचन—शब्द
सुवन—सुवती, ।

भान < भानु चंदनी < चाँदनी धारण < धारण हिरई < हिरन, निठ < निठ,
सूरिज < सूरज < सूर्य ।

(३)

सुवन के रूप कूँ सोमे सूरया के बटी धारे
दंडी सो कहकसा की कर चौर सूरज हुए धाले
मने चदमे अघर मर के सर्वो में सब मिसाने से
तमन सू धन छकी होर है नजारे के पिये प्याले
कुँदन की यँद से दिसते तखन सुखर के बोजन हो
मकर नालम के ताजों पेन बैठे हैं चंदर वाले
कलावा की बसायी ले करें रन भुन कँवन नपूर
चरन तल साये महँदी तूँ जमीं पर सब उगे सामे
गले की गलछरी का भेद क्या 'शाही' का मन भेदया
मगर तखसीर लिख ल्या कर सुवन के ले गले डाले

(६)

तुज गाल पर मक का मिर्चा दिसता है मुज इस घाँव का
रोछन सफ़र में जमने ज्यूँ चाँद भसी रात का

बटी—छोने के उपकरण बाट । सूरिज—सूर्य छाह—चंदा कहकसा—
आकाश रंग ।

अघर—होट मर—छाह, छकी—तुफ़्त कुँदन—सोना बोजन—स्तन, यकर—
मीन, चंदरवाले—फाग में पहनने की विशेष प्रकार की बालियाँ कलावा—कलाइयाँ
पलछरी—घसे में पहनने का एक आभूषण ठुस्ती । मक—नाकून इस बात का—इस
तरह का चरम—सोच मर—होट, गबारा—वृक्ष, ताज—मुकट, मिर्चा—बिड़वा ।

तखन < तखन बोजन < बोजन नेपूर < नूपुर, भेदया < भेदिया लिख ल्या < लिख
लिया < लिख ला, मक < मक ।

नी मारित राहु का काव्य-संग्रह

तुज बुरफ़ मिथकीं खेक कर साँपां तजे भन पान सब
 तुज सब केरी साँसी भोगे साँवां सटे सुद रात का
 पतक कमानी खेक कर मारे पसक के तीर सूँ
 बस्मी हुमा बिस का हिरन साम्या निखां तुज हात का
 मुकड़ा सकी का ईव-सा दिसता भवभा रूप सूँ
 तिस केस पर चर का धँसल मलकात है राखरात का
 तेरे वजन धीरीं भोगे राखकर दसो खारी सगे
 मुख में उषा काड़ी लिया डर कर हिमा नावात का
 बुद बल पिरत का पाँव कर 'राहो' सूँ जब बाजी करे
 सेती मुसा मन का तुरंगे रख ल्या रखे सहमात का

साँपां=साँप (ब० ब०) भनपान=खाना पीना केरी=की, साँवां=साल,
 (ब० ब०) एक रत्न, सटे=छोड़ दिव मुख=होठ पात=छरीर, मुख में उषा काड़ी
 मिया=मुख में तुम रख लिया हिवा=हृदय, बुरफ़=बासों की बट, मिथकीं=कस्तूरी
 के समान सब=होठ, पतक=बीड़, ईव-सा=रूप के बाद की तरह चर=सेना,
 राखरात=एक लीहाट, धीरीं=मन्द, नावात=मिथी राहमात=परजन।

बुद>मुख पात>माथ, मुकड़ा>मुकड़ा सकी>मकी, बुद>मुख>बुद्धि।

(०)

राजन मिलने बुलावे जो बसूंगी पावें कर सिस सूँ
 पिरत सा पीव ते रहने ना पृच्छेगी कभी किन्त सूँ
 पिया ते दूर होन में लह्या है नाग विरह का
 जसी का याद समरित हो न मरना है मुजे बिस सूँ
 पद्या भेदबार जग में मुख पिया के बिसहने में
 नयन तल राख सागे यूँ मुझाबिस हा रखा निस सूँ
 महस्या क मनाने तहें न होवे धीर पित मेरा
 मगीहत धन न भावे मुख न हावे जन कृप इस सूँ
 नहीं परबा संबरन या मुख भूकन पिन्हावो मल
 केवन नेमों में धन भरे कमीना हो दिते मित सूँ

बीर कर निम=गिर को पीर बना कर, पिरत सा पीव ते=प्रिय के प्रेम लया
 कर, कभी निम नू=कभी निमी से लह्या है=लगा है, नाग विरह का=विरह का
 जना पीर निम नू=गिर के, महस्या के मनाने तहें=कभीपों के मनाने के निम

कुच=बाड़ा, परबा सँबरने का=सजावट की दृष्टि, शूकन=घामूपन, रोच=रिच, मुकाबिल=प्रतिस्पर्धी नसीबूत=उपदेश कमौना=गुणधन भिन्न=छाया।

रिस<शीघ्र पिरत<प्रीति कहीं<कदापि नहया<लडिया<सड़ा धमरि<धमृत बिध<निय, प्रोचकार<प्रबंधकार, भिन्न<निष्ठा सहैक्या<सहैकिया, मूकन<मूकन पिन्हाको<पह्लाको।

बिरह में ठास दे मुज कूँ पिया नीकुर हुए हैं भव
सँवेसा यूँ जो मेरा है बयाँ निक निक कहो तिस मूँ
भगर कुछ बोल कहवे मुज सूँ बोलेंगे सिरीजन तो
फिर उत्तर न देखेंगी कहीं मों गीट भा रिस सूँ
जो कुछ हट, दिस सूँ जो, मट सब, कहँ मन माबसा पिव का
रहूँगी सेवकी हो में पिया की रीज है जिस सूँ
बँडोरा भार कर शाहीँ बिरह के बोल बोल्या जो
जहाँ क आसक्री सुन तो हुवे बँहोच सब जिस सूँ

नीकुर=कठोर, निक निक=निक निक रिस सूँ=उसके सिरीजन=प्रिय भी गीट भा=भीड़ों में गीट बाँधकर चींहे बड़ा कर, रिस सूँ=जोब से जो कुछ हट=जो कुछ बिध है दिस सूँ जो=मन से बँडकर मट सब=सब छोड़ कर सेवकी=दासी रीज=प्रेम जयाव। बँडोरा=बिडोरा, जहाँ के आसक्री=संसार के प्रेमी लोग।

नीकुर<निपकुर सक सक=निक निक, गीट<गीठ रीज<रीज, बँडोरा<बँडोरा।

(८)

जिस धुत्को गाल के भोंगे शामो सहर किवर
तिस रूप के परसने कूँ हवे बहर किवर
सुन्दर फसक पे जीव के टीके की वेस जात
ठारे निवार डार वे फिरता खँवर किवर
गुनकार से जो गाल कूँ देख्या दरक के रोच
सट वे शफक कूँ जट के जल्मा सूर हर किवर
मुकडा बन्यो है पिक?, में रँग से पवस का सम
धमरि भरे धधर भोंगे भिसरी शकर किवर

हैंस जान से बनी है सखी जब गुमान कर
पूछे सभी सुखी कूँ सुखी की नजर किरर

धातिग करे है सास रंगीली सूँ पिरत कर
केसर मिनी है घोंग में तरी जिदर किरर
प्राही से सज में हुई सटपट मोहन ने जब
बारिक कमर त सिध गया है जर-कमर किरर

धरें=घास टीका=माघ का घामूषण निवार बार दें=स्वीकृत करके काम
दे, मर दे=राम द उठ के चम्पा=उठ कर चम्पा, सूर हर किरर=सूरज के चारों घोर,
किर=पीछ (?) जुहरी मात=बाज की सनें घोर कपोल, घामा सहर=सम्प्रा प्राप्त ।
हरे बसर=मनूष्य की सर्वांश, घुनडार=चमन केसर मिनी है=केसर से सुयन्त्रित है,
बारिक कमर=पतली कमर, सिध गया है=सिधक गया है ।

बार दें < राम द उठ के < उठ के मुकड़ा < मुकड़ा धमरित < धमृत ।

{ ६ }

पिब साठ रीज रहना सनघत इसे कते हैं
घप रीज फिर रिझाना सनघत इसे कते हैं
तुज नयन के नगर में सासन बतन किम जब
तब धंभुमन के सापी खुसबत इसे कते हैं
यै छावें हो पिया सँग सागी रही हैं घायम
यक तिम जुहा न होना बसमत इस कते हैं

सासन बतन निवे जब=जब प्रिय न निवास किया कते हैं=कहते हैं यक
तिन=एक सन फिर किरर=चारों घोर, सनघत=घानत, धंभुमन=समा
बनघत=एकाग्र दायम=सईब बसमत=विनाय ।

धातिग < धातिगन मिनी < मीनी किरर < किरर बारिक < बारिक मात < घाय
धरें < घारा ।

गुम होर गुनाब म्याम मूर्ह कुज फरक घबल त
यूँ पिब यूँ मिस रही हैं उसप्रत इसे कते हैं
हिग जाइ बिठ मुसाई में घापन पिया कूँ
धातिम जहाँ न बोमें हिममत इस कते हैं
मोहन में पाय गुज कूँ जब सज में घपस के
यो मान ने गुमास दरबत इसे कते हैं

पारो पहर पिया संगे कह भौत कर मदन के
सजोग हो रही हूँ इसरत इसे कते हैं
सासन के साथ वे मैं पूरी पुरो के इच्छा
तिरमोक में पनवाती धुहरत इसे कते हैं
हैं हैं रसन करी मैं शाही का नाँव मते
फिर फिर वो नाँव सेना राहत इस कत हैं

हित = प्रेम सौजन्य = सौत भी मान दे = बहुत सम्मान देकर, कह भौत = कई
प्रकार मदन = कामकाज पूरी पुरो के इच्छा = इच्छा पूर्ण करके तिरमोक = तीनों घोर,
पनवाती = बरनाम होती (?)। धुहरत = प्रसिद्धि फरक = अन्तर, प्रजन = सृष्टि का पारि,
उलफत = प्रेम हिकमत = उपाय इकरत = बचपन हैं = रोय रसन = बीन।

गर्ह < नहीं कुछ < कुछ, कते हैं < कहते हैं भी < बहुत भौत < भाँति संयोग <
संयोग, तिरमोक < तिरमोक धुहरत < राहत।

(१०)

दर्द इसते हुमा है मुज के मैं तुज कल नहीं देख्या
हुमा बेकल यता मैं कल के एक तिस कल नहीं देख्या
भजस ते जोड़हो अकसर धनी है तुज सँ मुज मारी
फिरा यूँ दिख कूँ देख्या ओ तुमे डलमुख नहीं देख्या
अँजू मुख भैन ते टपकन लग तुज बिरह के हावे
मुक्काविल दिरण दरपन धर बजुज कल-बल नहीं देख्या
तुमारे हुस्न की खूबी मुक्काविल जब चँदर सँ हुई
तबो ते मैं कलकी कूँ कभी निरमल नहीं देख्या

मुज के मैं = मुज कि मैं बकल = बेचैन यता = इतना एक तिस = एक
धन कल = बीन, जोड़ हो = बोड़ी बनकर, संयोग से। हुलियल = संदेह पूर्ण, अँजू =
भाँत, बिरह के हावे = बिरह के कारण दिरण = इच्छा शरण = माइता वहाँ =
तब से राहत = छुटकारा धामित। मारी = प्रेम, मुक्काविल = सम्मुख बजुज = दन
अतिरक्त।

हैं < रोय, रसन < रसन नाँवें < नाम दिरण < दूय, दरपन < दर्द चँदर
चँदर तबो > तब निरमल > निर्मल।

गुलाबी गुल कूँ जीती है तुमारे गात की सोय
घुँइया अलारखाने सय यता परमल नहीं देख्या

तुमारे मुक समोने पर भुंगट की घोट देख्या जो
 चंदर पर इस नबाकत सँ कहीं वादस नहीं देख्या
 खवासे बात में सूरत सुहानी तुम दिसे रागन
 यता परकास निस म्यान किसी मघमस नहीं देख्या
 दुई है तास भासम में तुम्हारी चाल सँ भक्तसर
 सत्क वसना तुमन जसा किसे मगस नहे देख्या
 खोजन जसे नयन म्याने दिसे काजस सँ सूका जव
 सफ़ा कागज पे इस खूबी सँ में जदवन नहीं देख्या
 तुम्हारी बुलक के पेची ने पिजे दिस कूँ सब मेरे
 पिरम का बाम ऐसा में कहीं भीकस नहीं देख्या
 हमार मन होर दिस में समे खटपट तुमन देखत

बुदेया = बुद्धा परमम = सुबानि बवाले = बुधराते सुहानी = सुन्दर, परकास =
 उजाला तास = तास (सकीठ) तुमन जसा = तुम्हारे जसा सूका = काजस का चिह्न,
 मून = पुताब का फून छोम = पनीना मघारखाने = यँबी की डूकारने नबाकत = कोमलता
 मममन = मघास, सफा = स्वच्छ, सूरी = विधेयता । पिजे = पीजे वाला बुना ।
 भोचन = बचन ।

मात्र < मात्र बुद्धा < बुद्धिवा परमस < परिमस मुक < मुक्त भुमट < भुमट
 मुहानी < मुहावनी, परकास < प्रकास दिस < निगा ।

(मून शनि का पु० १३४ उपलब्ध नहीं हुआ मात्र उपयुक्त शब्द सं० १०
 की कुछ परिवर्तन उत्पन्न नहीं हैं । ११ की प्रथम को निम्नलिखित दो वस्तुतया हस्त-
 लिखित प्रति के पृष्ठ १३३ पर संक्षिप्त है ।)

(११)

पिगस की रीत मूँ माहन कहँ हँस हँस मुनो 'धाही'
 मजब मुहरत हुई जग में हमारी हदन बाजी की

(१२)

मकम भूषण ते दुर चरु यू बनाय आप से सारी
 दिमावे नयन में जग के वरम सोमा की हो मारी

मोहन = मोहनी, शविश । दुर चरु = दी जाने, शय = फँस ।

पिरम < प्रेम, पिरत < प्रीति, दुर < द्वि सोना < सोनह ।

पीपना = पीपना, धुनना ।

सुरिज हल कर यूँ दुर चक पर लिख्या नक्काश भासिक हो
हरेक गुल बीज षदवस के दिसे टीका षड़त कारी
सुंदर भासिक में बेसर कुफूस दो हस्के करन विसरे
कनक खंजीर जुल्फाँ कर सुहावे रूप में भारी
दरुना राजे मानी का खर्चा पर कुफूस महकम कर
जिते गोहर मुहब्बत के रखे हैं आप में प्यारी
नकाश कर यूँ दुर चक पर करम ते यूँ कहे शाही'
मगर सनघसत सुँ मानी यूँ बिया है सब कसमकारी

(१३)

सुरिज = सुर्य दुर चक = बोंगो घाँवें तिय = लगी बरना = ठरोगा, ससक =
निकल कर, फिसलकर। झिझिर पर भगे हैं = धिन्ता के पंख हल कर = बोल कर,
नक्काश = चित्रकार, गुल = गुलाब का फूल कुफूस = ताजा हुस्ना = बेरा मंडन।
मानी = ईरान का एक पीराबिक चित्रकार। महकम = दृढ़, गोहर = मोटी सनघसत =
चतुर्थाई, मानी = प्रबं ।

सुरिज < सुरज < सूर्य ।

चमिया तीर ऐसा कर्माँ ते ससक
पवन कूँ झिझिर पर भगे हैं तलक
अछे गोडमन्दा बराबर कमान
मगर कस ते सह बीज देता मलक
परिमाँ से दिसे शह के हल तीर सब
क्राँदलदार होकर खड़ा है कलक
धिला छुछ सुहावे कर्माँ के उपर
कर्माँ पदमिनी सी पिसा है असक
भमकते हे पीसाव के गाम यूँ
सुरिज की निरन ते अधिक है भसक
भजव तीर पर कर धुंगल भास से
चल्या बाज सुरसाव पर जूँ धमक

पानी धारित घाह का काव्य-संग्रह

मुनफ़करा घसी घाह के हाथ का
मनुक तोर साम्या निशा के पसक

घस—ई कस—सक्ति तर—बहुत परिश्रम से बिसे—परियों की तरह दिखाई
दते हैं, यह के हाथ तोर सब—बादघाह के हाथ के सम्युन तोर, पदविनी—पसनी (एक
प्रकार की नायिका), पीसाव—इस्पात, भात—बाबा याता। मनुक—बोझकर, हमसा
करता हुआ। बोझकरा—इस वस्तु कमान—बनुप, केंद्रीनहार—बोपवर, मनुक—देवदूत,
प्रमक—प्राकाश, बिता—बनुप की प्रत्यक्षा। पुनन—पंचा, बाव—एक शिकारी
पक्षी, मुररबाव—एक पक्षी।
किरन < किरन।

(१४)

तुज भास के परताव ते पदा चंदर बाला हुआ
सुंदर गले में होय तुज ज्यू चांद कू हासा हुआ
नाचक(?) गुना देखा है जब बिखरे घसक तुज सीस पर
मुज हस्त कू तुज केस मू ज्यू मान पर आसा हुआ
तुज सोय की कूछ बास ते बासी किये हैं बास सब
भरक घपस के बास जो तो भूईं पे सब मामा हुआ
बेसर त टीका टीप कर देती मोहन जब भास पर
दिनकर दिसे सीसक यू सुव होर मांग सजियासा हुआ

मनुक—राजवान, सम्यक। परताव ते—प्रभाव से होय—मने की हकी (हंसनी)।
नाचक—(?) टीका—निलक, निशा—निधान, कवच। हासा—चोर, मगत। हस्त—
हाथ सोय—पसीमा।

परताव < प्रताप, चंदर < चंद्र, मुरे < भूमि सुव < सुव।

सोहे सुरंग डारे सकस सोचन में तुज तकदीर से
इस भयन की तासीर ते सब पीड़ बगामा हुआ
मंगने ह घससर नेन तुज मुज दिस से जाने के सबब
पुठिया दिसे बेबर(?) हो मुज मुका सो ज्यू सासा हुआ
मन मई यू एक सुंदर यू है यू काम है पूर मय मरे(?)
आग्या मगर म जाम तो मगर म मगर म

तेरे घर पर साल होर कासी घड़ी के रग ने
गुंजफत मरे हूँ बेल में बमने बमन सासा हुमा
साग पुनम का चाँद सो तेरे सुनकसन मुख बगल
सोकर बपस का नूर राव ज्यूँ रुई का गाना हुमा

सोहे—सोमिल हो रहा है। सुरंग—सुन्दर डोरे—डोरे (धातु के), शीश बंवाला—
गहकमहक घोस मशीन जादू। रंगते हूँ—बाहते हूँ से जाने के सबब—ने जाने के लिए
बेबर— (?) घुका—काजम की रेखा घड़ी—मिस्त्री की परत गुंजफत—बुझा फन
तकसीर—बादल भगव—घाले तापीर—प्रभाव परिधाय। बाम—प्यासा बमने बमन—
बमीचे बगीचे में सासा—एक घूल।

तुज < तुम गुंजफत < गुंजफत पुनम < पुनम < पुनिमा। सुनकसन < सुनकन।

इंदर सैबायाँ भारती तुज मुख सलोने के बदन
चाँद सूर सो दीपक दिहें आकास सो वासा हुमा
तरी मोहन माये की छत्र देख्या हूँ जब छाती पे तुज
तुज नाथे सो मुज बिरद कर सो माल अपमाना हुमा
तुज बाँह पर कंचुक हरी हार हाठ में मँहरी के गूल
सब भिम मजर में यूँ दिसे ज्यूँ फूल का डाला हुमा
भक्तसर दिसे तेरी सिफत सैसा मने मजनूँ के तई
इससे दिवाना हो यता जब जग सूँ निरवासा हुमा
रबि-ससि ते मिल 'साही' ने जब तोस्या है तेर हुस्न कूँ
दण्डी दिसे मुद बहकवाँ आकास सो वासा हुमा

सैबायाँ—सबाया वासा—वासी मासा—गले का एक धामपम मास—
मासा डाला—वासी मजनू के तई—मजनू के प्रति इनसे—इससे, निरवासा—
निराला (?) बण्डी—सराजू की बंडी सुद—स्वच्छ। बिरद—अप युज—घूल विफत—
विधेयता कहकवाँ—आकाश गंगा।

इन्दर < इंद सैबायाँ < सैबारिया कंचुक < कंचुकी मँहरी < मँहरी रवि <
बण्डी < बंड, सुद < सुद।

जाती पे तुज } दोनों स्थानों पर 'तुज' का प्रयोग सम्बन्ध कारक में हुआ है।
तुज नाथ }

(१५)

वीरम मजर सर ज्य जो उस शूक जक मस्ताना रा
मुप्रसम बिद्या मन्दिर धने रोशन बुकुन बाझाना रा

मा मान कर इस बोल कूँ प्रपस भटक व जव सली
 पा खदम सूँ बोली मुँजे बा मन मयो प्रफसना रा
 तिसके किराकोँ यूँ दिखे गुमबार सब प्रंगार हो
 य दिख मुसस्म हो मेरा बेव सबक परवाना रा
 येती मुसस्म नार कूँ देख्या नहीं कोइ खाब में
 तिसके नयन पुरसाक ते स्निहसत बुभद दुरवाना रा
 त्रिपिपी प्रविपी हितकिपी सखिपी कह साख हिरकत कर मना
 स्पापी बुवा मेर कने घाँ दिसवरे जानाना रा
 बो मन बसी घाने की पुन सुनते हुमा मुज कान सुक
 प्रठ घोऊँ यूँ पीने बदन पुर मी कूनम् पैमाना रा
 मौजूँ मुकप्रका बालने हर यक कूँ काँ ताकत धखे
 प्रवरिज खया छाही गजस सुनने बदन प्ररवाना रा
 (१६)

कैवल कैवल ते नमतर प्यारे हैं तर हाठ रग
 तिसकूँ मुरेग रेंपने बदन म्हेदी के पकड़ी पात रग
 हीरे समन का साज यूँ जाकर धिरे हैं खान में
 दरान तुम कह ना सकूँ सुन्दर है तेरा गाव रग
 मबुकर सा प्राकर नहूँ बठा है यूँ धरविद सुमिल
 सज मुख उपर मनमाहन बिसता है मुज इस बात रग
 एसी मुसस्म नार की तारीक कर प्रप रूप म
 नेकया नबर भर यूँ खया गमम है इसके साठ रग
 दा प्राप्रिया ॥ यक गजस छाही बँप्पा नी तब यूँ
 नादिर वा हर मक बाल सुन सगरे मिठे नावात रग

कैवल = कोवल तिसकूँ = उते मुरेग = धक्का रग पात = पता, दसन = दाँत
 मनमाहन = मन मोहित करन वाली इस बात रग = इस तरह का रग धरक्य = धपना
 रग यूँ गवा = इन तरह कहा मयतर = कोमलतर । गौडक = गर्द तर्ज, नादिर = धनुषम ।
 कैवल < कैवल < कोमल कैवल < कमल यूँही < मेहदी नावात = किसी पात <
 पता < वन समन < दान धरविद < धरविद < धरविद, मुसस्मन < मुससन, खया < कहा ।

(१७)

पहन मयी क प्रंग क में यूँ धरत कहूँ
 तिसके नयन कगाध यूँ मारी पिग्त कहूँ

याकूस का तिलक सोहे सुन्दरी के मुख पे यू
गोया विपक विपे हूँ यू चर के हस कहूँ
भागीरती सो माँग है तिसफूस बहमन
नित वी मलक किया सो वो तीरत की मत कहूँ
जब सास कर अघर कूँ सो वरपन में देखतें
दरपन में सास छाव ते सब भर जड़त कहूँ

अरत = अर्ध चन्द्र के हाथ = चन्द्रमा के हाथ में भागीरती = बंसा बाँप = बाँ
(विर के बाँधों की) बाँ = वहाँ, मत = मति, काफिया = तुक, याकूत = एक रत्न।

यक < एक, अरत < अर्ध कटास < कटास, पिरत < प्रीति विपक < वीरक,
भागीरती < भागीरथी बहमन < बहामन तीरत < तीर्थ, गत < गति बाँध < बंधा।

बेसर का हल्ला छव घू दिखे माहे नी नमन
तिसके सटकते मोती कूँ में विरस्पत कहूँ
छाठी पे कंट मास की सूरत कूँ खूब देख
वो मास मुख प दाम हो फिर में विफत कहूँ
'आही' कूँ पाम के बिड़े देती मोहन ने अब
तिसके कौन के घुन कूँ में अचरित आगत कहूँ

(१८)

अबल ते बिल मगा मुज सूँ इता तो की फिराते हैं ?
हमारे सुख भरे जिव कूँ तुमें की दुक में भाते हैं ?
सुरीजन के चँवर से मुख कूँ देखन कूँ हिमा ताने
पिरत कर भीर सूँ प्यारे हमन कूँ की सपाते हैं ?
हमारी चूक नई कुछ होर तुमें चुप चुप रुसाई कर
नहीं सो गीत की रीतों निपट हमना सिखाते हैं

ममत = समान, विरस्पत = बृहस्पति (ग्रह)। की = क्यों, भाते हो = बातें
सुरीजन = प्रेमी, तुमें चुप चुप रुसाई कर = तुम जग में ही रुखे बन कर, नहीं वो
के रीतों = वो रीति नहीं है उस रीति से हमना = हमें, माहे जो = मया बाँध, बाँ
विशेषता, बाम = बासा, फँसा। विफत = विशेषता गुण। अघत = अघिषत।

विरस्पत < बृहस्पति, कंटमास < कंठमास, अबल = अशक्त, दुक < दुःख।

यकस कूँ सेज में रख कर समुद में दास वो जिव कूँ
अपस के हाथ सूँ सेकर बोलाते होर खिराते हैं

हुतिन के दोल सुन सुन कर अबोले की हुए मुख सू ?
 प्रमोले बोस वाली कुच ना कुच कह की कुहाते हैं ?
 सवे हे सेज में प्रमसर हुतिन के हात के नख मू
 तुमारे गाल पर छत्र सू चंदर-सूरिष बिपाते हैं
 मूक पर गाँठ भा पिव ने फिराये मुख बिसे मुख मू
 प्रस ते मार कर सीरी कमी अब तो छिपाते हैं
 दिसावें रात के धेवे तुमारे गाल पर सारे
 ठमाने कूँ हठा हमना सर्वा की झूट खात हो ?
 रगीसे रँगमरे 'शाही सवाये पेन का सावक
 जगा तू रन सारो मुख नयन रँग में रँपाते हैं

समूर = समूह, शाल वी = बास वी प्रस के = अपने बोवाले होर सिपावे = बुवाले
 बीर ठपावे हुतिन = सीध अबोले = मूक, प्रमोष = प्रमूष कुहाता = बिहाता, बिपाते
 हैं = प्रमरते हैं मूक = मौह, मूक पर गाँठ भा = मौहों को बझकर, सिपे मुख मू = मुम्मे
 रिभाई रेता है रिचावे = रिचाते हैं, हठा हमना = हतना हमें सर्वा = सीकष
 शान = शाल की = क्यों बोवाले = बुवाले सावक = सगाव, प्रेम, ।

प्रमोने < प्रमूष, कुहाते < कुहाते, छत्र < छवि मूक < मी सर्वा < सी (ब ब)

(१६)

जगो हुआ है भ्रातृ जो सेता मिबूती छास की
 बैठा है प्रासन मार कर कोठा मरी स पान को
 सर पर जटा मु पारं बिषी होर फूल के गुल तम पे सब
 गुले का नद छिमी बजा बूरी सगाया सास की
 पुस्तक बना पत्तर की सब रेकी बिसे प्रमसर हो सुख
 शिम। दिवा है मर कर पूरी जगुठ को सास (?) के
 मारे कपी सी कान में मूर किपा है आपने
 गाह्या मर कर सब जगुी सने खबर पातास की
 जब भ्रातृ कूँ बोगी किपा साबित सकस मजमून से
 तव हुई गडम ताजी तरन 'शाही मवन भूपास की

मरी = मरी बगरी मिबूती = प्रस, मूक = पवित्र, पारं बिषी = बड़ की जटा,
 १६ = बटु निनी = गूनी जीव का बना हुआ बाबा । बूरी = पूस पत्तर = पत्ता रेकी =
 पारं दीपना दिवा = दिवा दिवा, नेक = बय जमून = जगाव जगुी = बड़े,
 [वा = वनी ।

सहन में—मिट होने में, सर जाती नहीं—बीछ नहीं जाती, सरना—बीटना, हुए होना। बाज—बिना, भाती—अच्छी समझती, बिना अकसोसे—बिना कुछ करने, हमर सूर—हम से, दन्द—समूचा, लबाई। अन्द—छन, फन्द—अर्धवास, अस्पन्द—बहर उठाने के लिए जलाये जाने वाले राई जैसे बाने।

साठी < साणी, दग्ग < दग्ग, बाज < बर्जना।

(५)

कोई जाओ कहूँ मुज साजन साठ
में नेह बँधी तू कीता घात
तुज बाद कर उसभिसती हूँ
लहलह तेस में बिस उसती हूँ
तन मोमबती हो जलती हूँ
इस जसने सूर ना टलती हूँ
सब रैन बिरह में गलती हूँ

(६)

कोई जाओ मुज साजन साठ
में नेह बँधी तू कीता घात
जो बिरहा जास्या तन कू अब
यूँ दूक बनेरा घेर्या तब
ज्यूँ हुनवन्त जास्या लका सब
अब कैसे सोसू मेरे रब
में मुखड़ा देखूँ पिय का कब

लहलह तेस में—बून के तेस में।

(७)

कोई जाओ मुज साजन साठ
में नेह बँधी तू कीता घात
कोई भाव, सुनो रे मेरा हास
पिय कीता मुज सूर जो गोटास
म बक ते नित अठ अंजू हास

नी धारिण दाह का वाप्य-संघट्ट

गस पेनी घाँसू मोती माल
मुझ यक यक पस है सख सख सास

(८)

कोई जाघो कहा मुज साजन सात
मे नेह बेदी तू कीता घात
सब सुख के मे प्रीधान सटी
इस बघन मूँ गुन म्यान सटी
मे ठन धनरन धनपान सटी
सब सोरिन मे मान सटी
होर बक धनन मुक पान सटी

प्रीधान = प्रहृष्ट धन । बक = बक, धंनू = धाँसू, प्रीधान = स्मृति, बघन =
पीठा घनी = छोड़ी धनरन = बहना धन पान = खाना पीना ।

बोगन < बोटावा (भराठी), बक < बकु, प्रीधान < प्रकधान, बेघन < बेदना,
धनन < धनरन धनपान < धनपान ।

(९)

कोई जाघा कहा मुज साजन सात
मे नेह बेनी तू कीता घात
मुन सहीनी यू कुन नारी है
पिब सात बिघोहाकारी है
यू पीर बिछू की न्यारी है
कुन सात सागी मारी है
पिब बाज जग घोंपियारी है

(१०)

कोई जाघो कहा मुज साजन सात
मे नेह बेने तू कीता घात
पब दूतिन मँग लप पाव लप
मे मौखों घट सुनगाय नले ?

मबीक = निकट १६
 ममकी = छोटी १७
 मग्हा = छोटा ४८
 ममन = मरमी ७६
 मरमी = कामसता ६२
 मवस = गया मबीन ५५
 मवा = मबीन ५६
 मवाना = मुकाना ३०
 माचक = (?) ७७
 निखस = स्वच्छ, निर्मल २५, ५४
 निमल = पवित्र स्वच्छ ४८
 निपाता = उत्पन्न करना उपजाता २५
 १० ६१
 निपाया = निपजाया उपजाया २६
 निवस = निर्वास ३२
 निरबाता = निराशा ७८
 निस = रात ५३
 नीदुर = निद्रुर ७२
 नेह = स्नेह ८३

प

पक = कीचड़ २७
 पकी = पक्षी २८
 पक्केरु = पक्षी ३८
 पठाया = भेजना ३० ६२
 पड़ना = पड़ना ४५
 पठ = प्रविष्टा ३२
 पठा = पठाकार्य ५७
 पत्तर = पत्ता ८१
 पधमिनी = पधमिनी ७७
 पन = किमु ६३
 पनवाना = बचाना होना ७४
 पय्या = पवि ६५
 परकाट = चोट, तलवार का भाग ४५
 परकास = प्रकाश ७५
 परगट = प्रकट ६६
 परताब = प्रताप ७७
 परवान = प्रवाण ४

परना = पड़ना ५४
 परमस = सुगन्धि सुगन्धित १३, ५४ ७१
 परस = पारस ३६, ८४
 परान = प्राण ७०
 परिमस = सुगन्धि ५१
 पल = क्षण ४७
 पमस = पलक ३६ ६६
 पमाना = पीचना चिकित्सा बुटी ठण्ड
 गाना ५७
 पावना = पम रचना ८६
 पाच = पंचरत्न (स्वर्ण हीरा नीलम ताव
 मोती) ५४
 पाच = हीरा पंचरत्न (") २५, ८७
 पाट = बरबादा ६३
 पाड़ना = डालना २५
 पाव = पत्ता ५ १४ ७८
 पाता = पत्ता २८
 पाल = पत्ता ३४
 पाया = पीब १
 पारंबी = बटबुख की बटा ८१
 पावक = प्राण ४१
 पिचना = घुनना ७१
 पिई = पी ३५
 पिन = ? २८
 पिन्हागा = पहणना ९
 पिरठ = प्रीति ९८ ७१
 पीठपाल प्रेमी ६१
 पीर = पीड़ा ८१
 पीब = प्रिय ३७
 पुरी = नगरी ३३
 पुर = बाड़ ४४
 पूरमा = भरमा ३४
 पेचना = देना ६३
 पेड़िया = बूझ ३७
 पैना = पहणना १२ ७७

फ

फंड = फंडा बाल ८४

पनी आदिम ताह का काव्य-संग्रह

फगवा = पटाका १३
फनर = परवर ४६
फनक = पटन ६८
फोफ = पंगड़ी (फूल) २३
फोम = ? ११
फनारा = फुहार ३०
फूँद = फूँडा ६३

ब

बैद = बंजन ३३
बैदना = बंजना ८३
बैरी = बाँधी ३१
बक = बगुना ६४
बचन = बचन ६३
बट = बाट १२, ७०
बड़ाबा = बूढ़ि ३२
बपाबा = मंगलगीत बपाई का पीठ २३,
३७

बरन = रंज २२ २३
बसंदर = बसि ४४
बही = बाँह ३७
बाचना = बचना ३१
बाज = बिना ८३ ८३ ८९
बाट = रास्ता ६७ ८६
बारिब = पनपा ७३
बाम = बसा २८
बामेबाम = पूरी तरह ८८
बाव = हवा २४ ४३
बाम = गंध २८
बिबन = बंधन ३६
बियाहाकारी = बियाहकारी ८९
बिरगन = बहगन ८०
बिग = बिना ७१
बिमरना = भूलना ४४
बुद बुहा = बहबुहा (पानी) ४२
बद = बूढ़ि ७८ ४
बूज = बूझ ६२
बबन = बेबन ७४

बेबन = निदास्त ४२

बेबर = ? ७८

बैन = बाणी ६३

बिदग = मूर्ख ६९

म

मैबर = मीरा २७
मड़कन = दुर्गंधार २८
मया = मय ३६
मया = माता ३६
मरम = भ्रम, रहस्य ४१
माँउ = प्रकार ३९ ६८ ७४
मापीरपी = मापीरपी, मंगा ७६
मान = मूर्ख ७०
माना = डालना ३१ ८०
माना = घण्टा लगना ८३
मार = बहार, घोमा ६३
मापी = मापन ६३
मान = मापा ७७
माव = डव घा ६६
भिनी भानी मुगमिउ ७३
मिबूडी = भ्रम ८१
मूर्ड = मूर्ख ४४
मुक = मोह ८१
मूकन = घानुगन ७२
मूनाग = गपनाम ४४
मूम = भूमि ४४
मूनिदा = भूमि ३७
मव = बेस ८१ ६३
मेनर = घेरा ४६
मोमिना = मोपी ३४
मीर = मीरा ४१
मी = मीन ७४

म

मौव = मौग (निर पी) ७२
माय = माय ३६
मनिक = मनिक ३

गायी ~ गाय ३३, ३९
 भाग ~ भाग ३८
 भाग ~ भाग ७४
 मामा ~ माता का एक भाग्यवत् ७८
 मिठाई ~ मिठाई २६
 गिरमिया ~ मुग ३९
 गिरमिया ~ मिठाई २९
 मुजत ~ धंधीका कता ३४
 गुन ~ गुण २०
 मुनडा ~ भाइति ३३
 मुकुट ~ गीती २४
 मुज ~ मुकुट ८१
 मुया ~ मुय ३०
 मुरझा ~ मुरझा ४१
 मू ~ मुह ९२
 मेन ~ मेन भावत २३
 मेहरे करतार ईश्वर की सेवा ६०
 मोहू ~ मुह ६३
 मोहल ~ मिग ६५, ९२
 मोहम ~ मिगिया ७५
 मोहिवा ~ गुमा करने वाला ३४
 म्गाने में २८ ३४

म

मर्कग ~ मर्कग ६२
 मता ~ इतना ७० ७४
 मबी ~ इतनी ३७
 मू ~ इत २७
 गु ~ यह २२
 मेरी ~ इतनी २७

र

रैन रैन ~ रैन बिरंगा ४६
 रैन ~ रैन (भायरा) ३७
 रगत ~ रक्त ४४
 रज ~ राज ४४
 ररात ~ रवि २३
 ररात ~ भीम २३ ३३ ३६, २९

ररात ~ ररात, मधुर २३
 राय ~ राजा ३७
 रायत ~ भीर ४०
 रीज ~ प्रेम ७२
 रीत ~ रीति, हव ८०
 री ~ रोग ७४
 री ~ रोग रोग ४३
 रेवती ~ रेवती (गुण) ३३
 रेका ~ रेता ८१

र

राह ~ राह ७७, ८१
 राक ~ राक बगला (?) ६४
 रात ~ रात ८४
 रात ~ रात २४ ३१ ३३
 रात ~ रात, गुह २७
 रात ~ रात रात रात रात रात का
 रात २८
 रात ~ रात ३१, ३९
 रात ~ रात ३९
 रात ~ रात ७३
 रात ~ रात ८१
 रात ~ रात ८१, ८०
 रात ~ रात ७२
 रात ~ रात ३० २३
 रात ~ रात ३३
 रात ~ रात ८४

र

राई ~ राई ३१
 रात ~ रात ३१ ३९
 रात ~ रात ४४
 रात ~ रात २९
 रात ~ रात ४१
 रात ~ रात ४८ ३७
 रात ~ रात ४१
 रात ~ रात २४, ७२, ८०
 रात ~ रात ८३

دوہرا

سَيِّدُ بَغْرَتِ مَنْ لَوْ كَهِرِي أَوْ زَيْتًا لَكُونُ سَكَا
سَهْدُون تَهْمِين هُوِي كُونِيْدَ اَوْنِ مَحْ تَحَا نَحْ

بَنِيَهَا كَحَصْرَتِ تَاغِي مَعْدُودَد

مِيَا بِمَلَا فِي مَحْضَرِ تَرْس

اَسْپَا نِسْ هُوتِ دَس
میریل

سَرْدَنَهْتِيْنِ اِيْنِ مَحَلِّ رَا حَوْتَحْت

دِي هَلْ رَهْمَتِ رَا اِيْمِيْكَانِ لَوْرُوْتَحْت

مَرْوَن نَاذِ عِشْرَتِ دَرِيْنِ رَمْنِيْكَانِ

كِرِي نَاشِدِ هَيْشِلَه حَلَا اِيْتِيْ يَسَا

दोहरा

पिया बिछुरत मत सूक परे
घीर नयनां कू सुझ नाह ।
सुम दिन तवही हायगा
पिय भावन मुज ठाह ।

पहमी हा कि हजरते घाह
फरमूदा मन्द

मियाने मलाई भीतर रस ।
भास पास भूत दस ।

(नारियल)

सखद राहनगीं ई महम रा चू छम्त
देहद बोहरा रा ई मकां नूर को मस्त
फुनू बाद इगारत दरो वरम गाह
के बाघद हमगा छलायत्र पनाह

१० १०१ घीर १०२

शब्दावली

घँप = घंघ ६६	घपघ = स्वयं घपना २८ १९
घँपन = घाँपन १७	घपाय = घपार ६८
घँगिया = घाँगी ३३	घपे = घाप ही स्वयं २२, १२
घन = घाम ११ ६३, ७३ ६०	घवक = मोह ७१
घँवेटी = घँवीटी ४१	घवलीच = मिची ६६
घँवम = घँवति ६६	घबोमा = मूक ८१
घँवू = घाँवू ८३	घमन = पवित्र २३
घँरना = प्राप्त होना १४	घमरित = कवचिरोप १४
घब = घाम १४	घमास = घमासत्वा १६
घबर = घाकाय १०	घमोली = बहुमुख १६
घवर = एक सुमन्वित पदार्थ १७	घरन = घघ तात्प १७ ८०
घगन = घावे ४८ ७८ ६१	घरमी = घारमी हर्षण २७
घपना = घपिक ३६	घरांग = घराँव ६६
घवरन = वचन १३	घनक = वाय ६६
घवन = पर्वत १०	घवन = घवन पहने प्रथम २४
घवना = घुम्बी ४२	घवारा = विनष्ट १७
घवुन = घम्यय ७७	घममान = घाममान ४१
घाँवा = घर्षना घरवय १६	घा
घपना = रहना होना ७७ २४ ७६ ३६ ७७	घाँवू = घाँवू ४७
घवू = घनी घाव बी २७	घारव = घारव ७०
घन = घनि बहुत ७३, ८७ ६६	घागिग = घाँगिन ३३
घनवन = घविष ६६	घनी = गृही १७
घवा = वा २७	घाव = घगाव ११
घपाय = घपार १७	घ
घघर = हो २६, १६ ७	घछना = घछना ७४
घनान = घनान ७१ ८३	घना = घना ८ १६
घने = घाहना हर्षण ६३	घनने = घनन ७८
घपाय = घपय ४३	घ
घरना = घान होना १६	घिन = घिन ७८
घामन = घना ८८ ७६	

उ

धली धारित धाह का साम्य-उह

उचामा = उठाना ४१ ११ ६२ ६१

उठना = उठाना ७१

उद्यम = नक्षत्र समूह ५१, ८७

उड़ी मारना = तीरों के लिए पानी में विशेष प्रकार से कूटना ४२

उदक = पानी २७

उलास = उत्साह ११

ए

एकप = एकाकी ४५

ऐ

ऐचना = सींचना ५१

ओ

ओटना = धामना ७०

औ

औकल = निरंतर, बेचैनी ७५

औनल = धविगत ८०

औमान = स्मृति ८३

औसाम = साहस १७

क

कंभुक = बोली ६६

कंटवाल = यत्ने का समुपय विशेष ८०

कंवल = कोमल ७६

कई = कहीं ४२

कई = बहुत ७४

कवल = कावल ५२

कटी = स्वयं खंड (क व) ५७

कटा हूँ = कहता हूँ २४

कटाप = पंक्ति ५७

कवम = कवम्ब (बुल) १७

कपी = कभी ४२ ७१

कन = पास ५६ ६०

कने = निकट, पास ५१ ६६

कपाली = कापामिक १००

कमी = कम, मुटि ५२

कमुव = कुमुव ६२

करतार = ईस्तर १७ १६, ४६

करम = काम ६१

कल = मधीन ४८

कसप = कस्य १६

कसाम = सुराधिकेता ११

कवागा = कटागा ६५

कस = दक्षिण सार ११ १६, १४ ७७ ६२.

कचना = कचना परीखा सेना २२

कहूँ कहूँ = कहीं कहीं ६४ ६५

काव = बीवार ५१

कवि = कहीं से २७

काकड़ा = धंधि मिनीला ४६

काड़ी = दूध ४१

काम = कामवेव ५१

कामवार = कार्यरत ६१

कारे = काले ६१

किते = कहीं कितन २२

किबर = कहीं ७१

कितन = कृप्य ६५

कीटा = क्रिया १८, ५४

कीबाइ = क्रियाइ ११

कीसी = ताली ५६

कुवन = सोना ४१, १७, ७०

कुंभा = कुप २६

कुच = कुच ७२

कुच = लग्न ६६

कुकागा = भिङ्गागा ८१

कुवल = निर्मल सीव ५२ ५६

कुमल = कोमल २४

कुभास = कसोस २८

कूटना = सींचना २२

केटी = कितनी ११

केतुक = कितना २८

केतुक = केतकी (पुष्प) ५१

केटी = की ७१

केरे = के ६१

ट

टीक—टीका, सिर का धामूपन विशेष ४८

टीका—टीका

ठ

७१

ठसा—ठप्पा १६

ठाड़ा—छड़ा १६

ठार—जगह ६४

ड

डसना—सर्प काटना ४२

डोंगर—पर्वत ४१

डोंबाना—दुबाना ८१

डोरा—डोरा (धातु) ७५

ड

डर्—प्रति ११ ६१, ७८

डगट—विस्तार, फर्ष २७

डङ्कना—परजना २६

डङ्कना—डङ्कना ३०

डङ्कना—डङ्कना की ध्वनि करना ४२

डर्—उब ११ १८ २२ ७४

डम—सरीर २४

डमक—डक १० ६०

डम सिर होना—सिर नीचा करना ४६

डमे—नीचे १४

डाम—डाम (संघोष) ७१

डास—बंटा ७६

डितने—उठने ११

डिते—बहा ६१

डिय—स्त्री ७६

डिया—स्त्री ६५

डिरजय—तीन लोक १६, ६०

डिरलोक—तीन लोक ७४

डिरिका—स्त्री ६५

डिस—शाय ७४ ७४

डिस—सरीर का व्यापन विज्ञ १०

डिस—उब १६ ४० ५१

डङ्कना—डङ्कना १७

डङ्की—यति, संघासी १२

डमाना—प्रकट करना २६

डम—स्वाधी, डमसीव १७

डमजम—स्वाधी २५

डय—यद्य ६१

डौ—बहा ६१

डाह—जाति (पुष्प) ११

डाङ्कना—डङ्कना ६१

डामा—डम देना प्रसव करना ११

डिते—डितने ४० ४१

डिरर—डिरर ७१

डिते—डितने ४६

डिया—प्राप्त लोक १४, १६

डग—डो ६१

डुपुल—डुपुल ८१

डुबी—डुबी (पुष्प) १२

डू—डू—डिम तरह ७७ १४

डूई—डूई (पुष्प) ११

डूबी—डूबी (पुष्प) १२

डौती—डितनी १७

डौते—डितने ४० ४७

डोम—डोम १

डोबन—डोबन स्तन ११ ११ १७ ७०

डोसरो—डम डक ११

डोवी—डोविषी ११

डू—डित तरह २२

ड

डकारा—डकारा ११

डबर—डुपही १० १७

डमका—डमक २२

डौ—बहा ६४

डौज—डौज ६१

डौज कर—डौज कर २१

डिता—डमक १०

तिष्ठकर = उषका ४१
 तीबा = तीसरा ४६
 तीर धानना = तीर बरसाना ६६
 तीसक = तिसक ७७
 तुटना = टूटना ६४
 तुमना = तुम्हें ४२
 तुरैय = बोझा ४३ ३६
 तुल्य = बराबर ४२
 ते = से २४ ३५ ३२ ७४
 तेनी = तेनी समान ३६

य

बाबा = स्तन्य ३१
 बाकना = बकना ६३
 बात = बात ३२
 बामा = बामी ७८
 पीबा = नाड ४३
 ये = से ४२

व

वंड = मुखा ६३
 वंडी = वंडी (तराजू) ७८
 वड = गजुवा ५४
 वडा = गजु ३७ ४३ ६३
 वडना = घुमना, घिगना ४२ ४४
 वडना = घाटना ३६
 वरपन = घाड़ना ७४
 वरिषाव = ममूह ४२
 वरुना = तरोना ७६
 वसन = वनि २३ ७८ ६४
 वागना = बगना ८६
 वाटना = वाटना ६२
 वाट्या = वाटा ८६
 वाहिम = बनार २८
 वागना = वागना ८६
 दिमर = दूधना ६३
 निाना = बगना ८६

दिया = ३६
 दिरय = दृष्टि ७४
 दिवात = भित्ति ६४
 दिसना = दिखाई देना ३८, ४८ ६२
 दिसाना = दिखाना २३
 दिस्या = दिखाई दिया ३१
 दिष्ट = दृष्टि ४७
 दीठना = दिखाई देना ३०
 दीस = दिवस ३१ ३२
 दुमस = दुमना ३१
 दुर = दो २२ ७५, ७६
 दुराई = बकपन बड़ाई ३४
 दूतिन = लीन ३७ ८१ ८४
 दूतिया = लीन ३३ ३३
 दोन = धूना पासना, बान २६, ३४
 बाम पुन विपाय ३३

घ

घेंडोर = डिंडोर ७२
 घनना = घुमना ६३
 बकपडना = बकना बटपडना ४१
 बड़ी = बिरनी की परत ७८
 बन = घुमना ६६
 बमकना = दीठना घुँवना ७७
 बरन = बरती पृथ्वी ४७ ३० ६१
 बरनिया = पृथ्वी ४०
 बमना = घुमना ६८
 बाक = बानक ४७
 बान = बानि बगार ७०, ७६, ८४
 बाजा = दीठा ३३
 घुँवना = घुँवना ७४
 घुमना = बगना २६
 घुमना बगना ४३
 बुर = घोर ६३ ६०
 घुरी = घुम ८१

ग

गड = गड ७

घनी भाषित छाह का काम-संग्रह

मजीक = निकट १६

मनकी = छोटी १७

मन्हा = छोटा ४८

ममन = मरमी ७६

मरमी = कामसता ६२

मबल = मया मबीम ११

मबा = मबीम १६

मबाना = म्हुकामा ३०

माचक = (?) ७७

मिन्न = स्वच्छ निर्मल २१ १४

मिन्म = पवित्र स्वच्छ ४८

मिपाना = उत्पन्न करना उपजाया २१

१० ६१

मिपाया = मिपजाया उपजाया २६

मिबल = निर्मल ३२

मिरबासा = मिरासा ७८

मिस = रात १३

मीदुर = मिष्टुर ७२

मेह = स्नह ८३

प

पंक = कीचड़ २७

पंली = पली २८

पखेक = पली ३८

पढाया = मेजना ३० ६२

पङ्गना = पङ्गना ४१

पव = प्रतिष्ठा ३२

पवा = पवाकार्य १७

पसर = पसा ८१

पसमिनी = पसमिनी ७७

पन = क्रिन्तु ६३

पनवाना = बबनाम होना ७४

पम्या = पमि ६१

परकाट = चोट तसवार का घाव ४१

परकास = प्रकाश ७१

परपट = प्रकट ६६

परताब = प्रताप ७७

परपान = प्रपान ४०

परला = पङ्गना १४

परमल = सुयमि सुयमिठ १३ १४ ७१

परस = पारस ३६, ८४

परान = प्राण ७०

परिमल = सुयमि ११

पम = दाप ४७

पमल = पमक ३६ ६६

पमाना = चीखना बिस्माना मुठी तर
वाया १७

पापना = पम रजना ८३

पाँच = पंचरत्न (स्वर्ण हीरा नीलम मात
मोती) १४

पाच = हीरा पचरत्न (") २१, ८७

पाट = बरवाजा ६३

पाङ्गना = बासना २१

पाठ = पठा १० १४ ७८

पाठा = पठा २८

पाव = पठा ३४

पाया = पीच १०

पारवी = बटबुल की बटा :

पाक = प्राप ४१

पिजना = बुनना ७१

पिई = पी ३१

पिन = ? २८

पिम्हाना = पहणना ६

पिण्ड = प्रीति ६८ ७१

पीतपाल प्रेमी ६१

पीर = पीड़ा ८१

पीव = पिय ३७

पुटी = मयरी ३३

पूर = बाड़ ४४

पूरना = भरना १४

पेखना = बैसना ६३

पेझिया = बुल ३७

पैमना = पहणना १२ ७७

फ

फँव = फँवा, जान ८४

कटाखा = पटाखा ६५

कउर = परवर ४६

कनक = पटल ६८

कनक = पल्लवी (कुल) २३

कान = ? ६१

कुपाट = कुहार १७

कुँव = कुँदा ६१

क

कैंव = कपल ३३

कैंवना = कैंवना ८३

कैंवी = कैंवी ३१

कक = कपुला ६४

ककन = ककन ६५

कट = काट ३२, ७०

कड़ावा = कूडि २२

कमावा = कैंवमगीत कमाई का मीठ २५, ३७

कन = कन २२ २५

कनवर = कन ४४

कहो = कहो ५७

काचना = कचना ३१

कान = काना ८३ ८३ ८३

काट = काटना ६२ ८६

कारिक = काना ७३

कान = काना २५

कानकान = कुरी तरह ८८

काव = काव २४ ४३

कान = कान २८

किलन = कैंव ५६

कियाहाकारी = कियागकारी ८६

किलनन = कुरी तरह ८८

किल = किल ७१

किलना = किलना ४४

कुर कुरा = कुरकुरा (काना) ४२

कुर = कुरि २८ ४०

कुर = कुर ६२

ककन = ककन ७४

केकस = निधन ४२

केसर = ? ७८

कैन = कानी ६३

किलन = कुरी ६६

म

कैंवर = कैंव २७

कककन = कुरी ५८

कमा = कमा ३६

कमा = कमा ३६

कमन = कमन ४१

कान = प्रकार ३६ ६८ ७४

कागीरली = कागीरली, कमा ७६

कान = कुरी ७०

काना = कानना ३१ ८०

काना = ककना कचना ८३

कान = कान, काना ६५

कापी = कापी ६३

कान = काना ७७

काव = कान काव ६६

किली = किली मुगलि ७३

किली = किल ८१

कुरी = कुरी ५४

कुर = कुर ८१

कुरन = कुरी ७२

कुरी = कुरी ४४

कुर = कुरी ४४

कुरी = कुरी ३७

कुर = कुर ८१ ६५

कुर = कुर ४६

कुरी = कुरी ३४

कुर = कुर ४१

कुर = कुर ७४

म

कुर = कुर (कुरी) ७६

कुर = कुर ३६

कुर = कुर ३६

माही—मस्त ३५, ५६
 माम—मर्म ३८
 मान—मादर ७४
 मासा—मसेका एक धामूपय ७८
 मिठाई—मिठास २६
 मिश्रिया—मृग ३६
 मिन्हना—मिलना ६६
 मुबस—घेबीका फल ५४
 मुक—मुल ६०
 मुकका—भाहति ३३
 मुकुत—मोती ६४
 मुज—मुम् ८१
 मुया—मुल ३०
 मुरम्ना—मुरम्नाता ४१
 मू—मूह ९२
 मेम—मेम बावस ६३
 मेहरे करवार—ईश्वर की दया ६०
 मोसू—मुम् ६३
 मोहन—प्रिय ३५, ६६
 मोहन—प्रेमिका ७३
 माहिया—मुम् करने वाला ३०
 म्याने—मैं २८ ३४

य

यकंग—यकेना ६२
 यता—इतना ७० ७४
 यबी—इतनी ५७
 यू—इत तरह २७
 यू—यह २२
 येटी—इतनी २७

र

रंग रंग—रंग बिरंगा ४६
 रंगा—रंगा (धातु) ५७
 रगत—रक्त ४४
 रज—राज्य ४४
 रसत—पक्षि २३
 रघन—जीम २३ ३३ ३६, ६६

रसास—सरस मकुर ६३
 राय—राजा ३७
 रावत—बीर ४०
 रीज—प्रम ७२
 रीत—रीति, ईश ८०
 र्हे—रोम ७४
 र्हे र्हे—रोम रोम ४६
 रेवटी—रेवटी (पुष्प) ३३
 रेका—रेखा ८१

ल

लह—लहूत ७७, ८१
 लकड़—लकड़ बरवा (?) ६४
 लख—लाख ८४
 लप—लक २४ ३१ ३३
 लयन—लगा मुहूर्त २७
 लाग—बीर मार्ग मकान पर बड़ने का
 लबाव ३८
 लाब—लज्जा ३१ ८६
 लाबना—सरमाता ५२
 लास—प्रिय ७३
 लासन—प्रिय ८६
 लासक—लगाव प्रेम ८१ ६०
 लिम्ना—लिम्ना ७२
 लेलना—लेलना ३० ६३
 लोभिया—लोभी ३८
 लूक—रक्त ८४

व

वर्ह—वही ३१
 वग्ग—वोग्ग ३१ ५६
 वते—उतने ४४
 वरक—वर्षा २६
 वस—वस ४१
 विरह—वस ४८ ५७
 विरह—विमोय ४१
 वी—वही २४ ७६ ८०
 वेवन—वेवना ८५

स

संभाव = साय २४ ८४
 संवरना = सजना १२, ७२, ७८
 संवर्षा = सखाया २४
 सज्ज = सब २५, ८२
 सज्जना = संयुक्त ३८
 सज्जनी = सब २३
 सवरी = सर्वपूर्व ६४
 सखा = सखाया ३४
 सज्जना = सज्जना सज्जना २३ ३३,
 ४३ ५७ ६१ ८३
 सज्जना = पूरा पढ़ना सीतना ८३
 सखीया = सखाया ८६
 समू = साथ ३१
 सज्जों का = सबको ३३
 सम = समान २०
 समस्तुर = समस्त ८१
 समस्तुर = समस्त ९७
 समस्तुर = समस्त ८१
 सरय = स्वयं २४
 सरय = सरय २६, ९६,
 सरयया = सरययित ३३
 सज्जना = सज्जना ४६ ७९,
 सहावी = हजरत मुहम्मद के साथी, प्रमुख
 ९०
 साई = सातक ३८
 साई = सातक २९ ३६
 साजना = सज्जना ४६
 साज = साथ ६८
 सामिया = सामी ३६
 सारवा = गमान ४३ ५४ ६९
 सार हाजा = सज्ज हाजा ४३
 सारे = सर्वत्र ६३
 गिगी = गीत ८१
 गिराना = गिराना १०
 गिराना = गिराना २९
 गिरा = गीत २७

सिरीजन = शिव ७३

सिम् = शीत ७१

सिम्फूल = शिरका घामूपम ६६

मुद = मुद स्वच्छ ७८ ८१

मुद = पाद सज्जना ४३, ७१

मुपन = मुपनी ६६ ७०

मुपन = मुपन ७८ ७६

मुपान = दिक्कान ४२

मुपन = मुपन ७६

मुपन = प्रम ८०

मुहाना = घामित ४७

मुहानी = मुपन ७६

मुहा = काव्य का शिल्प (पाद में) ७५,

७८

मुर = मुर ३६, ४६

मुरिज = मुर ७०

मुरिया = मुर ६८

मुरी = वे २६

मुरी = वे ३३ ४३

सेने = स ६३

सेवकी = दासी ७२

मम = साथ नाम ३४

मम = इलाहा ६८

मोन् = बरन ३६

सोहार = सोहार नाम ३७

सोहना = सोहित होना ७८, ६३

सी = सीप ८१

सौज = सज्जनी ७४

स्पारे = सब २८

ह

हस = हस ३४

हस = हसर सखाई ६३

हसाय = साकार ३६

हस = सज्ज ३३ ७२

हसना = सज्जनी होना सज्जना ४२

४३, ४३

हय—हाथ ४६, ७७
 हमन पर—हम पर ३६
 हमना—हमें ८२
 हरन—मृग ३३
 हमद—हृदयी २७
 हवाई—एक पातिसबाजी ६३
 हाँस—हँसती (मत्ते की हँसी) २७
 हाव—हाथ ८०

सभी पातिस बाह का क

हाव बढ़ना—मिसना ४२
 हाने—कारण ७४
 हिय—प्रेम ७४
 हिया—हृदय २८, ३७, ७१
 हैहाव—हाथ हाथ ८३
 होर—घीर ४१
 होमर—मिथ ३२
 हीसना—प्रोत्साहित होना ६३

अरबी और फ़ारसी (सत्तम तथा सद्भव)

अ

अंगुरा = उ मसी २६
 अंगाम = परिधाम ८६
 अंगुमन = समा २३, ७३
 अंगरी = अंबर नामक सुगन्धित पदार्थ की
 सुमन्विता ६१
 अंबिया = सन्त ३७
 अगनिया = धनी ३६
 अजल = युगारि २६, ३६, १० १४ ७४
 अजा = लफ़ाई १६
 अजार = पीडा ३६
 अजकिया = चरईखाना, अर्थात् ३८ ३६
 अना = प्रधान ३६
 अतारिद = कुब ३३
 अतारगाना = मंषी की दूकान ७३
 अदल = ग्याप ३३
 अनाकत = ग्याप ३४
 अदु = धान ३२ ३१ ३८ ४१
 अदवर = अक्षानाम ३७
 अनामिर = महामून २४
 अजहल = खेळ ४६, ३४
 अजु = अक्षि ३२
 अजुमर = बडा मुकुट ८२
 अजु = बाजू ४४
 अजुमर = आदुमर ४४
 अजर = अर्ज ३६
 अज = बारन २७ ६०
 अजल = आचरण ८६
 अजा = अकट ६०

अरबावे दल = धनी लोग ३१
 अरसी = बधू ४८ ३२
 अरपप = घोमा सजावट २७ ३७
 अरम = अरबा ३८ ६० ६१
 अरत = पहल प्रथम ३७
 अरतार = अर ४०
 अरतन = राह ४४
 अरता = अर ४४
 अरसद = नजर उतारने के लिए प्रयुक्त होने
 वाला रस या दाना ४१ ८१

अरत = घोड़ा ४३
 अरिफ़ा = पवित्र व्यक्ति ३७
 अरिफ़ा = बरे लोग ३७
 अरुबाम = आरोग ३१
 अरुमर = हजरत मुहम्मद २६
 अरने मुग़न = बरि ६२

आ

आदाद = आराम ८६
 आदिय = धान २३, ४१
 आदगाव = गुर ६
 आदरी = अर्जना
 आद = धानी २४
 आदक = अर्जिया ६७
 आरिद = ईरवर ८८
 आन = बटी की मन्गन ८८
 आनन = अर्जान २६ ३८ ६ ६४
 आना = धान ३० ६१
 आनी = नगर ४१ ४३, ६४

धासिक — प्रेमी ८६

धाहो धाफसोस — लंबी साँत धीर खेव २६

इकवास — बैसव ८८

इछमास — घीस ६०

इनधाम — पुस्कार ८६

इनव — धगूर २८

इनामत — हुपा धनुषह २६, ४३

इबलीस — धैरान ८६

इबावत — मक्ति २३ ३६

इबारत — लेखन ८४ ८७

इमाम — धार्मिक प्रधान ३६

इमियाव — धन्तर ८६

इरफान — ईस्वरज्ञान ८८

इरम — ज्ञान ३३ ६०

इरमदामी — विद्वत्ता २६

इरमे हीमिया — भूतविद्या ३३

इरस — नाम २६ ३० ३१

इखरत — बैसव ७४

इस्क — प्रेम २६, ४०

ठ

ठमक — महाराई ५६

ठस्ताव — मुक धार्मिक ४७

ऊ

ऊद — ऊद, एक सुगन्धित पदार्थ ८६

ए

एनिया — हजरत मली का विषय ३६

ऐ

ऐह्वराज — बचना दूर रहना ६१

ओ

ओय — ऊँचाई २६

पीनिया — पीतराग ६१

पीनाक — पुष बिसेपता २२, ४६

क

कतदार — दीपवर ७

कली धाविस पाह का काष्म-त-धह

कलकोत — भिलापात्र कर्मधनु १००

कजा — पीत ३६

कबूल — स्वीकार ६५

कर्मव — रस्सी ३६

कमान — धनुष ७७

कमीना — पुष्प (भक्ति) ७२

करम — दया २६, ३८ ६६

करामत — कमरकार ३८

करार — धामि डाढव ३७

करासिया — सेनापति ३८

करीम — दयानु ३८

कस्व — छोटा २२

कलमकारी — चित्रकारी ४१

कली — बड़ा ६

कलर — महल ३०

कहकसी — धाकाधर्मवा ७८

कहर — क्रोध ४३

कहबवा — एक प्रकार का पीसा ३४

काठिया — धर्मयानुषास ८०

कारसाव — काम करने वाला ८७

किबिया — ईस्वर ३८

किला — दुर्ग ६१

किसवत — बैस २७

कीमिया — रसायन ३३

कुनुव — धुन (गलब) ३६

कुपुल — घासा ७३

कुपकार — काफिर (ब ब) ४२

कुपर — ईस्वर की एकता को धरतीकार

करना हस्मानेतर धर्म को मानना

३० ६०

कवह — बुराई २६

कुम्हार — महान ३६, ४६

कसी — घावने धाधयान पर ईस्वर का धाम

२६

कृष्णत — धक्ति ३३

कुधावा — विस्तृत ६४

कुहन = पुष्पा २२

कुना = व्यासा १४

कोरुस = मेमार १७

ख

खंजर = एक प्रकार की कटार ४४

खमिन = खमिन १३

खतर = खतर ११

खम = मुका हुआ ३८, १७

खमन = बाधा १२

खक = मिट्टी २३

खान = खान, नीर ४३

खालीमान = बड़े छोटे (मोग) ८६

खिन्नमत = खेबा ४०

खिन्नमत = एकल २४

खुमजाना = मविपलम २४

खुमार = मया ३३

खुमार = पायवी ४२

खमन = विमोग २३ १८

खमन = मान मरवा करने वाला १८

खुमजद = मन्त्रे कव का ३१

खमन = मन्त्रा ४२

खमनवीन = मन्त्रे मन्त्र लिखने वाला ६२

खुमजुमा = गोमान्यद ८६

खमन = प्रमन २८

खुमजद = मन्त्रे मन्त्र वाली (कविता)

८७

खुम = विमोग ८०

खुमी = विमोगा ७१

खमन = विमोगा ७१ ७७

खोने = खुन्दे १४

ख

खनीमान = गुट का मान ६४

खर = खर ४१

खर = खर ४१

खर = खर ४१

खमन = खुमजद मान हुआ मोटा हुआ

६२

खमन = गोठाखोर ४२

खिरह = गौठ ४२ ६०

खुबा = कस्ती ८१

खुनाह = मपराय १८

खुमराह = मपराय २६ १०

खुमान = खमन १६ ६४

खुम = खुम खुम का कुल ४१ १७ ७६ ७१, ७८

खुमन = खमन उधान ७१

खुमन = मोती ४७

खोया = खोया ४६

खीहर = मोती ८७

ख

खद = खोड़ा २४

खमन = खदिका १४

खमन = मोत ७

खमनी = खमनी ४७

खमन = मरवाया ७७

खमन = मरवा ७७

ख

खमन = मरवा ६१

खमन = खमन का हाथिया १०

खमन = विमोग ६०

खमी = खमी ८७

खम = खमनीय नामक बारगाह खापी टिकाऊ १७

खर = खर ४७ ७१

खर = खर १० १४

खरी = खर, खुमराह २७ १७

खरी = खुमराह १२

खरी = खर १४

खरी = खरी ४६

खर = खर १४

खर = खर १४

खर = खर १४

जहाजे धक्कर—जर्मबीर ६१

जहाँ—संसार ३८

जात—व्यक्तित्व ३८ ८२

जाते बाबरकात—शुभ व्यक्तित्व वासा ८७

जाम—सुरा प्यासा १० ११, ७८ ८८

जाहिर—प्रकट १४

जाहिरो—बाहरी दिखानटी ६०

जामी—बेस १७

जिया—प्रकाश ३१

जिरह—कवच ६०

जिस्म—घरीर ११

जुबा—जीभ ६४

जुल मिलन—ईस्वर ४

जुल्ठ—बालों की लट ७१

जुल्ठेकार—घसी की तमवार का नाम ६

जुल्मात—अन्धकार ४०

जुहय—शूक (घह) १४

जुहस—छानि (घह) ११

जुबा—सुन्दर ८८

जुहे—हैहली (बर की) १०

जोराबर—धनितघाली ४४

जोरे बांग—मुँह का जोर ६१

जीक—प्रसन्नता १६ ४८

त

तकवीर—परिभाम जाहू ३६ ७८

तकव—सिहासन ६१

तपाकुल—उपेक्षा ४१

तबामुल—सुन्दर, धानवार १२

तनवी—झिड़की ११

तबक—स्तार २४

तबक—बड़ा बाल ६१

तबसा—झिड़िया २१

तबा—स्वभाव २२ ४१ ४१, ४६, ७४

तबाम—पूर्व ११ १६

तबस्नुद—अन्य १०

तघबीह—उपमा १४

तघरीछ—बैस २७

घसी धादिम साहू का काम-उपेक्षा

तहवील—धनिकृत ११

तहवीन—प्रसंसा ४६

ता—जिससे ११

ताक—कमल (बर) १०

ताज—मुकुट ६६, ७

ताजी तर्ज—नई छेती २२ ८२

ताज लाला—वीर्य रचना ४१

तापीछ—प्रसंसा ४१

ताल मँबल—ताल और मँबला (बाज) ११

तालीम—पिशा ४७

तालीब—तालीब ४६

तासीर—पुन ४४

तासीरे छीबिया—परकायमनेस की बिधा ११

तुर्क ताज—बीर ६१

तूविया—सुरमा १४

तूबा—स्वर्ग लोक का वृक्ष विशेष ११

तेय—तमवार १७

ताह्ला—जेंट १०

व

वप—वप २८

वबीर—सिपिक ११

वर—हार ११

वबैसर—परेसाही ४४

वर्त—अभ्यवग ४१

वस्त—ह्रास ७७

वस्तूर—विमल ६०

वहू घव—घातक ४२, ४४

वहू हुम—वधाम ४७

वाम—बासा ७६

वायम—स्वामी आशक्त १६, ४८ ७१

वीग—धर्म २६, ३३ ३७ ४७

बुमिया व बी—संसार और धर्म

दुरवक—पेटी १७

दुरे घदन—घदन नामक हथान वा मोटी २१

दुलहुस—दुलहरत बली का बोझ ४१ ४१

प्राचीन साहित्य का काव्य-संग्रह

म

मय = मय १६
मन्त्रास = चित्रकार ४१
मन्त्रास = कोमलता ७१
मन्त्रास = वृत्त ७०
मन्त्रास = इन्द्रास मुहम्मद ईश्वर का सम्बन्ध
बाह्य १८

मन्त्रास = पुष्प विषय जो प्राचीन का उपमान
है २८

मन्त्रास = कोमलता ७६

मन्त्रास = मय १६

मन्त्रास = उपदेश ७२

मन्त्रास = मय ४७

मन्त्रास = मय ४४

मन्त्रास = कोमल १६

मन्त्रास = मिमी ७१

मन्त्रास = इन्द्रास मुहम्मद की प्रार्थना से
संबन्धित कविता २६

मन्त्रास = काव्य ४० ४६ ७६

मन्त्रास = प्रगल्भ ११

मन्त्रास = मित्र ६०

मन्त्रास = काम ६३

मन्त्रास = मन्त्रास २८

मन्त्रास = मोह के पाँव में जड़ा जानेवाला
लोहे का उपकरण ४३

मन्त्रास = पात्र प्राण कापल ११

मन्त्रास = प्रमिता १६

मन्त्रास = प्राचीन ८८

मन्त्रास = चित्र मय ७० ७७

मन्त्रास = वृत्त ६४

मन्त्रास = वेद १७

मन्त्रास = प्राचीन प्राचीन कविता कविता १४

मन्त्रास = चित्र मय ४४

मन्त्रास = चित्र मय ४४

मन्त्रास = चित्र मय ४४

मन्त्रास = चित्र मय ४४

मन्त्रास = चित्र मय ४४

मुमास = स्पष्ट, प्रकट ६६

मूर = प्रकाश २४ १२ ११

मी = मया ८०

मी तर्ज = नई तर्ज ७६

मीसो = मर ७७ १२

प

पञ्चमी = पञ्चम ४७

पञ्चमी = पञ्चम १० ६३

पञ्चमी = मीमा ४४

पञ्चमी = मय समाप्त ११ ६८

पा = पाँच १२

पा = पाँच १२

पा = पाँच १२

पा = पाँच १२

पा = पाँच १२

पा = पाँच १२

फ

फर = फर ६१

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

फर = फर ६४

ब

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बनूत = बनूत ७४

बरतर = दोपहर ८२
 बरपा करना = पीटा करना ८८
 बहर = धर १४ १७
 बहुतेकर = कम धीरे स्वस ४७ ८२
 बहार = बसत १४
 बहारिस्तो = बसंतोद्भवान २६
 बाज = पक्षी विशेष ७७
 बाबू = मुखा २१
 बाजे = कुल, कोई ११
 बातिनी = मुष्ट ६०
 बावे सवा = प्राण कास की बायु १००
 बार = फल २८
 बिटावर = भाई ६२
 बिस्मिल = बायल ४१
 बुत = मूर्ति ११
 बुलंद = ऊँचा १७
 बुलंदी = ऊँचाई १०
 बुलहबत = झूठी सामंसा ४१
 बेकैठ = बेतछा ११
 बेकूट = मूर्च्छित ४०
 बठाव = बेचैन ४२
 बबिरंग = निष्पन्न ६२
 बेनिवाज = निरपेक्ष ८८
 हेरिया = निराङ्गन ११
 भयुमार = अभयित १८ ६४
 बेहतर = दोपहर ८२
 बेहिरत = स्वयं २१
 बैत = घेरे उपदेश १४

म

मंजर = वृक्ष १०
 मंजूर = स्वीकृत १०
 मकठब = पाठशाला २२
 मकबूस = स्वीकृत ११, ४६
 मकमूर = मस्त शराबी ६७
 मगरिब = परिचय १२
 मयूर = पतंगी ४४ ६७

धमी धारित दाह का काय-

मयमूब = पराशित १६
 माक = मस्तिष्क २१ १६
 मकमू = विषय २१
 मकमूग = विषय ८२
 मकहूर = केन्द्र २१
 मकाब = काव्यनिक १०
 मकाबी = पानिक ८८
 मकहू = प्रसंसा ८७
 मककमत = हजरत मुहम्मद के संबंधियों की प्रसंसा ४६
 मय = सुपा ६७ ८८
 मरवान = मूवा २१ ८२
 मरदूब = पुच्छ, निष्काशित ४६
 मरदूमत = हपा ६१
 मर्य = मृत्यु ४४
 मर्य = रोय बीमाटी ४७
 मर्यवा = प्रतिष्ठा ८८
 मलक = देवदूत ७७ १०
 मलमल = मघास ११ ७१
 मघारिक = पूर्व १२
 मयक = मयक २७
 महबूब = धारित सामान्यित ८४ ८८
 महकूब = सुपशित २६
 महहर = प्रत्यक्ष विषय ११
 मावा = मार्ग १४
 मारिकत = हजरत खान ११
 मायूक = प्रेमिका ४१
 माहताब = शीत ६०
 मिम्बर = मस्तिष्क का वह स्वस बाह्य होकर उपदेश देते हैं ४७
 मिश्री = कस्तूरी के समान सुगंधित ७।
 मिस्तर = रेखांकित काय विशेष २१
 मुयम्मा = पहेली ८४
 मुयस्मिय = अध्यापक विज्ञान २१
 मुकरर = पुनः ४६
 मुकाबिल = प्रतिस्पर्धी ७१ ७४
 मुजमर = धोपीठी ८४

मुद्रमल = संक्षिप्त १४

मुठहूर = पवित्र १०

मुशम = धातु १६

मुनम्बर = प्रकाशमान वीथियुक्त २१ १०

मुनामात = हजरत मुहम्मद के प्रत्यक्ष-कारियों की प्रशंसा २६

मुबारक = सुख १० १० १०

मुवी = प्रकट ६१

मुर्वना = हजरत घनी ४०, ८८

मुगक = कस्तूरी १७

मुगरिक = बहुत देखपूजक ४३

मुगाठा = गृहगार कराने वाली, माइन २७

मुरक = कस्तूरी २७

मुरिकमहुशा = कठिनाइयों को दूर करने वाला १६

मुस्तरी = बुहसति (घर) २७ १४

मुस्तन = विमात्रक ६६

मुस्तन = स्त्रीरुप होने १०

मुस्तन = हजरत मुहम्मद ८८

मुस्तन = धारणीय ६१

मुहिन = प्रमियाण १६

मेड = विनयक १०

मेराय = उच्चतर १०

मेहन = दुःख १६

मेहर = दया ६०

मौजिन = तरंगित २३

मौजिना = समन्वय १०

मौजिन = विनयनीय, प्रतिष्ठित ६०

मौमूक = प्रथमि १६

मौमूक = धारिण ४४

घ

घाबरहून = धारणी ४७

घार = निज ६८

घारी = प्रेम ७४

घु = दम लहर ११

र

रंगी = रंगीनी २६

रंजूर = दुःखी ६७

रब = ईश्वर ३०

रब्ब = रहस्य भद्र ४७ ८४

रक्त = प्रतिस्पर्धी ईर्ष्या २७

रमुने खुदा = हजरत मुहम्मद ६०

रहनुमा = मार्ग दर्शक १८

राब = रहस्य २६ ६१

राबान = रहस्य का ज्ञाता, रहस्य रखने वाला १६

रायेजन = मनहाणा २१

रास्त = नीचा १६

राह = मार्ग १६

राह = छुटकारा, धामि ७४

रिमास्तन = रमूक का पत्र १०

रजबा = प्रभाव ८८ ७६

रमबा = बदनामी ८६

रं = रोम ६६

र = धामा ११

ररिया = दुविधा, धामा पीछा ११

रु = धामा २१

स

सरबत = धामा १८

सब = होठ २१ ११ १७ ७०, ७१

सबर = होठ ४८, ६६

सरबर = मेला ६२

साफ = बड़ाई २६

सामा = पुनर्विषय २६, ७१ ७८

सुपाव = बूट ६०

सुनक = धानी ४६

ख

खडा = रंज ८४

खन = रंज २१

खर = प्रभावपूर्ण ११

खनी = निज १६

वस्त्र—मित्र ६१

वाह—प्रकट, स्पष्ट ४१

वाता—वस्त्र विधेय भूपर्वाही रूपका ८७

वाता—वेष्ट ६१

विहं—वप ७८

विनायत—वसी का पद २६

वीरान—वंगल ४२

स

संय धाविया—वक्की का पत्तर १६

संदल—संघन १०, ११, १२

सकसेन—विरा ४३

सकज—सठ १०

सकावत—बालधीतवा, उवाच्या ३८ १६

सबावार—मत्तकार्य ४६

सदर—धम्मल धम्मल स्थल १२

सनमत—वतुर्वाह, मत्तकार (साहित्य) ४६, ८३

सनम—मृति १, ६१

सक—पंक्ति ४१

सकवर सक—पंक्ति बड ४०

सकम्पा—स्वच्छ २६, ६४

सका—पंक्ति, स्वच्छ २६, १०, ११, ७३, ८७

सफीना—साक ४१

सबब—कारक ११

समब—इस्वर ८२, ६१

समन—वनेसी २६

समाना—वतुर ११

सर—विर ४१

सरताज—मुकुट १६ ४१

सरफराज—कुतार्थ ६२

सरनसर—वेष्टवा ४७

सरापा—नसविह २७, ४८

सरो—वृक्ष विधेय जो कब का उपमान है २८

सहन—साधन २५

साको—स्वच्छ ८२

सावित्र रुचन—बुद्ध ४१

साया—घाना २१, २६ ४२ ४६

साहबजमी—मुय का मन्त्रिकाता ४८

सिजरा—मन्त्रिकादन २४

सिजारा—नसन २४

शिदुह—सन्धा ६०

विपर—बाल ६०, ६१

सिफ्त—विशेषता मुय ७८ ८०

विलह—पल्ल ४४, ६०

वीना—घाटी २६, ४०, ४१ ८७

मुकन—बचन २४ ६२

मुकन कहुयी—बालदुता २६

मुकहो पाय—मात सायम् २४

मुय—बोहो के पाय का मिचला नाप ४३

मुलकाव—पत्नी विधेय ७७

मुपही—मुपही २८

मुय—नाम १३

मुकक—मधस्वी सकल (नाम मुह बाला) ४४

मुसतान—घावक ४०

मूरत—धाकृति ४१

सेरय—रानी पत्तर विधेय ४८

सेर—

हा

१

घ

घनघ

घटना = सिंह ४२
 घटक = कस्यान, बङ्गल २७, २० २१
 घटीमल = इस्लामी धर्मशास्त्र २२
 घस्युमी = छठा ४७
 महो सबन = घह घोर दूध २३, ४८
 घाघ = डानी २३
 घानी सहर = सग्या प्रात ७१
 घायर = कवि ७८
 घाहमात = पराजय ७१
 घाहे मजतकर = हजरत घनी ३३
 घाहे नक = हजरत घनी ३३
 घाहे मरी = नर पुग ६२
 घाहे मुर्तिस = हजरत मुहम्मद २६
 घाहो मरा = बादशाह और ककीर २३
 घिपुत्रमी = प्रकुम्भता ६६
 घिका = स्वास्म, कम्पाण ४७
 घीरी = मयूर ४१ ७१
 घुबाग = बहादुरी ३८
 घुहरत = प्रसिद्धि ७४
 घेरे भूरा = हजरत घनी ४६
 घोमा = धमाका ४१
 दपाना = बनुर ४३

ह

हक = ईश्वर, सबाई २४ ३८, ४३
 हकीमत = वास्तविकता २६, ६०

हकीमी = मयार्थ ८८
 हरेबसर = मनुष्य की सामर्थ्य ७३
 हस्तुम = सप्तम ४७
 हमकरी = पास का, घायी ६१
 हमबार = समतल ४३
 हमकार = कुशल कार्य साबक २२
 हपा = सज्जा ३३
 हमात = जीवन ६६
 हर = प्रति ४१
 हवस = इच्छा ६२
 हवद = ईर्ष्या २२
 हस्तुम = घाठवा ४७
 हासा = बेरा जाँद और मूरत के चारों
 ओर पड़ने वाला वृत्त ४३, ७१
 हासिह = ईर्ष्या ४३
 हिममठ = उपाय ७४
 हिवापत = निशा उपदेश ४७
 हिमम = साहसी ६१
 हुबा = व ८४
 हुनर = कीर्तन ६६
 हुन = सीखने ४२
 हूर = धन्यता ४३
 हुरी पटी = धन्यता और पटी २४
 हुरी नारा = हजरत घनी का सद्गोप
 ४४

बस्न—मिथन ६१
बाज—मकट, स्पष्ट ४१
बासा—बस्न विशेष भूपर्याही कपड़ा ८७
वासा—मेष्ठ ६१
विर्व—जप ७८
बिसायत—बली का पद २६
बीराम—बंगस ४२

स

संग आशिया—बकरी का पत्तर ३६
सवंत—चंदन १० ११ १२
सकलन—विश्व ४४
सकल—सक १०
सकावत—दानधीलता, जवारता ३८, ३९
सकावार—मर्तकर्म ४६
सवर—सम्पन्न सम्पन्न स्थल ३२
समयत—बहुपद, मर्तकार (साहित्य)
४६, ८५

सनम—मूर्ति १, ६१
सक—पंक्ति ४१
सकलर सक—पंक्ति बद्ध ४०
सकल्या—स्वच्छ २६, ६४

सफा—पंक्ति, स्वच्छ २६, १० ११ ७५,
८७

सफीना—साक ४१

सबब—कारम ११

समद—ईश्वर ८२ ६१

समन—बमेली २६

समाना—बहुत ११

सर—सिर ४१

सरताज—मुकुट ३६ ४१

सरकपज—कृतार्थ ६१

सरबसर—मेष्ठता ४७

सरापा—मकथिख २७, ४८

सरो—बुद्ध विशेष जो कप का उपयोग है
२८

सहन—माथन २५

समी धारित साह का काम-संग्रह

साफी—स्वच्छ ८२

साधित कदम—बुद्ध ४१

साया—साया २१, २६, ४२, ४६

साहनेबर्मा—गुप्त का मन्त्रिणा ४८

सिखरा—मन्त्रिणा १४

सिताप—नक्षत्र २४

सिद्ध—सम्पन्न ६०

सिपर—बाल १० ६१

सिपत—विशेषता गुप्त ७८ ८०

सिंह—सर्व ४४, ६०

सीमा—सादी २६, ४०, ४१, ८७

मुसन—बन २४ ६२

मुसन कही—बाकपट्टा २६

मुसहो घाम—बात घाम २४

मुस—बोते के पक्ष का निजता नाप ४१

मुसबाब—पक्षी विशेष ७७

मुपही—मुपही २८

मुक—नाम ३१

मुकल—बघली सकस (साल मुह बाला)
४४

मुमलान—साक ४०

मुरत—साक ४१

सरंस—रंभीय पत्तर विशेष ४८

सर—गुप्त ३८

सेहरा—सर के मुह पर डाली जाने वाली
पट्टा २७

संक—सर्व विशेष ४१

सोफर—पंक्ति ११

स

सक होना—फटना ६२

समरे बमईद—पसे (राम) का पैर २८

सफर—कपा धीर संस्था की धर्मिता २७
३५

सबकुषा—रबनी कपा ३१

समधीर—समवार ३८ ४१

समधीरजन—सबकुषा ३७

परमा = सिंह ४२
 परक = वस्त्रान, बह्व्यन २७, १० ११
 परंपर = इस्लामी धर्मशास्त्र २६
 परमूमी = छटा ४७
 मही नवन = महर और हूब २३, ४८
 पात्र = शमी ११
 पाथी महर = सन्ध्या प्रात ७१
 पावर = बलि ७८
 पाहनात = पराजय ७१
 पाहे नवनकर = हजरत शमी १३
 पाहे नमूक = हजरत शमी १३
 पाहे मरि = नर पुन १०
 पाहे मुरमिन = हजरत मुहम्मद ७६
 पाथी मय = बाबासाह और पठार ७३
 सिपुक्तपी = प्रकल्पता ६६
 पिठा = स्वास्त्र कल्पान ४७
 पीरी = महर ४१ ७१
 मुनाग = बहादुरी ३८
 मुहरत = प्रसिद्धि ७६
 घरे मुरा = हजरत शमी ४६
 पोता = संसार ४१
 पाना = महर ४३

ह

हक = ईश्वर, मर्यादा २४ ३८, ४३
 हकीमत = बालविक्रता ७६, ६०

हकीमी = नदारी मर
 हरेनर = मनुष्य की समर्थ ७३
 हुनुम = सन्तन ४७
 हुनकरी = पत्त का, मार्ग ६१
 हुनार = सन्तन ४३
 हुनाकार = हुनन का प्रकार ७२
 हुना = मर्यादा ३३
 हुनात = रीति १६
 हर = प्रति ४१
 हवस = इच्छा ६०
 हवस = ईया १०
 हुनुन = माटनी ४७
 हुना = बेटा जीद और मुरा के चारों
 पार पड़न बना हुआ ४० ७१
 हासिह = हिन्दू ४३
 हिमनत = ज्ञान ७६
 हिमानत = गिना उन्म ६७
 हिमन = मही ६१
 हुना = पद ८६
 हुना = कीमत ६१
 हुन = मीनत ४०
 हुन = सन्तन ६१
 हुये परी = सन्तन और परी ८६
 हररी गार = हजरत शमी का उद्घोष
 ४६